विचार दृष्टि

वर्ष : 7 | अंक : 25 | अक्टूबर-दिसंबर 2005 | 15 रुपये

राष्ट्रीय एकता व सद्भावना विशेषांक

आचार्यश्री महाप्रज्ञ को राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भावना पुरस्कार

- राष्ट्रीय एकता के समक्ष नई चुनौतियाँ

Tele.0612-2352480

THE PEOPLE'S CO-OPERATIVE HOUSE CONSTRUCTION SOCIETY LTD.

KANKERBAGH, PATNA-800020.

HIGHLIGHTS:

1. For members of lower & middle income group of people this society is said to be one of the largest co-operative house construction societies in Asia.
2. In the first phase 131.12 acres of land acquired by Government of Bihar were handed over to this society.
3. The society has got an opportunity to attract 1730 members from lower income group of people.
4. In all 1600 plots were bifurcated in planning out of which 10 plots were reserved for community hall, office building, godown and four-storied building for common utilities.
5. 1400 houses have so far been constructed by the members.
6. 500 members have been given housing loan through this society.
7. Boundary walls in 15 parks have already been constructed by the society.
8. In most of the sectors metalled & cemented roads have also been construcred.
9. Efforts are being made to improve the drainage system, to have plantation and lighting facilities.
10. In the second phase 7 acres of land have been purchased at Jaganpura village in which six houses have been constructed so far.
11. Out of 96 plots 95 plots have already been allotted to the members and one plot has been reserved for common utilities.
12. The society makes available its community hall to the members on priority basis for the marriage ceremony of their sons & daughters at half of the preseribed charges.
13. As far as possible the society tries to provide street light, maintain roads, clean manholes, construct parks and other development activities.
14. All those members who have not filled up their nominee forms as yet are requested to deposit the forms duly filled in after getting the forms from the office of the society.

WITH REGARDS TO THE MEMBERS.

L.P.K. Rajgrihar	**Sidheshwar Prasad**	**Prof. M.P. Sinha**
Chairman	Vice Chairman	Secrectary

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष : 7 अक्टूबर-दिसंबर, 2005 अंक : 25

संपादक व प्रकाशक:
सिद्धेश्वर

सं. सलाहकार: गिरीश चंद्र श्रीवास्तव

प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन

सहा.संपादक : डॉ. शाहिद जमील

संपादन सहायक : अंजलि

आवरण साज-सज्जा: अंजलि

शब्द संयोजन : सोलूसंस प्वायंट
(दीपक कुमार, अनुज कुमार)

प्रकाशकीय कार्यालय:
'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207
शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
दूरभाष: (011) 22530652, 22059410
मोबाईल : 9811281443,9899238703
फैक्स: (011)22530652
E-mail: vichardrishti@hotmail.com

पटना कार्यालय:
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1
दूरभाष: 0612-2228519

ब्यूरो प्रमुख:
नागपुर: मनोज कुमार ☎ 2553701
कोलकाता: जितेन्द्र धीर ☎ 24692624
चेन्नई: डॉ० मधु धवन ☎26262778
तिरूवनंतपुरम:डॉ०रति सक्सेना ☎2446243
बैंगलूर:पी०एस०चन्द्रशेखर ☎26568867
हैदराबाद: डॉ० ऋषभदेव शर्मा
जयपुर: डॉ० सत्येंद्र चतुर्वेदी☎ 2225676
अहमदाबाद: रमेश चंद्र शर्मा 'चंद्र'

प्रतिनिधि:
लखनऊ: प्रो. पारसनाथ श्रीवास्तव,
ग्वालियर: डॉ. महेन्द्र भटनागर
सतना: डॉ. राम सिया सिंह पटेल
देहरादून: डॉ. राज नारायण राय

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड
एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य:	एक प्रति 25 रुपये
वार्षिक:	100 रुपये
द्विवार्षिक:	200 रुपये
आजीवन सदस्य:	1000रुपये

विदेश में:
एक प्रति:US $5, द्विवार्षिक:US $20,
आजीवन: US $250
(पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं)

रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना /2
संपादकीय /5
विचार-प्रवाह:
अंतरात्मा पर चिंतन /7
डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम
वौचारिक क्रांति : क्यों और कैसे ?
प्रो० महेश चन्द्र शर्मा /8
साहित्य:
कड़वा सच - कहानी /10
स्मिता पाटिल
लघु कथा:
कालानाग-युगल किशोर प्रसाद /11
स्वीकृति-डॉ.सतीशराज पुष्करणा /12
लाचारी-डॉ.मिथिलेश कुमारी मिश्र /12
काव्य कुंज :
राष्ट्रभाषा हिंदी, सरदार पटेल, /13
दावेदारी, अंतर की पुकार,
गाँधी की प्रासंगिकता
विमर्श:
'विराट विमर्श' पर एक विमर्श
दिवाकर वर्मा /17
समीक्षा :
संभावनाओं की धरती पर उगी
महेंद्र भटनागर की कविताएँ
राधेलाल बिजघावने /21
इतिहास और व्यक्ति की बहस
रवींद्र वर्मा /23
अनोखा ऐतिहासिक उपन्यास
विश्वमोहन तिवारी /25
कविता में अशोक कुमार सिन्हा की पहचान
श्रीराम तिवारी /27
दृष्टि :
बंगभंग विरोधी आंदोलन का राष्ट्रीय स्वरूप
डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद /28
जैन संस्कृति और इतिहास बोध
डॉ. ध्रुव कुमार /30
अधिक आबादी पर अंकुश का औचित्य
सिद्धेश्वर /32
समाज :
गाँधी और हम-राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता /35
रूढ़ियाँ टालिए, परंपरा पालिए-
सविता लाखोटिया /37
छोटा होता ममता का आँचल....
अंजलि /39
राजनीतिक नजरिया:
नीतीश की न्याय यात्रा का नतीजा /41
यह हमारे लिए दुर्भाग्यपूर्ण है-के.सी.त्यागी /43
गतिविधियाँ :
हिंसा और आतंकवाद पर राष्ट्रीय संगोष्ठी /44
दक्षिण भारत:
हैदराबाद की चिट्ठी /47
चेन्नई की चिट्ठी /48
सम्मान: /49
आचार्यश्री महाप्रज्ञ को राष्ट्रीय सद्भावना सम्मान
संस्मरण :
छह दशकों की मौन साधना और सहृदयता के पर्याय-रघुनाथ प्रसाद 'विकल' /52
भगवती प्रसाद द्विवेदी
श्रद्धांजलि : शिक्षाविद् डॉ०जकारिया का निधन /54
साभार-स्वीकार : /55

सद्भावना एकता अहिंसा सम्मान संस्मरण श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह 'शशि'❑प्रो० राम बुझावन सिंह❑प्रो. धर्मेंद्र नाथ 'अमन' ❑ श्री जियालाल आर्य ❑ डॉ० बालशौरि रेड्डी,❑ श्री जे.एन.पी.सिन्हा ❑श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा ❑डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑डॉ० एल० एन० शर्मा

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

'यथानाम तथा गुण'

'विचार-दृष्टि' का जुलाई-सितम्बर, 2005 अंक मिला। धन्यवाद। विभिन्न स्तंभों के अंतर्गत दी गई सामग्री पठनीय एवं विचारणीय बन पड़ी है। कुछ रचनाएँ प्रभाव छोड़ रही हैं। अंजलि-कृत 'असफलता सफलता का आधार-स्तंभ है' शीर्षक रचना निश्चय ही जीवनोपयोगी एवं क्रांतिकारिणी है। 'शांतिकुंज' (हरिद्वार-उत्तरांचल) के यशस्वी संस्थापक तथा महान् विचारक पं० श्रीराम शर्मा आचार्य की मान्यता है कि-''कोई भी असफलता हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती, जब तक कि हम उससे सबक लेते हैं और आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं।''

आपकी यह पत्रिका (यथानाम तथा गुण) की कसौटी पर खरी सिद्ध होती रहे-यही मेरी कामना है

- डॉ. महेश चंद्र शर्मा, रीडर एवं अध्यक्ष, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५।

जीवन का अंश

''विचार-दृष्टि'' जुलाई-सितम्बर 2005 अंक 24 पढ़ा और मनन किया। वस्तुतः पत्रिका अपना नया दृष्टिकोण सामाजिक समरसता, सुधार एवं विवादों को सुलझाने की दृष्टि रखती है। आज के हालात में यह पत्रिका जीवन का अंश समझी जायगी। इस पुनीत कार्य के लिए आप और आपके कर्मठ सहयोगी धन्यवाद के पात्र हैं। मेरी शुभकामना पत्रिका के साथ-साथ कदम मिलाकर चलने की है।

-राजेंद्र प्र0 गुप्ता, नया बाजार, कबैया रोड, लखीसराय (बिहार)

पत्रिका स्तरीय

आपके द्वारा प्रेषित 'विचार दृष्टि' पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका की स्तरीयता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। कृपया धन्यवाद स्वीकार करें।

-शैल शिखर, नीलम रोड, मुँगेर-८११२०१

विचार दृष्टि का जुलाई-सितम्बर 05 अंक मिला। पत्रिका पाकर प्रसन्नता हुई। धन्यवाद।

संपादकीय 'भारत-चीन संबंध तथा भारत-पाक संबंध में एक नया अध्याय' दोनों पढ़ा। दोनों पर आपने विस्तार से जाँच-पड़ताल की है जो प्रशसंसनीय है । धर्म-पिता दारोगा तथा हृषीकेश पाठक की कहानियाँ अच्छी लगी। पाठक जी को इतनी अच्छी कहानी लिखने के लिए बधाई। रामगोपाल राही की कविता ''शनि और क्रोध'' बहुत अच्छी लगी हैं। डा. अंबेदकर संबंधी आपका आलेख भी अच्छा लगा।

संपादकीय पढ़ते वक्त मुझे अपनी एक कविता ''भारत-पाक मैत्री' की याद आयी जो आपकी भावनाओं से मेल खाती लगती है।

-आदित्य प्रकाश सिंह, ३७/१, गर्दनीबाग, पटना-२।

पाठकों से

पत्रिका के विभिन्न स्तंभों में छपी रचनाओं पर आपके विचारों व प्रतिक्रियाओं का स्वागत है क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं। हमें इस पते पर लिखें --

पाठकीय पन्ना, 'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', यू-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92

पत्रिका विस्तार पाएगी

''विचार दृष्टि'' का जुलाई अंक मिला। आपका संपादकीय आपकी तर्कशील दृष्टि के साथ गहरा अध्ययन को सिद्ध करता है–चीन भारत संबंधों में आज की स्थितियों पर। भारत-पाक के बीच संबंधों को जब-जब संपर्कशील बनाया गया है, तो कारगिल हो या फिदायिनी हमले–भावना को गहरी ठेस पहुँचाते हैं। इस पर आपकी 'सोच' सोचने योग्य है।

"कहानियों में धर्म-पिता दारोगा'' को लेखक ने भावुकता से जोड़ कर दो बेटियों के ब्याह-गौना की ओर मोड़ दिया है जबकि उसका मूल विषय, बाहु-बली शमशेर सिंह तथा धूर्त लोगों के पर्दाफाश एवं उदाहरणीय सजा दिलवाना होना चाहिए था। दूसरी कहानी ''सरला डोम'' अति तर्कशील होने के कारण आलेख जैसा हो गई है। हालांकि लेखक का तर्क जायज है। अन्य रचनाएँ भी पठनीय हैं। आशा है हिंदी जगत में यह विस्तार पायेगी-आदर के साथ।

–प्रो. कमला प्रसाद 'बेखबर',
फॉरबिसगंज, बिहार

पत्रिका की पृथक पहचान

'विचार दृष्टि' का ताजा अंक मिला, हार्दिक आभार। विचारोत्तेजक सामग्री और पठनीय रचनाएँ इस पत्रिका की अपनी पृथक पहचान है। आपका संपादकीय अत्यंत महत्वपूर्ण है। आपकी अभिव्यक्ति दिल्ली के सिंहासन पर बैठे हमारे हुक्मरानों तक भी पहुँचनी चाहिए। श्री हृषीकेश पाठक की कहानी तथा श्री दिवाकर गोयल की कविता पठनीय है। डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा जाति व्यवस्था के संदर्भ में श्री सिद्धेश्वर ने अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं। डायन के बहाने श्री अशोक कुमार सिन्हा का आलेख भी महत्वपूर्ण है। शेष सामग्री ठीक हैं। श्रेष्ठ संपादन एवं रचनात्मक मुहीम के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई।

–पुरुषोत्तम 'प्रशांत'
संपादक : 'मध्यान्तर' 1-7-262,
चूड़ीबाजार, हैदराबाद-12

पत्रिका पठनीय एवं मानवीय

इतनी सुंदर साहित्यिक पत्रिका के सुंदर प्रकाशन एवं सुगठित संपादन के लिए साधुवाद स्वीकारें। दिल्ली में प्रकाशित पत्रिका में बिहार के रचनाकारों की रचना पढ़कर अच्छा लगा। यह संगम अदभुत एवं प्रशंसनीय है। आदरणीय डा. भगवानदास पटेल का लेख 'भील लोक' लोक साहित्य की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। यह अपनी तरह का विशिष्ट लेख है। इस प्रकार के

लेखों से ही पत्रिका को समृद्ध करें। राजनैतिक लेख तो अखबारों में पढ़ने को मिल ही जाते हैं। मेरे विचार से अपने संपादकीय को आप साहित्यिक ही रखें। आज साहित्य के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं। राजनैतिक विषयों को अखबारवालों के लिए छोड़ दें। पुस्तक समीक्षा को अंतिम पृष्ठों में स्थान दें, बीच में नहीं। गतिविधि और श्रद्धाँजलि स्तंभ महत्वपूर्ण है, बधाई! राजनैतिक या सामयिक विचार संबंधी जो लेख दें उन्हें बाद के खंड में एक साथ ही दे दें। प्रारंभ में साहित्यिक लेख, कविता, कहानी व्यंग्य आदि ही दें। लोक साहित्य और बाल साहित्य को पत्रिका में स्थान दें तो अच्छा रहेगा। सभी प्रकार से यह 'विचार दृष्टि' पठनीय एवं मानवीय है। अच्छी पत्रिका के प्रकाशन एवं संपादन के लिए पुनः बधाई।

—डॉ. हरिसिंह पाल, 684,
इन्द्रापार्क, नई दिल्ली-45

समग्रतः अंक पठनीय

आप द्वारा सुसंपादित 'विचार दृष्टि' का जुलाई-सितम्बर, 05 अंक मुझे यहाँ यथासमय मिल गया। पत्रिका का आवरण प्राकृतिक सौंदर्य से अलंकृत होकर अत्यंत भव्य एवं मनोरम बन गया है। इसका अंतरंग भी वस्तु-सौंदर्य से समृद्ध है! आपकी विलक्षण पाठकीय दृष्टि का परिचय पत्रिका के हर पृष्ठ पर मिलता हैं। इस अंक में आपने कई समीक्षाएँ प्रकाशित की हैं जो परिश्रम से लिखी गई है। जाति-व्यवस्था पर आपका आलेख जिसमें आपके चिंतन की गहराई है-अत्यंत विचारोत्तेजक है। कृष्ण कुमार राय की कहानी ''धर्म-पिता दारोगा'' एक मार्मिक कहानी है, परंतु कहानी के अंत में लेखकीय टिप्पणी में कहानी ने शिक्षा को आघात पहुँचाया है। कहानी संवेदना ही नहीं, शिल्प भी होती है। हृषीकेश पाठक की 'सरला डोम' कहानी भारतीय ग्रामीण जीवन के समकालीन यथार्थ को विश्वसनीयता से चित्रित करती है। कहानी पठनीय है और लेखक के सामाजिक सरोकारों को व्यंजित करती है। 'काव्य कुंज' में प्रकाशित रुचियों के पास संवेदना तो है, परंतु उनके पास काव्य-विवेक की कमी के कारण कविताओं पर स्वीकृति दोष का ग्रहण लग गया है। लगता है इन्हें मुख्यधारा की कविताओं से परिचय नहीं है। समग्रतः अंक पठनीय है। धन्यवाद।

—डॉ. लखन लाल सिंह 'आरोही'
बी-2, फ्लैट नं.-203, लुकंड
कोलोनेड, विमाननगर, पुणे-411014

चाह पैदा करने में पत्रिका सफल

'विचार दृष्टि' का अंक-24 मिला। पत्रिका अपने आप में साहित्यिक तो है ही विविध प्रकार सामग्रियों से पूर्ण है। सबसे अच्छा संपादकीय आलेख हैं। आधी-आबादी 'डायन...' का लेख भी समाज में जागृति फैलानेवाला हैं। इस प्रकार के लेख, जो अंधविश्वास, मूर्खता, अज्ञानता एवं लोभ में पड़कर साधु, पूजारी, ओझा या गाँव के ठेकेठार बन बैठे लोगों द्धारा जो अत्याचार होता है छापने की जरूरत है। समीक्षकों ने सभी समीक्षाएँ विस्तार से लिखकर पुस्तक की लोकचाहना पैदा करने में सफल हुऐ हैं। अभिनंदन।

- कांति अय्यर
द्वारा तुलसी हॉस्पीटल, पीज भागोल
नडियाद-387001 (गुजरात)

कहानी अच्छी लगी

विचार-दृष्टि का अंक-24 मिला। 'सरला डोम' कहानी बड़ी अच्छी उतरी है। 'वीर माधोसिंह भंडारी' कविता में पुत्र के हत्यारे को महिमामंडित किया गया है। डा० राकेश कुमार सिंह के उपन्यास 'कोई वजह तो होगी' की समीक्षा पढ़कर उसे पढ़ने की बेचैनी हो गई। जाति-व्यवस्था संबंधी आपके आलेख में विस्तृत विवेचन है, पर आपने कहीं नहीं लिखा है कि जातियों/ जातिवाद का भंजन करने के लिए डा० अम्बेडकर ने क्या उपाय बतलाया था। उन्होंने सिर्फ एक उपाय बतलाया था-अंतर्जातीय विवाह। इसका भी उल्लेख होना चाहिए था। आप स्वयं उस उपाय के समर्थक हैं या नहीं? समीक्षित पुस्तकों तथा 'साभार स्वीकार' में उल्लिखित पत्रिकाओं के पते भी दिये जाने चाहिए।

- राय प्रभाकर प्रसाद
बी-8, शांति विहार, अम्बेडकर पथ,
बेली रोड, पटना-14

लेख विचारोत्तेजक

आपकी 'विचार-दृष्टि' का सद्भावना-अंक (जुलाई-सितम्बर-2005) मिला। आभार। पत्रिका अच्छी लगी। सामयिक ज्वलंत मुद्दों पर विश्लेषणपरक लेख विचारोत्तेजक लगे। स्तम्भों में भी कई पक्ष समाविष्ट हुए, तथापित्त कई अन्य स्तम्भों की भी गुंजाइश बनी हुई है। सीमित पृष्ठ ही सही, किन्तु एक-दो पृष्ठ धर्म, दर्शन व अध्यात्म पक्ष भी रहना चाहिये, मुद्दा विशेष्र पर बहस का सिलसिला भी शुरू किया जा सकता है, एकाध पृष्ठ बाल-साहित्य पर भी हो तथा बीच-बीच में टुकड़ों में छोटे-छोटे प्रेरणास्पद आदर्श वाक्य भी अंकित होते रहें, कभी-कभार लघु-कथाओं, गीत-गज़लों, दोहों इत्यादि के छींटें भी रहें, सामान्य ज्ञान एवं महत्वपूर्ण घटनायें भी झलक मारा करें, इसी प्रकार इत्यादि-इत्यादि भी।

मेरी ओर से भी लेखकीय सहयोग सदैव मिलता रहेगा। विशेषांकादि का आयोजन हो तो कृपया पूर्व-सूचना दे देंगे। पत्रिका-प्रकाशन के जोखिम भरे काम को आप निभा रहे हैं, यही क्या कम है। इसी भाँति-भाँति 'चरैवेति-चरैवेति'।

- डॉ० वीरेन्द्र कुमार वसु,
सीतामढ़ी

संपाकीय बेमिसाल

विचार दृष्टि का जुलाई-सितम्बर अंक 2005 मिला। अध्यनोपरांत मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हिंदी साहित्य के महान प्रतिभा संपंन मनीषी आचार्य रामचंद्र शुक्ल और उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र को जातिवाद के कटघरे में रवड़ा करने का प्रयास आज के मानवीय दृष्टिकोण का खोखलापन ही तो है। इस संदर्भ में डा० ऋषभदेव शर्मा का आलेख पृष्ठ-8 और हृषीकेश पाठक का आलेख पृष्ठ-13 के

अंश कटु सत्य के प्रतीक हैं। विचार दृष्टि का यह अंक पत्रकारिता का वह अनमोल धरोहर है, जिसके संपादकीय आलेख को यदि हम 'बेमिसाल' कहें तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। 'भारत-चीन संबंधों के नये दौर में सर्तकता जरूरी' और 'बस यात्रा-कश्मीर के खून सने इतिहास में एक नया अध्याय' ऐसा समसामयिक चित्रावलोकन है, जिसे हम भारतीयों को कभी नहीं भूलना चाहिये। आस्तीन के साँप को दूध पिलाते रहना, अपनी मौत को नेवता देने से कम नहीं है। हृषि केश पाठक के 'सरला डोम' ने प्राचीन सामंतवाद को आधुनिक परिवेश में उकेरकर गणतंत्रवाद को गहरा सदमा पहुँचाया है। सिद्धेश्वर ने बुजुर्गो को अलविदा करने का वक्त कहकर सत्तालोलुप राजनेताओं के नींद को हराम कर दिया है। भारत में 'नारी सबलीकरण' के उत्कर्ष को अशोक कुमार सिन्हा का आलेख 'डायन कै बहाने औरतों पर अत्याचार' कलंकित करने का माध्यम बन गया है। पुस्तक समीक्षक युगल किशोर प्रसाद की लेखनी 'भाव प्रवण रचना- 'बूंद-फूल और मैं' को कवि और कवयित्री के अंतर्वेदना को अभिव्यक्ति करने में सक्षम है। डॉ० कलानाथ मिश्र का आलेख 'अल्प जन हिताय-अल्पजन सुखाय' भारतीय संस्कृति के महान सिद्धांत 'अनेकता में एकता और वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को बल प्रदान करता है। 'विचार दृष्टि' के इन तमाम बिंदुओं ने हमें यह कहने के लिये विवश कर दिया है:-

'विचार दृष्टि' में जो कुछ नहीं है, वह सब और कहीं भी नहीं है।
यही है कारण 'विचार दृष्टि' को, आँख से ओझल करना भी नहीं है।।

-राजेश कुमार सिंह
235-डी०, किदवई नगर
अल्लापुर-इलाहाबाद (उ०प्र०)

With Best Compliments From

Charak Pharma

Stockist in

- Thumis Wander
- Searle Lupin
- Caldern
- Sona Pharma Lab
- Elder
- Gluconate
- Amritanjan
- Gujarat Lab,
- Orbits
- Standermed etc.

GOVIND MITRA ROAD
PATNA-800004

कृपया घ्यान दें

पत्रिकाएँ और पुस्तकें खरीदकर पढ़ने में जितना मजा आता है उतना मुफ्त में पाकर नहीं। इसलिए जब आप 'विचार दृष्टि' पत्रिका नमूना प्रति की माँग करें तो यह लिखना न भूलें कि आप इसकी सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं। पता नहीं क्यों पत्रिकाओं का सदस्य बनना अपना कर्त्तव्य नहीं, लोग उसे मुफ्त में झपटना अपना अधिकार समझते हैं।

दो वर्षों तक 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' और बाद में भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक द्वारा 'विचार दृष्टि' शीर्षक अनुमोदित एवं निबंधित होने पर पिछले सात साल से निरंतर इसकी प्रति आप प्रबुद्ध पाठाकों एवं साहित्य-सेवियों के हाथों जा रही है और जिसके तेवर व कलेवर को भी आपने तहेदिल से स्वीकारा है। समझदारी का तकाजा है कि इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके नियमित प्रकाशन में आप अपेक्षित सहयोग करें। यह आप पाठकों की गरिमा के अनुरूप होगा और मैं भी आपकी आकांक्षाओं एवं विश्वासों के अनुरूप एक स्वस्थ पत्रिका आप तक पहुँचाने में समर्थ हो सकूँगा। पिछले दो-तीन महीनों में इसकी सदस्यता ग्रहण में अभिरुचि लेकर आपने मुझे प्रोत्साहित किया है यह आपकी सदाशयता एवं उदारता का द्योतक है। मैं तहेदिल से आभारी हूँ आप सभी नए सदस्यों का। अगर आपकी सदस्यता समाप्त हो चुकी है तो एक सौ रुपए भेजकर उसका नवीनीकरण करा लें।

राज्य कार्यालय
संपादक, 'विचार दृष्टि' 'बसेरा', पुरन्दरपुर
पटना-१ (बिहार) फोन: २२२८५१९

'दृष्टि', यू. २०७, शकरपुर, विकास मार्ग,
दिल्ली-९२ फोन: ०११-२२०५९४१०
०११-२२५३०६५२

जरा इनकी भी सुनें

'ऊर्जा आजादी' वर्ष 2030 तक हासिल हो तथा नदियों को जोड़ने का कार्य शीर्घ पूरा हो।

-डॉ. एपीजे. अब्दुल कलाम

कोई समाज उन लोगों को बर्दाश्त नहीं कर सकता जो बेकसूरों की हत्या करते हैं। किसी को कानून को अपने हाथों में लेने का अधिकार नहीं है।

- डॉ. मनमोहन सिंह

पाकिस्तान के जनक मोहम्मद अली जिन्ना अपने शुरूआती जीवन में उदार एवं धर्मनिरपेक्ष थे लेकिन बाद में वह देश विभाजन के जिम्मेदार बने।

-अटल बिहारी वाजपेयी।

नानावटी आयोग की रिपोर्ट देखने से ऐसा लगता है कि न्यायाध ीश ने दबाव में आकर काम किया है। इस रिपोर्ट में कहीं भी राजीव गाँधी के नाम का जिक्र नहीं है। मैंने अपनी आँखों से बहुत से काँग्रेसियों को सड़कों पर हिंसा करते हुए देखा था।

- जार्ज फर्नांडीस।

समाचार की आड़ में अमर्यादित आचरण उचित नहीं। **-मुलायम सिंह यादव**

रीमिक्स गानों के वीडियों में गायकों की ओर से किए जा रहे भौंड़े अंग प्रदर्शन का युवाओं पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

-स्वर साम्रागी लता मंगेशकर

लोकतंत्र के नाम पर अनुशासन हीनता वर्दाश्त नहीं की जा सकती।

-लाल कृष्ण आडवाणी

राष्ट्रीय एकता के समक्ष नई चुनौतियाँ

देशभक्ति राष्ट्रीय भावना की आधारशिला है। देश की आजादी के पूर्व राष्ट्रीयता एक उमंग भर थी केवल विदेशी शासन और अँग्रेजी साम्राज्यवाद के विरूद्ध ही वह उमंग सीमित था। उन दिनों राष्ट्रीयता के सामाजिक तथा आर्थिक मूलों की ओर लोगों का ध्यान सामान्यत: नहीं जा सका था, क्योंकि उनके सामने सिर्फ एक ही ध्येय था किसी तरह परतंत्रता की बेड़ी से छुटकारा पाना। केवल उपनिवेशवाद की समाप्ति या सत्ता के परिवर्तन मात्र से ही सामाजिक संरचना में परिवर्तन संभव नहीं हो सकेगा, यह बात लोगों में स्पष्ट नहीं हो पायी थी, किंतु स्वातंत्र्योत्तर भारत में यह बात स्पष्ट हो गई है कि राष्ट्रीयता की भावना, जो सामाजिक तथा आर्थिक मूलों से अनिवार्यत: जुड़ी हुई है, हमारी सामाजिक संरचना एवं हमारी संस्कृति की आंतरिक चेतना को नियंत्रित करते हैं। आज राष्ट्र को एक ऐसी सामासिक संस्कृति की जरूरत है जिसका साँचा राष्ट्रीय हो और जिसका विषय सार समाजवादी या समतावादी हो तथा सच्चे बंधुत्व पर निर्भर हो और जिसमें शोषण नहीं हो। स्वतंत्रता यानी शोषण से मुक्ति ही स्वातत्र्योत्तर भारत की राष्ट्रीय भावना का मूल आधार है। इसी के मद्देनजर हमारे संविधान की प्रस्तावना में स्वतंत्रता और समता के साथ बंधुता का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि यह मूल्य व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने के लिए है।

राष्ट्र की एकता तभी मजबूत हो सकती है जब देश में रहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को उचित सम्मान मिले और साथ ही हममें भाईचारे का विकास हो। इसका एक निहितार्थ यह है कि किसी नागरिक अथवा नागरिक समूह को संदेह की नजर से देखा जाएगा तो उसके स्वाभिमान को चोट पहुँचेगी, उसके साथ भेदभाव किया जाएगा तो राष्ट्रीय एकता कभी मजबूत नहीं होगी। दुर्भाग्य से आज हमारे राष्ट्र में यही हो रहा है। भारत के अनेक इलाकों में जो असंतोष, विद्रोह और अलगाव की प्रवृतियाँ दिखाई देती हैं उनके पीछे भी कारण वही है। आजादी हासिल करने के बाद देश में राष्ट्रीय एकता पर खतरा मंडरा रहा है और उसके समक्ष यह एक नई चुनौतियाँ बनकर आ खड़ी हुई हैं। जहाँ एक तरफ हमारे यहाँ लोग राष्ट्रीय एकता की दुहाई देते नहीं थकते, वहीं दूसरी तरफ बेशर्मी से ऐसे काम करते हैं जो राष्ट्रीय एकता की जड़ों पर प्रहार करनेवाले हैं। हमारी नई पीढ़ी को राष्ट्रीय एकता के इन अपकारण घटकों की बारीक पहचान रखनी होगी तभी वे पृथकतावादी, विखंडनकारी और विघटनकारी शक्तियों की नई चुनौतियों का सामना कर सकेंगे।

मुश्किल यह है कि हमारे मन में आज राष्ट्रीयता की कोई स्पष्ट कल्पना ही नहीं है। दरअसल राष्ट्रीय चेतना कोई निश्चेष्ट भावना नहीं है, बल्कि एक अत्यंत गतिमान, उत्तेजक तथा स्फूर्तिदायक चेतना है, जो मनुष्यों के अपने राष्ट्र के उत्थान एवं समृद्धि हेतु संगठित रूप से प्रयास करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। अत: राष्ट्रीयता एक विचार है, एक विचार शक्ति है, जो मानव के मस्तिष्क और हृदय को नवीन विचारों तथा मनोभावों से युक्त कर देती है एवं उसे अपनी चेतना के संघटन क्रिया के कार्यों में परिवर्तित करने के लिए प्रेरित करती है। अतएव राष्ट्रीयता ऐसी भावना है जिसका संबंध मानव के अंत:करण एवं भीतरी चेतना से होता है। 'राष्ट्रीयता' शब्द मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों में से एक प्रमुख वृत्ति है जिसके कारण मानव अपने राष्ट्र के प्रति प्रगाढ़ प्रेम एवं अभिन्न लगाव रखता है और वह अपने राष्ट्र को सदा समृद्ध एवं उन्नतिशील देखना चाहता है। इसी भावना से प्रेरित होकर व्यक्ति अपने राष्ट्रहित एवं समग्र समाज-कल्याण के लिए सर्वस्व न्योछावर कर देता है और एक सच्चा देशभक्त इस त्याग और बलिदान पर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता है। यही है सच्चा देश-प्रेम। इसी देश-प्रेम और राष्ट्र-प्रेम के महाभाव को पुरस्कृत करते हुए पुरुषोत्तम राम ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए थे–

'अपि स्वर्णमयि न में लक्ष्मण! रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।'

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि जिस जन्मभूमि को स्वर्ग से भी बढ़कर कहा गया है आज उस भूमि में जन्म लेकर, यहाँ का अन्न-जल सेवन करते हुए यहाँ की धरती पर धमा-चौकड़ी करनेवाले अनेक अपतत्त्वँ कृतघ्नतापूर्वक जघन्य कारनामें करते रहते हैं। आज यह देश अंत:-वाह्य समग्रत: एक विस्फोटक उथल-पुथल से व्याप्त हो रहा है। इसके अपकारक तत्त्व देश के बाहर ही नहीं, देश के भीतर भी विद्यमान एवं गर्जमान दीख रहे हैं। चाहे राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रश्न हो, चाहे मूल भारतीय सांस्कृतिक मूल धारा का प्रश्न हो या फिर राष्ट्रीयता का प्रश्न हो, प्रत्येक स्तर पर केवल विनाशक, विरोध एवं विरोध की ही आग लगी हुई है। अपने देश एवं राष्ट्रीयता के प्रति कृतज्ञता प्रत्येक व्यक्ति का सामाजिक, नागरिक, राष्ट्रीय एवं मानवीय दायित्व एवं धर्म होता है जिसकी रक्षा के लिए उसमें आत्मत्याग करने का महाभाव होना उसी कृतज्ञता को प्रमाणित करता है।

किसी भी राष्ट्र की स्वतंत्रता और एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए वहाँ के नागरिकों की राष्ट्रीय चेतना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और इस राष्ट्रीय चेतना को बाँधे रखने के लिए वहाँ के लोगों में सांस्कृतिक और भावनात्मक एकता के सूत्र होने

चाहिए। राष्ट्रीयता की भावना, अपने राष्ट्र के गौरवमय अतीत पर गर्व और स्वाभिमान की शक्ति, एकता पर बल इन सबकी चेतना फैलाने में नागरिकों का योगदान होता है बशर्ते कि नागरिकों को उसी तरह की शिक्षा दी जाए।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आधुनिक शिक्षा, परिवहन और संचार के संजाल के परिणामस्वरूप हुए विकास, उद्योगीकरण और शहरीकरण ने राष्ट्रीय एकता को नए आधार प्रदान किए। इसी वजह से कुछ नई समस्याएँ पिछले कुछ दशकों से उत्पन्न हुई हैं। नृजातीय आंदोलन, धार्मिक कट्टरपन, अंतर सामुदायिक संबंधों के संरूप में नए मौकों, भाषाई संघर्षों, क्षेत्रवाद तथा उपक्षेत्रवाद ने राष्ट्रीय एकता के समक्ष नई चुनौतियाँ खड़ी की हैं। राष्ट्रीय एकता इस वक्त एक अजीब स्थिति में है। वह जातियता, सांप्रदायिकता और क्षेत्रीयता के कई सिरों की ओर खींची जा रही है। ये तीनों घेरों में बँटे इस देश के लोग उसे अपनी ओर विपरीत दिशाओं में खींच रहे हैं। उनकी मुठभेड़ से कुछ अजीबोगरीब नतीजे सामने आए हैं। देश ने एक ओर लोकतंत्र, समानतावाद, धर्मनिरपेक्षता तथा सामाजिक न्याय की विचारधारा स्वीकार की है और उसे प्रोन्नत कर रहा है, तो दूसरी ओर आदिकालीन निष्ठाएँ अब भी कायम हैं, शोषण मूलक संरचनाओं को कभी कोई गंभीर चुनौती नहीं मिली, जातीयता, सांप्रदायिकता तथा परंपरा की विकृत स्मृति को राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल व्यक्तिवादी स्वार्थी प्रकृति की वजह से ही जातिवाद, संप्रदायवाद आदि प्रवृतियाँ निरंतर बढ़ रही हैं और राष्ट्रीय भावना, नैतिकता तथा आदर्श चरित्र संकट के क्षण की पीड़ा भोग रहे हैं। इससे सामाजिक समरसता भी चरमरा रही है। यही देश की एकता, समानता तथा मानवीय प्रेम और सौहार्द में विषैले बीज बो रहा है। धार्मिक पुनरुत्थानवाद और परवर्ती कट्टरपन से कठोरतापूर्वक नहीं निपटा जा रहा है। भावनात्मक तथा बौद्धिक जागरूकता के स्तर पर वर्ण और जाति के ढाँचे के भीतर अंतर्निहित असमानता तथा अमानवीयता की निंदा की गई है लेकिन इसे ढाहने का कोई सार्थक या महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाया गया है। वर्ण और जाति के राजनीतिकरण की वजह से 'निम्नतर' जातियों पर भाँति-भाँति के अत्याचार हो रहे हैं। अपनी दशा सुधारने के लिए उन्हें अपनी चुनावी ताकत का इस्तेमाल करने से रोका जा रहा है। भारतीय समाज और सत्ता पर आसीन सरकारों ने निम्नीकृत, कमजोर तथा असुरक्षितों के हित में केवल जबान हिलाई हैं, लेकिन वे उनकी समस्याओं के निदान का कोई सार्थक व्यावहारिक हल ढूँढ़ पाने में असफल रही हैं। इसका स्पष्ट परिणाम है असंतोष तथा प्रतिरोध। दरअसल उनके प्रति शोषण, असमानता और अन्याय को बरकरार रखने का बहाना नहीं बनाया जा सकता। कानून एक हाथ से देता है फिर सतर्कता में ढीलेपन तथा अप्रभावी अमल की कृपा से दूसरे हाथ से छीन लिया जाता है। इसी का नतीजा है कि असंतोष और प्रतिरोध आज भी जारी है और यह असंतोष एवं प्रतिरोध स्वाभाविक रूप से राष्ट्रीय एकता में बाधक सिद्ध हो रहे हैं।

दरअसल जाति, मजहब और राजनीति को देश, काल और परिस्थिति की तीन चुनौतियों से गुजरना पड़ता है और तीनों शक्तियाँ बदलती रहती हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति परिवर्तन से देश, काल और परिस्थितियाँ प्रतिपल नया रूप और आकार लेती हैं। मगर जाति, मजहब और राजनीति बदलाव की इन चुनौतियों का सामना नहीं करतीं। यही कारण है कि राष्ट्रीय एकता के समक्ष भी नित्य नई चुनौतियाँ आ खड़ी होती हैं। और जब चुनौतियाँ नई हैं तो समाधान भी नए ही होने चाहिए। यह युग ज्ञान-विज्ञान, तर्क-प्रतितर्क का युग है। इसी के आलोक में हमें राष्ट्रीय एकता की चुनौतियों का समाधान ढूँढ़ना होगा, क्योंकि इस देश की संस्कृति को उन लोगों के हाथों नष्ट नहीं देखा जा सकता जो येन-केन प्रकारेण राष्ट्र के भाग्य निर्णायक बन बैठे हैं। यदि यह भूल हो गई, तो राष्ट्रभक्त राष्ट्र को संवारते रहेंगे और राजनीतिक माफिया और देशद्रोही शक्तियाँ अपने हित में उसे नष्ट करते रहेंगे। ऐसे वक्त मुझे याद आती हैं कवि देवराज की कुछ पंक्तियाँ, जिसे उन्होंने अपनी कविता 'तेवर' में कही हैं–

'मरेंगे और मारेंगें मगर कटने नहीं देंगे,
कि विरवा देश का हमने बड़े मन से लगाया है।'

अशांत और विछोभ के इस वातावरण में सभ्यता और संस्कृति की पाँच हजार वर्षों की निरंतरतावाले इस देश को आज लौह पुरुष सरदार पटेल, महात्मा गाँधी, शास्त्रीजी तथा जय प्रकाश सरीखे महापुरुषों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है, जिन्होंने भारत को न केवल विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिए निःस्वार्थ भाव से स्वतंत्रता-संग्राम में योगदान किया, बल्कि स्वतंत्रता के बाद अपनी सूझ-बूझ, दूरदर्शिता और अपने अदम्य साहस से राष्ट्र के एकीकरण को सहज ढंग से पूरा किया। सरदार पटेल के योगदान से बने भारत राष्ट्र पर घिरे अनेक संकटों में से सबसे गंभीर संकट राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने का है और उसकी अस्मिता एवं पहचान को बचाए रखने की आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। तो आइए, इन महापुरुषों की जयंती पर हम देश के सभी सजग नागरिक आत्म विश्वास, निष्ठा और उम्मीद के साथ राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए और स्वतंत्रता, लोकतंत्र तथा सामाजिक न्याय की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अपने कदम बढ़ाएँ। ✦✦✦

अंतरात्मा पर चिंतन

❑ राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

अंतरात्मा हमारी आत्मा का वह प्रकाश है जो हमारे अंत:करण में प्रकाशित होता है। यह उतना ही सत्य है जितना कि जीवन। जब कभी कुछ गलत होता है तो यही उसके विरोध में आवाज उठाती है। अंतरात्मा सत्य का ही एक रूप है जो सही-गलत कर्मों और भावनाओं की पहचान के ज्ञान के रूप में हमें विरासत में मिला है। अंतरात्मा एक ऐसा विशाल बही-खाता भी है जिसमें हमारे अपराध दर्ज होते हैं। यह एक खतरनाक गवाह भी है जो हमें चेताता है, वायदा करता है, हमें पुरस्कृत करता है और दंडित भी। यानी हमारा सब कुछ इसी के नियंत्रण में रहता है। पहली भूल पर अंतरात्मा हमें सिर्फ चेतावनी देती है, फिर भी अगर हम नहीं संभलते तो दूसरी बार वह हमें दंडित भी करती है।

कायर लोग पूछते हैं 'क्या यह सुरक्षित है?' लोभी पूछते हैं, 'क्या इसमें कुछ फायदा है?' अहंकारी पूछते हैं, 'क्या मैं महान बन सकता हूँ?' विलासी पूछते हैं, 'क्या इससे मुझे आनंद मिलेगा?' लेकिन अंतरात्मा पूछती है, 'क्या यह सही है?' हम क्यों अंतरात्मा की इस आवाज को नहीं सुनते? क्यों उसकी टीस को महसूस नहीं करते? क्यों उसकी आलोचना की तरफ से आँखें मूँद लेते हैं?

इसका जवाब है-'भ्रष्टाचार?'

भ्रष्टाचार अंतरात्मा को मारने का हथियार है। रिश्वत लेने और पक्षपात करने की आदत इन दिनों बहुत आम हो गयी है। महत्वपूर्ण पदों पर बैठे लोग अपनी अंतरात्मा की उपेक्षा करते हैं। वे मानते हैं कि ऐसा करना सही है। वे क्रिया और प्रतिक्रिया के नियम पर विचार नहीं करते। वे भूल जाते हैं कि कैसे इनका हमारे अवचेतन पर प्रभाव पड़ता है और कैसे उसकी ताकत काम करती है। अगर आप रिश्वत लेते हैं तो आपके विचार और आपके कृत्य आपके अवचेतन में दर्ज हो जाते हैं। क्या आपकी बेईमानियाँ अगली पीढ़ियों को बड़ी मुश्किलों में नहीं डालेंगी?

यह एक पीड़ादायक सचाई है कि आज भ्रष्टाचार व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है। यह सिर्फ आर्थिक भ्रष्टाचार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अन्य रूपों में भी है। उच्च पदों पर बैठे लोग अनैतिक तरीके अपना रहे हैं और नैतिकता का विचार न कर सत्ता का दुरुपयोग गलत कामों में कर रहे हैं। यह कितनी खतरनाक स्थिति है? एक महान सभ्यता संकट में है।

एक गुणी आदमी अकेले अपनी अंतरात्मा को औजार की तरह इस्तेमाल कर सकता है। वह अकेले अपनी अंतर की आवाज साफ-साफ सुन सकता है। भ्रष्ट व्यक्ति में यह क्षमता खत्म हो जाती है। उसकी अंतरात्मा की संवेदनशीलता भ्रष्टाचार या दुष्कर्म से नष्ट हो जाती है। इस तरह वह सही और गलत के बीच भेद करने लायक भी नहीं रहता। जो लोग व्यापार, औद्योगिक संगठन और सरकार के शीर्ष पदों पर हैं, वे भ्रष्ट कैसे हो सकते हैं? साफ-सुथरी आत्मा के साथ बिना किसी भय और व्याकुलता के साथ स्वतंत्रता का आनंद लेना क्या ज्यादा बुद्धिमानी की बात नहीं है?

अगर आप कोई गलत काम या दुष्कर्म करते हैं और आज उसे हल्के में लेते हैं तो कल आप गंभीर अपराध करने से भी नहीं हिचकेंगे। अगर आप एक गलत काम करते समय अपनी अंतरात्मा को मार देते हैं तो निश्चित रूप से हजारों गलत करने का रास्ता पा लेते हैं। आपकी आत्मा संवेदनहीन और भद्दी हो जाएगी। गलत काम करने की आदत बिच्छू की तरह पूरे शरीर में फैल जाएगी। आप अगर भ्रष्टाचार करेंगे तो उसके फल आपके बच्चे पाएंगे

और तब वे क्या आपका उपहास नहीं करेंगे? आखिरकार वे ज्यादा सूचनायुक्त और जिज्ञासु हैं। बच्चों के सामने अभिभावकत्व का आपका मुखौटा आपको छुपा नहीं पाएगा। आप अपने ही बच्चों के आदर्श नहीं होंगे। क्या प्रतिष्ठा में कमी काफी नहीं होगी? हमारा समाज बहुत तेजी से ऐसी स्थिति के निकट जा रहा है जहाँ हर महत्वपूर्ण पदों पर वही लोग बैठेंगे जिन्होंने अंतरात्मा को मार दिया हो। भ्रष्टाचार की चुनौती उसी तरह है जैसे एच आई वी के विषाणु एड्स के मरीज के शरीर में फैल जाते हैं।

जीवन के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार रक्तधमनियों की तरह पूरे शरीर में फैल गया है। क्या ऐसे में हम अपनी सभ्यता बचा पाएंगे? आध्यात्मिक गुरुओं ने कुछ नियम और शिक्षाएं 'सत्य' के लिए बनायी हैं। अच्छे-अच्छे भजन, गीत, प्रार्थनाएँ लिखी और गायी जाती हैं लेकिन अंतरात्मा की शक्ति से भ्रष्टाचार के खिलाफ निर्णायक लड़ाई अभी दूर ही लगती है। धर्म भी हमारी अंतरात्मा को जगाने में प्रभावी नहीं रहा। तब ऐसा कौन करेगा? कैसे हमारी अंतरात्मा जगाई जा सकती है?

अब हमें एक बार फिर भ्रष्टाचार के खिलाफ नये सिरे से 'धर्म की एकता और ज्ञान' के प्रकाश की नागरिकता संगठन का आंदोलन चलाना होगा।

संपर्क : राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली

–राष्ट्रीय सहारा से साभार

वैचारिक क्रांतिः क्यों और कैसे?

❑ डॉक्टर महेश चन्द्र शर्मा

आज के आपाधापी, भाग-दौड़, स्वार्थपरता, वैचारिक संकुचितता-संकीर्णता तथा साँस्कृतिक मूल्यों के ह्रास के युग में व्यक्ति संवेदना-शून्य होता जा रहा है। जो व्यक्ति (चाहे वे किसी भी वर्ण में जन्मे हों) प्रगतिशील पुरुषों-नारियों के प्रति अपने मनोजगत् में ईर्ष्या-द्वेष, छल तथा कपट रखते हैं, वे सु-संस्कारवान नहीं कहे जाते।

यदि हम अवधानतापूर्वक सोचें-समझें तो हमें यह बात कहने में कोई आपत्ति नहीं होती कि आज भारतीय समाज में बहुलाँश ऐसे ही लोगों का है जो प्रगतिशील पुरुषों एवं नारियों को सहन नहीं करता। दूसरों की त्रुटियाँ निकालना सबसे सरल काम है, किंतु दूसरों की प्रगति की सराहना करने के लिए सहनशीलता की आवश्यकता होती है। सहनशीलता भारतीय संस्कृति की एक महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है। आज अधिकाँश लोगों में सहनशीलता ही लक्षित नहीं होती।

आज के जीवन एवं परिवेश को ध्यान में रखते हुए यह कहना संगत लग रहा है कि समाज में 'क्रांति' होनी चाहिए। आगे के पृष्ठों में यह दिखाने का यथामति यथासाध्य प्रयास किया जाएगा कि वैचारिक क्रांति कैसे पैदा की जा सकती है?

फ़ारसी के सुप्रसिद्ध लेखक शेख़सादी की मान्यता है कि –''आदमी उम्र से नहीं, विचारों से बूढ़ा होता है।'' जैसे-जैसे कोई व्यक्ति उम्र में बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उसे वैचारिक दृष्टि से 'परिपक्व' भी होते जाना चाहिए। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की मान्यता है कि –''विचार-शून्य जीवन पशु-जीवन जैसा है।'' उन्होंने यह भी कहा है कि–''अपनी छाप गुणवान के रूप में डालनी चाहिए, रुपवान के रुप में नहीं।''

रूढ़िवादी, अंधविश्वासी, भाग्यवादी, भोगवादी तथा कुरीतिवादी प्रगतिशील नहीं होते।

भारतीय संस्कृति धर्म एवं अध्यात्म-प्रधान संस्कृति है जिसमें 'कर्मवाद' ('गीता' एवं 'रामचरितमानस') पर विशेषतः बल दिया गया है। यह अत्यंत दुर्भाग्य की बात है कि आज भारतवर्ष में भोगवादियों की बहुलता है। भोगवादी की आत्मा मर जाती है। हिंदी-साहित्य की लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार श्रद्धेया महादेवी वर्मा ने भारतीय समाज के अद्यःपतन का मूल कारण 'अशिक्षा' को माना है। मेरी यह निश्चित धारणा है कि-''भोगवाद पश्चिमी देशों की देन है जिसे बढ़ावा भारतवर्ष में मिल रहा है। भोगवाद ही वस्तुतः भारतीय समाज के अद्यःपतन का मूल कारण है।''

आज भारतवर्ष में 'चारित्रिक संकट' चरम सीमा पर पहुँच गया है। मैं पंजाब केसरी लाला लाजपत राय के नाम पर चलनेवाली 'लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद-ग़ाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)' नाम्नी शिक्षा-संस्था में हिदी-विभाग के अंतर्गत रीडर एवं अध्यक्ष के पद पर सेवाएँ कर रहा हूँ। भारत के राष्ट्रवादी नेता एवं क्रांतिकारी महापुरुष लाला लाजपत राय ने 'राष्ट्रीय चरित्र' पर बहुत बल दिया था। मेरी यह निश्चित धारणा है कि- ''हर व्यक्ति का चरित्र राष्ट्रीय चरित्र का मूलाधार है।'' ऐसे सदाचारी महापुरुष के नाम पर चलनेवाली शिक्षा-संस्थाओं के सभी कर्मचारियों को उनके जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए तथा अपना जीवन 'सदाचारमय' बना लेना चाहिए।

आज भारतीय समाज में 'वैचारिक क्रांति' अपरिहार्य है। इसके लिए जन-जागरण होना चाहिए तथा लोगों के अंदर शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टियों से चेतना पैदा करनी चाहिए।

मैं हिंदी-साहित्य के इतिहास से लेकर तीन साहित्यकारों के उदाहरण यहाँ उपस्थित करना चाहूँगा जिन्होंने अपने 'चिंतन' के बल पर भारतीय समाज में 'वैचारिक क्रांति' लाने का अद्भुत कार्य संपादित किया है।

(1) जीवन के विद्यालय से पढ़कर आनेवाले अभूतपूर्व व्यंग्यकार तथा

समाज-सुधारक संत कबीर ने हिंदुओं एवं मुस्लिमों के जीवन में व्याप्त बुराइयों, अंधविश्वासों तथा धार्मिक पाखण्डों-ढकोसलों पर निर्ममतापूर्वक प्रहार किए। सच पूछा जाए तो उन्होंने भारतीय समाज को 'क्रांतिकारी-वैचारिक नेतृत्त्व' प्रदान किया। उनका यह अवदान सदैव याद किया जाएगा।

(2) गोस्वामी तुलसीदास-कृत 'रामचरितमानस' जीवन की समग्रता को लेकर चलनेवाली एक 'कालजयी' रचना है जिसकी जड़ें भारत की धरती में हैं। मानसकार ने 'सुंदरकांड' के अंत में लक्ष्मण के माध्यम से यह कहा है कि –

''दैव दैव आलसी पुकारा।''

गोस्वामी तुलसीदास की इस मान्यता के अनुसार भाग्यवादी आलसी और कायर होते हैं। मैं ऐसे व्यक्तियों को 'अपंग' मानता हूँ। गोस्वामी तुलसीदास ने 'भाग्यवाद' के आधार पर नहीं, बल्कि 'पुरुषार्थवाद' के आधार पर 'रामचरितमानस' नाम्नी लोकप्रिय कृति का प्रणयन कर दिखाया।

(3) श्रद्धेया महादेवी वर्मा का व्यक्तिगत जीवन इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है कि दासता एवं परवशता की सड़ी-गली रूढ़ियों को नकार कर नारी स्वयं अपने बलबूते पर एक महान् अनुकरणीय जीवन का निर्वाह कर सकती है। हमारी विदुषी लेखिका ('अतीत के चलचित्र', पृष्ठ 85) की मान्यता है कि-'' नारी समाज के लिए भोग का साधन नहीं, वह समाज की शक्ति है। नारी, आश्रयहीन या पुरुष की आश्रिता भर नहीं अपितु आश्रयदात्री है, उस आनेवाले कल की, परंपरागत धरोहर या जीवन-मूल्यों की और मानवता की।'' महादेवी जी ने अपना व्यक्तित्त्व 'पुरुष-निरपेक्ष' व्यक्तित्व बनाया-इस बात

को आज कौन नकार सकता है? उनका जीवन आज भारतीय नारियों के लिए 'आदर्श' बन गया है, इसमें संदेह नहीं।

'श्रीमदभगवद्‌गीता' (व्यासमुनि-कृत 'महाभारतम्' का नवनीत) को आज भारतीय समाज में 'गीता' के नाम से जाता हैं। 'गीता' भारत का सुप्रसिद्ध धार्मिक साँस्कृतिक एवं दार्शनिक ग्रंथ है। 'गीता' में कहा गया है कि- ''सा विद्या या विमुक्तये''। इसका अभिप्राय यह है कि विद्या (या शिक्षा) की उपादेयता इस बात में अंतर्निहित है कि वह लोगों को आवागमन (जीवन-मरण) के चक्र से मुक्ति प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों (समस्याओं) से भी छुटकारा दिलवाए। ये सामाजिक कुरीतियाँ हैं-

(1) जातिवाद,(2) नारी-शोषण (भोगवाद),(3) पुत्र की अभिलाषा (अँधविश्वास), (4) मद्यपान, (5) दहेज-प्रथा (सभ्य मानव के माथे पर लगा एक काला धब्बा), (6) भ्रष्याचार तथा (6) भक्तिविषयक अँधविश्वास आदि।

भारतीय समाज में 'वैचारिक क्रांति' पैदा करने के लिए वर्तमान शिक्षा-पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन होना चाहिए। इस संदर्भ में मैं यशस्वी विचारक, शिक्षाविद् तथा भारतवर्ष के तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉक्टर शंकरदयाल शर्मा ('मंजूषा', पृष्ठ 88) की मान्यता को उद्‌धृत करने का लोभ संवरण नहीं कर सकता। डॉ० शर्मा की निश्चित धारणा है कि- ''हमारी शिक्षा को केवल पुस्तकों पर ही आधारित नहीं होना है, बल्कि उसे हमारे जीवन-मूल्यों पर आधारित होना है।'' पूर्व महामहिम राष्ट्रपति के इस मत के आधार पर मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि गाँधीवादी मान्यताएँ (सत्य, अहिंसा, समता, बंधुता तथा सदाचार आदि) ही भारतीय जीवन-मूल्य हैं जिनका सभावेश आज की शिक्षा-पद्धति में होना ही चाहिए। डॉ० शंकरदयाल शर्मा के उक्त मत को हमें 'क्रांतिकारी मत' मान लेने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

यशस्वी विचारक, शिक्षाविद् तथा भारत के तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन ने वैचारिक क्रांति लाने का मार्ग सुझाया है तथा लिखा है कि- ''शिक्षा परिवर्त्तन का साधन है, जो कार्य साधारण समाजों में परिवार, धर्म और सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थाओं द्वारा किया जाता था, वह आज शिक्षा-, संस्थाओं द्वारा किया जाना चाहिए।''

हमारे यशस्वी शिक्षाविद् डॉक्टर शंकरदयाल शर्मा ('मंजूषा', पृष्ठ 86) ने नारी-शिक्षा की जबरदस्त वकालत करते हुए यह सही कहा है कि- ''नारी-शिक्षा को केवल एक ही कीमत पर अस्वीकार किया जा सकता है। वह यह कि यदि हम चाहें कि हमारे समाज रूपी शरीर का आधा अंग पक्षाघात से पीड़ित रहे'' पूर्व महामहिम राष्ट्रपति का नारी-शिक्षा को लेकर भारतीय सामाजिक जीवन में वैचारिक क्रांति पैदा करने का यह निश्चय ही सशक्त मार्ग है। सच पूछा जाए तो आज शिक्षा की जितनी आवश्यकता नारी के लिए है, उतनी ही आवश्यकता पुरुष के लिए भी है।

भारतवर्ष के वर्तमान महामहिम राष्ट्रपति डॉक्टर ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने 'छोटा लक्ष्य लेकर चलना' अपराध माना है। इस दृष्टि से आज युवकों एवं युवतियों को चाहिए कि वे जीवन-यात्रा में 'ऊँचा लक्ष्य' लेकर चलें। यह भी वैचारिक क्रांति लाने का एक समुचित मार्ग है।

दांपत्य जीवन में वैचारिक क्रांति कैसे पैदा की जा सकती है। इस संदर्भ में मेरी निम्नस्थ दो मान्यताएँ हैं-

(1) दांपत्य जीवन की सफलता इस बात में अंतर्निहित है कि पति-पत्नी-दोनों एक-दूसरे के विश्वासपात्र बनें तथा दोनों प्रगतिशील बनें।

(2) दांपत्य जीवन की सफलता का मूल्याँकन उपलब्धियों के आधार पर होना चाहिए- मानसिक स्तर, आर्थिक स्तर तथा जीवन-स्तर। जीवन की इन्हीं में 'सार्थकता' है।

जो व्यक्ति अपने परिवारों में जनसंख्या बढ़ाते हैं, भारत के सामने 'समस्याएँ' खड़ी करते हैं वे शिक्षा की दृष्टि से आगे क्यों नहीं बढ़ जाते? तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन का मत है कि ''हमें कठिन-से-कठिन क्षण में भी यह याद रखना चाहिए कि भारत और मानव-मात्र के लिए शांति की सबसे अधिक आवश्यकता है।'' भारतवर्ष में आज जनसंख्या 'दिन दोगुनी रात चौगुनी' बढ़ती जा रही है। इस समस्या का निराकरण केवल 'शिक्षा के द्वारा ही संभव है।

भारत के नागरिक अपनी संतानों को खूब धनराशि दें या न दें- बड़े-बड़े बंगले बनाकर दें या न दें। इस बात का कोई महत्त्व नहीं है। माँ-बाप अपनी संतानों को अच्छी शिक्षा-दीक्षा की दौलत दें तथा अच्छे-अच्छे संस्कारों की दौलत दें। ऐसा वे तभी कर पाएँगे, जब वे विचारपरक होंगे।

स्वर्ग एवं नर्क किसी ने नहीं देखें। जहाँ शिक्षा, ज्ञान, मानवता एवं समृद्धि-संपन्नता विद्यमान हैं, वहाँ 'स्वर्ग' है। जहाँ अशिक्षा, अज्ञान, दानवता तथा दरिद्रता-अभावों का जीवन है, वहाँ 'नर्क' है। यदि भारतवासी वैदिक साहित्य की- ''तमसो मा ज्योतिःगमय'' वाली प्रार्थना को अपने जीवन में आचरण का विषय बनाएँ तो निश्चय ही लोगों के जीवन में सुख-शांति की स्थापना हो सकती है। यह वैदिक प्रार्थना भी 'वैचारिक क्रांति को जन्म देगी।

यशस्वी विचारक, राष्ट्रीयता के पक्षधर तथा तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी की मान्यता है कि- ''किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और अस्मिता की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है। विश्व में वही राष्ट्र प्रतिष्ठित और सम्मान का पात्र होता है जिसे अपनी भाषा, संस्कृति और संस्कारों पर गर्व होता है।''

श्री वाजपेयी के इस मत के आधार पर मैं आत्मविश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि यदि भारतवासियों के अंदर 'वैचारिक क्रांति' पैदा करनी है तो हमें उनको राष्ट्रभाषा, संस्कृति एवं संस्कारों पर गर्व करना सिखाना चाहिए।

संपर्कः रीडर एवं अध्यक्षः
हिन्दी-विभाग
लाजपत राय कॉलेज,
साहिबाबाद (ग़ाज़ियाबाद)
उ० प्र०-२०१००५

कहानी

कड़वा सच

❑ स्मिता पाटिल

कुणाल बावेचा को साहित्य क्षेत्र की बड़ी हस्ती तो नहीं कहा जा सकता था, बस वह निरंजन कृपाल का दाहिना हाथ था। निरंजन कई संस्थाओं के अध्यक्ष थे। वे साहित्य के अच्छे जानकार भी थे। इतने अधिक काम होने के कारण वे कुणाल बावेचा की मदद लिया करते थे।

वैसे तो कुणाल बावेचा एक समाचार पत्र के संपादक थे, परंतु उनके समाचार पत्र में समाचार कम और लोगों पर किचड़ उछालने का काम ज़्यादा होता था। आजकल साहित्य क्षेत्र में भी ज्यादा से ज्यादा लोगों ने साहित्य को बिकाऊ का धंधा बनाकर रख दिया है। आपको फलाना-फलाना 'जिला समिति की अध्यक्ष' बनाया जायेगा यदि आप 750 रुपये की वर्षषी देते हैं तो/ आपको 'इंटरनेशनल वुमन ऑफ' द ईयर' दिया जायेगा यदि आप 2000 डॉलर भर देते हैं तो/ आपको कई वजनदार उपाधियाँ दी जायेंगी यदि आप 200 से 500 तक रुपये भरते हों तो/ हर चीज बिकाऊ। बस दाम बोलो/ आपने साहित्य क्षेत्र में कितनी महारथ हासिल की, यह सिर्फ आपने कितने रुपये व्यय किये इस पर निर्भर करता है। आज हमारे साहित्यकारों की यही दुर्दशा है कि उन्हें अपना टेलेन्ट खुद पैसा देकर बेचना पड़ता है।

तो कुणाल बावेचा अपने समाचार पत्र में ऐसी ही संस्थाओं के खिलाफ़ आवाज़ उठाते थे, जो रुपये लेकर साहित्यकारों को खरीदती थी। उनका कहना था कि ''ऐसी संस्थाएँ साहित्य की सेवा नहीं करतीं, बल्कि धँधा चलाती हैं। परंतु जिन संस्थाओं में यह काम करते थे, वे ही सही मायने में साहित्य सेवी थे।''

एक दिन इसी साहित्य से जुड़ी रिटा दास की कुछ किताबें प्रकाशित हुई। कुणाल बावेचा को यह खबर कैसे लगी पता नहीं, वे पहुँच गये रिटा दास के पास। उन्होंने रिटा से कहा, ''मैडम, आपको अपनी किताबों का विमोचन करवाना होगा ना। बस हम करवा देंगे। बस, आप अपनी किताबों की पाँच-पाँच प्रतियाँ हमें दे दीजिए, हम साथ में आपका सत्कार भी करेंगे। बस,

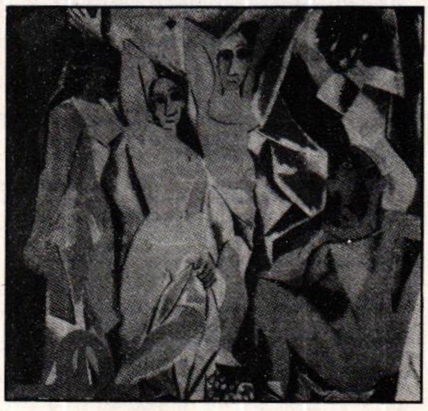

आपको सिर्फ एक हजार रुपया देना होगा। आपके साथ और चार लोगों की किताबों का विमोचन होनेवाला है। हम उनका भी सत्कार करनेवाले हैं और चारों ने हमें एक-एक हजार रुपये दिये हैं।

फिर आमंत्रण-पत्र छापे गये। सबको आमंत्रित किया गया। खानपान की व्यवस्था की गयी। शहर के सभी प्रतिष्ठित लोग इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। फोटोग्राफर भी बुलाया गया था, जो ऐन वक्त पर रिटा दास के कार्यक्रम पर दगा दे गया। उसका कैमेरा खराब हो गया तो वह फोटो भी नहीं ले सका। एक-एक करके पाँचों साहित्यकारों की किताबों का विमोचन हुआ। विमोचन नामांकित हस्तियों द्वारा ही किया गया। सभी को पुष्पहार और शॉल देकर उनका सत्कार भी किया गया। उनकी किताबों के बारे में जनता जनार्दन को बताया भी गया। अर्थात सभी समाचार पत्रों में भी कार्यक्रम के बारे में छपकर आनेवाला था ही। अब सभी को अपने विचार प्रकट करने का मौका भी दिया गया। सबने अपने अपने विचार प्रकट किये। अंत में रिटा दास की बारी आयी। रिटा का पूरा भाषण तो हम यहाँ पर दे नहीं सकते परंतु उन्होंने कुछ मार्मिक बातें कहीं, उसका कुछ अंश इस प्रकार है। ''आज मुझे खुशी हुई कि मेरी किताबों का विमोचन हुआ। परंतु आज के साहित्यकारों की दुर्दशा यह है कि उनको अपनी किताबों के प्रकाशन का खर्च खुद उठाना पड़ता है। आज खेद के साथ कहना पड़ता है कि आपको खुद अपनी प्रतिभा बेचनी पड़ती है। आपने बहुत-सी तालियाँ बजायी, जब मुझे हार पहनाया गया और शॉल ओढ़ाया गया तब। परंतु कड़वा सच तो यही है कि इसके लिए मुझ से एक हजार रुपया लिया गया। कुछ संस्थाएँ कहती हैं कि वह पैसा नहीं लेतीं। परंतु सच तो यही है कि साहित्यकारों को लूटा जाता है। क्या आज साहित्यकारों की यही कीमत बची है ? किसी की प्रतिभा का इससे बड़ा अनादर और क्या हो सकता है? लोगों ने साहित्य को एक धंधा बनाकर रख दिया है। हर जगह सिर्फ रुपयों में आपकी बोली बोली जाती है। न जाने आज देश के कोने-कोने में ऐसी कितनी ही प्रतिभाएँ हैं, जो रुपयों के अभाव में दम तोड़ रही हैं। आखिर ऐसा सड़ा-गला चलन कब तक चलता रहेगा? आखिर कब तक? कितनी दुःखदायी है यह कड़वी सच्चाई।''

संपर्क : ''अपूर्वा मिलन'' ५-२८,
दिप्तीश्री नगर, चंदा नगर,
पो0-हैदराबाद (आँध्रप्रदेश)
पिन-५०००५०,
फोन : ०४०-२३०४६४६९

लघुकथा

'काला नाग'

❑ युगल किशोर प्रसाद

बाप रे बाप ! वह काला नाग !! हरदम फन उठाए डँसने की ताक में रहता है.

कहाँ तुम्हें नाग दिखाई दे गया? साफ सुथरी जगह है, टीला या कोई जंगल-झाड़ भी नहीं, सुदामा का बड़बड़ाना सुन, माधो बोला।

तुम नहीं समझोगे, यार ! जहरीला से जहरीला नाग आहट पा रास्ता बदल लेता है, या बिल में घुस जाता है, किंतु यह तो,

पहेलियाँ न बुझाओ, यार ! जल्दी बताओ, कहाँ है वह जहरीला नाग? देखो, मेरे तो रोंगटे खड़े हो गये.........

अरे यार, वह नाग हमलोगों के बीच ही रहता है, आदमी की शक्ल में..............तुमने सुना नहीं है, कंचन घट में विष भरे होनेवाली बात ! हमसे-तुमसे अच्छी वेश-भूषा में। न जाने कितनों को वह डँस चुका........किसी को विश्वास ही नहीं होता कि वह सफेदपोश ऐसा भी करेगा. ....और वह इसी विश्वास का लाभ उठाता है। चुपके से डँसता है, घर-परिवार को बर्बाद कर डालता है......

नाग की सरसराहट ध्यान देने पर सुनाई पड़ती है, फुफकार सुन लोग सावधान हो जाते हैं, किंतु यह तो आस्तीन का साँप है

माधो सुदामा का मुँह ताकने लगा। उसकी पुतलियाँ फैल गयीं...........

अरे, वही यार ! जो हमारा पार्षद है.. ....मैं उसी की बात कर रहा हूँ.........

उसने क्या किया? वह तो बड़ा भला. ....

वह और भला ! कैसी बात करते हो माधो? तो दुष्ट और दुर्जन किसे कहेंगे?

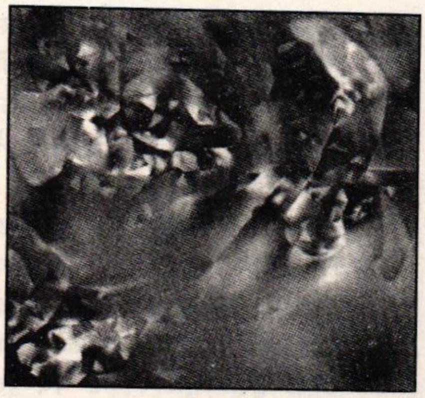

उसकी पूछ हो, इसलिए दो पडोसियों को उसने लड़ा दिया। बारी-बारी से दोनों के कान भर दिये। कल ही जूतम-पैजार की नौबत आ गयी। वह तो बीच-बचाव से बात आगे नहीं बढ़ी, किंतु मनमुटाव तो पनप ही गया......

ठीक कहते हो, सुदामा ! तो यह बात थी.......पार्षद ने ही कान भरे?

मैं भी कुछ-कुछ उसको समझने लगा हूँ। गली में खड़ंजा बिछाने का अनुदान वह हड़प गया। अपने घर के आस-पास पचास-साठ फीट में ही खाड जा लगवाया और सारा पैसा खा गया.....नाली भी नहीं बनी..

जब बड़े मंत्री, विधायक, हाकिम बाढ़ राहत का पैसा हड़प लेते हैं, कोलतार पी जाते, पशुचारा हजम कर जाते हैं तो पार्षद उनका छोटा भाई ही ठहरा न ! वह क्यों नहीं बहती गंगा में हाथ धो ले, माधो बोला।

उधर से वीरण निकला......क्या गुफ्तगू चल रही है, भाई, थोड़ा मैं भी तो सुनूँ?

सुनकर क्या करोगे? काले नाग से कोई बच पाया है कि तुम बच जाओगे उसकी आँखें फैल गयीं.....

अरे, अचंभित होने की कोई बात नहीं, अपने पार्षद की बात हो रही थी सुदामा ने सही उसे काला नाग कहा है.....

है न वह काला नाग ! मैं सही कहता हूँ न ?

सुदामा को तसल्ली हो गयी कि माधो और वीरण उसका इशारा समझ गये।

वीरण फुसफुसाया- सचमुच वह काला नाग है.....रंग रुप से भी और कृत्य से भी।

संपर्क : न्यू विग्रहपुर, बिहारी पथ, पटना-१

रचनाकारों से

(1) रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।
(2) राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।
(3) रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।
(4) रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।
(5) रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।
(6) प्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जातीं, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।
(7) प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाएगी।
(8) किसी भी विधा की गद्य रचनाएँ 1500 शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।
(9) समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

दृष्टि 6, विचार बिहार,
यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92,
दूरभाष: (011) 22530652, 22059410

सिद्धेश्वर
संपादक, 'विचार दृष्टि'

कौम ए आदम

देखो अब तुम
मेरी यादों में आकर
मुझे परेशान मत करो
वरना मैं गुड़गाँव चला जाऊँगा
या गुड़गाँव की पुलिस
बुलवा लूगाँ

—उग्रनाथ नागरी

स्वीकृति

❑ डॉ0 सतीशराज पुष्करणा

"हमें इस मंच से यह घोषणा करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि अभी आपने जो गायन प्रतियोगिता देखी-सुनी और उसका आनंद लिया...........उसमें वरूणिका प्रथम घोषित की गई है। हम इस प्रतिभावान कलाकार का सम्मान करते हुए आदर के साथ उन्हें मंच पर आमंत्रित करते हैं, कि वह मंच पर आएँ और राष्ट्रपति के कर-कमलों से यह पुरस्कार और सम्मान प्राप्त करें।"

इस उद्‌घोषणा को सुनकर वरूणिका प्रसन्नता से गलगला उठी, और वह पूरे उत्साह के साथ अपने स्थान से उठी और धीरे-धीरे गरिमा एवं शालीनता के साथ मंच पर पहुँच गई।

मंच पर पहुँचकर उसने एक बार पूरे हाल में देखा। उसकी दृष्टि अपनी भाभी अंशुल पर जा चिपकी। अंशुल से उसकी नजर मिली तो उसने महसूस किया कि अंशुल लज्जा से धंसी जा रही है। गाते समय जब उसकी नजर उससे टकराई थी तो उसके चेहरे पर खलनायिका जैसे भाव उभर रहे थे। किंतु वह सरस्वती का स्मरण करते हुए अपनी प्रतिभा का पूरा-पूरा उपयोग कर रही थी।...........उस समय उसके मन एवं चेहरे पर एक गजब का आत्मविश्वास चमक रहा था। उसने सोच लिया था अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाना ही है। उसका प्रदर्शन इतना श्रेष्ठ हुआ कि निर्णायकों ने उसे प्रथम घोषित कर दिया।

उसने आयोजकों से विनम्र आग्रह किया कि उसकी भाभी अंशुल, जो हाल में बैठी हुई है, को भी मंच पर बुलवाया जाए। आयोजकों ने उसकी भावनाओं का सम्मान करते हुए अंशुल को भी मंच पर आने का आग्रह किया। वह राष्ट्रपति से पुरस्कार प्राप्त करके, मंच पर आई अपनी भाभी के हाथों में दे देती है, और बहुत ही विनम्रता से कहती है, "भाभी! यह आपकी प्रेरणा का ही प्रतिफल है वरना शायद......।

शर्म से पानी-पानी होते हुए भाभी कहती हैं, "नहीं। यह तुम्हारी मेहनत एवं लगन का फल है वरना मैंने तो सदैव तुम्हें निरुत्साहित ही किया। ईर्ष्या एवं डाह से तुम्हें सदैव प्रताड़ित ही किया मुझे क्षमा कर देना। मंच पर बुलवाकर मुझे जो मान-सम्मान दिया है.......मैं उस योग्य नहीं हूँ................ आज मैं उम्र में तुमसे बड़ी होकर भी अपने को बहुत छोटा............बहुत बौना महसूस कर रही हूँ............।" भाभी का गला रुंध गया। भाभी ने मंच पर ही बढ़कर रूपिका को अपने सीने से चिपका लिया।

"जानती हो भाभी! तुम्हारा स्नेह मेरा सबसे बड़ा पुरस्कार है...........।

संपर्क : 135, सिविल लाइन्स, नवाव का अहाता, बरेली-243001 (उ०प्र०)

लाचारी

❑ डॉ0 मिथिलेश कुमारी मिश्र

हमें एक गोष्ठी में जाना था और यह महज संयोग ही था कि सरोज और मैं टैम्पू स्टैण्ड पर दो-तीन मिनट आगे-पीछे पहुँचे। वह जाकर टैम्पू पर पहले बैठ गया। मैंने उसे देख लिया था। किंतु मैं देखकर भी अनदेखा कर गयी क्योंकि मैं उसके साथ बैठकर नहीं जाना चाहती थी, कारण हमारा रूढ़ियों से भरा समाज जो बात का बतंगड़ा बनाने में तनिक भी देर नहीं, लगाता किंतु सरोज दुनिया और समाज को ठेंगे पर रखकर चलाता है उसे किसी बात की कतई कोई परवाह नहीं रहती।

टैम्पू की ओर बढ़ती हुई मैं सोचने लगी कि कल रात उससे फोन पर बात हुई थी, उसने पूछा था कि गोष्ठी में कैसे आओगी। मैंने कहा था कि कोई स्कूटर या गाड़ीवाला परिचित मिल गया तो उसके साथ, नहीं तो टैम्पों से चली जाऊँगी। सरोज ने कहा था, तो क्यों नहीं मेरे घर से होकर चलो-दोनों साथ चलेंगे। उत्तर में मैंने इतना ही कहा- ऐसा नहीं है। मैं जानती हूँ 'ऐसा नहीं है' इन तीन शब्दों ने पूरी रात उसे सोने नहीं दिया होगा.... मगर मैंने जीवन में इतना धोखा खाया है.... अब मुझे किसी पर सहस विश्वास ही नहीं होता..... मैं करना भी नहीं चाहती।

उसे टैम्पू में बैठा देखकर मैं घबरा गयी जिनकी नजरें चार हुईं। तो या तो वह मुझे बुला लेगा या वह स्वयं उतर कर मेरे पास आ जाएगा। ईश्वर से प्रार्थना करने लगी कि वह मुझे न देखे और उसका टेम्पू पहले चला जाए या मैं उसके पीछे जिस टैम्पू पर बैठूँ वही पहले चल दे। यही हुआ मेरा टेम्पू पहले चल दिया और मैं गोष्ठी स्थल पर पहुँच गयी, वह मुझसे दो-तीन मिनट बाद में पहुँचा।

मैंने कहा, "मैं भी बस अभी-अभी आयी हूँ।"

"मैं जानता हूँ..... तुम जिस टेम्पू पर आयी हो वह हमारे टैम्पू से पीछे खड़ा था किंतु वह पहले चल दिया और तुम पहले पहुँच गयी। इच्छा हुई तुम्हें बुला लूँ.... या मैं भी तुम्हारे पास आ जाउँ..... मगर तुम्हें नजर चुराते देखकर..... मैं वहीं बैठा रहा।"

इतना कहकर वह गोष्ठी में आये अन्य लोगों से बातचीत करने में व्यस्त हो गया और मैं अपनी चोरी पकड़ी जाने पर स्तब्ध खड़ी रह गयी।

संपर्क : अनुसंधान पदाधिकारी,
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद
सैदपुर, पटना-८०००४ (बिहार)

काव्य-कुंज

शहीद जवानों की स्मृति में

– डॉ. एपीजे. अब्दुल कलाम

देश के ५९वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति डॉ. एपीजे. अब्दुल कलाम ने नई दिल्ली के इंडिया गेट स्थित अमर जवान ज्योति पर पुष्पचक्र चढ़ा कर शहीद जवानों को इन पंक्तियों से श्रद्धांजलि अर्पित की। –संपादक

दिल को साहस से जगमगाइए
देश में निष्ठा फैलाइए
त्याग का संदेश चहुँदिश पहुँचाइए
अपने देश का विश्वास बढ़ाइए।
हवा के साथ लहराती उम्मीद
शक्ति और निश्चिंतता एक दूसरे में लीन
उल्टी रायफल और उसपर लगा टोप
वादा निभानेवाले शूरवीरों की बेदी।
काला ग्रेनाइट और उसके चारो कोनों पर
जलती लौ एक अलग सी खामोशी
हाथों में फूल और नमी आँखें
अमर जवान ज्योति
हमारा आपको नमन।

संपर्क: राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली-4

"अंतर की पुकार"

❑नागेश्वर शर्मा 'आहत'

टूटे-फूटे शब्दों में गुंफित
मृदुल भाव सुकुमार ।
अनायास ही निकल पड़े
हैं
दबे व्यथा के भार ।।
आसमान है
देख रहा
तपती यह धरती सारी ।
दिशा द्वंद्व में खेल रही
है छिटक रही चिनगारी ।।
झुलस रहे झुरमुट निकुंज
संत्रस्त दीखते प्राणी ।
पवन झँकोरे विध्न शृंग,
कंपित सरिता, सर पानी ।।
उर में भरी विदग्धता भारी
सांस समीर गरम था।
जलन-ज्वाल ले निकल रहा,
शीतल कुछ सिंधु नरम था ।।
कलकल करते शीतल जल को
था बैठ निरखता माली ।
आशा की एक जगी थी,
शैवाल डोर हरियाली ।।
मैं चाह रहा अब छोड़ चलूँ,
निर्मम जग की यह छाया।
जिसमें मैंने देख लिया है,
क्रूर अविवेकी माया ।।

**संपर्क : द0 चाँदमारी रोड, नं0-२,
पटना-२०**

राष्ट्रभाषा हिन्दी

❑डॉ. महेश चंद्र शर्मा

हिंदी है भारतवर्ष की
राष्ट्रभाषा,
तथा व्यावहारिकता है
इसकी शक्ति।
हिंदी का करें हम प्रचार-प्रसार,
इसी में निहित है हमारी राष्ट्र-भक्ति ।।1।।
हिंदी है भारतवर्ष की एकता की कड़ी,
इसे बननी चाहिए संपर्क-भाषा।
यदि हमें आगे बढ़ाना है अपने देश को,
तो व्यवहार में अपनानी है राष्ट्रभाषा ।।2।।
भारतवासियों के दैनिक जीवन में,
हावी न हो पाए अँगरेज़ी।
इस बात से रहना है हमें निरंतर सजग,
मानसिक दासता की जननी है अँगरेज़ी
।।3।।
हिंदी है भारतवर्ष का प्राण,
बढ़ानी है हमें इसकी शान ।
हिंदी से ही बनेगा भारत महान्,
सब मिलकर करें हम इसका गान ।। 8 ।।

**संपर्क : 'अभिवादन', १२८ ए,
श्याम पार्क (मेन) साहिबाबाद
(गाजियाबाद)**

डॉ0 सतीशराज पुष्करणा की दो चतुष्पदियाँ

1. नर में भी कुछ ऐसे होते, जिन पर दुनिया मिट जाती है,
कुछ मानव ऐसे भी होते, जिनसे वसुधा थर्राती है,
कुछ ऐसे आते धरती पर, औरों का भाग्य बनाने को,
कुछ ऐसे ज़िंदा रहते हैं, फूलों में आग लगाने को।

2. आज का आदमी, जो लड़ रहा है काल से,
जिसके शोषण में लगे हैं, चंद पूँजी के दलाल।
भूख से विक्लांत होकर, गल रहा है माँस तन का,
जिनके भोजन में जुटे हैं– चील, कुक्कुट और 'शृगाल'।

**संपर्क: 'लघु कथा नगर', महेन्द्रू,
पटना-८०००६ (बिहार)**

With best compliments from :

NEW PERFECT ENTERPRISES

Contact us for :

- STD/ISD/LocAL/FAX
- PHOTOSTAT, STATIONERY
- MOBILE CONNECTION, SMART CARDS & RECHARGE VOUCHER

Bengali Road, Mithapur 'B' Area
PATNA-800001
Ph. : 2229236 (S), 2208175 (S)
Fax : 0612-2212183, 99 Mobile : 9835088111

काव्य-कुंज

सिद्धेश्वर की तीन कविताएँ

एक

निर्दोष तितलियों की हत्या

भूकंप का दानव
धरती की छाती फाड़कर निकले
या निकले वह सागर की गहराई से.....
उसकी तिलमिलाहट भूख और
बहशीपन में कोई फर्क नहीं पड़ता।
हजारों-लाखों निर्दोष मासूम की जिंदगियाँ

प्रकृति के अनुपम सौंदर्य से
दूर बहुत दूर हो जाती है....
महरूम रह जाती है
उनके करीब मंडरा रहीं तितलियाँ....!

दो

कुदरत का कहर

जबसे कुदरत का कहर
बिन बुलाए मौत की तरह
हजारों-लाखों
जिंदगी के दरवाजे का सांकल
खटखटाने लगा है.....
इन दरवाजों के भीतर
पसरा हुआ सन्नाटा
कुछ अधिक दहशत फैलाने लगा है.....!
क्या यह विनाशलीला
कुदरत की शैतानी है?
प्रकृति की मनमानी है?
या फिर हमारे कुकर्मों का फल है?
क्या इससे भी बुरा
आने वाला कल है?

तीन

लहरों का दानव

सागर की लहरों को देखकर
डूब जाते थे हम-तुम
आँखों की गहराई में!
बांसों उछालता था हमारे दिल को!
घंटों निहारा करते थे हम सागर को
समंदर से कितना करते थे प्यार!!
क्या पता था
कभी-कभी वह
निर्दोषों पर करता है वार!
कुदरत का यह कैसा अत्याचार?
पैंतीस फुट ऊँची छलांग लगाकर
निगल लेता है पूरा का पूरा गाँव
बंजर में बदल देता है।
पूरा का पूरा शहर
और बची हुई जिदंगी में
भय पैदा कर देता है आठों पहर!
देखती रह जाती है
मूक दर्शक बनकर
निरीह, निर्दोष, लाचार, भयभीत आँखें।
सागर से निकले इस दानव ने
कितनी निर्दयता से
काट डाली है
हमारी जिंदगी की पाँखें!!?

संपर्क :- अवसर प्रकाशन, पो०बा०नं०-205, करबिगहिया, पटना-800 001, बिहार।

दावेदारी

❑ मनु सिंह

दावेदारी का दौर है
पता नहीं ठोक दे
कौन किस पर दावेदारी
सवर्णों पर किन सवर्णों
की
गैर सवर्णों पर किन अवर्णों
की
मिल्कियत बनती है
अभी तक भाषणों तक
सीमित है दावेदारी का खेल
पता नहीं क्यों अब तक
दीवानी अदालतों में दर्ज नहीं हुआ मुकदमा
लेकिन सोचनेवाली बात है
कि जाति का आधार बने कि पार्टी का
फिर तो बहुतों को इधर से उधर होना होगा
गुलामी जाति के महंतों की करनी होगी
शायद ऐसा ही कुछ होनेवाला है
तभी तो सुन्नी वफ्फ बोर्ड ने
ठोकी है ताजमहल पर दावेदारी
और बहादुरशाह जफर के बंशज
भी कब पीछे रहनेवाले हैं
शुक्र है खुदा का कि खुदरा में
ठोकी जा रही दावेदारी
ऐसा न हो कल अकबर का कोई
और पूरे देश पर ठोक दे दावेदारी
या इस्ट इंडियन कंपनी का कोई
बचा खुचा हिस्सेदार
बनकर पूरे भारत का दावेदार
दीवानी मुकदमा कर दे कहीं
फिर इसकी खिलाफत कौन करेगा
भगत सिंह कुँवर सिंह कब के चले गये
जो हैं सब स्वार्थ में अंधे
उनका चलाना है अपने-अपने धंधे
न हल्दीघाटी, न स्वतंत्रता-संग्राम ही याद रही
मन मसोस जो जी रहे
अपने आँसू पी रहे
दशा देश की न हरदम ऐसी रहेगी
आज नहीं तो कल
देश-भक्ति की फिर लहर बहेगी।

संपर्क : विनोवा नगर, पोस्टल पार्क, पटना-१

गाँधी की प्रासंगिकता

❑ राजभवन सिंह

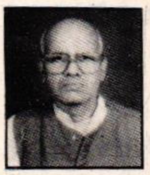

बापू, आज याद करते हैं वे तुमको क्यों, पता नहीं।
एक दिवस बस एक वर्ष में और साल भर पता नहीं।।
देखो, क्या आज हो रहा, पड़ीं कतारे लाशों की।
जलते घर, राहें विरान हैं, बस्ती यहाँ निराशों की।।
क्या दरिंदगी के शिकार हैं ये बच्चे और अबलायें।
सारा भारत सना हुआ है खून से, क्या हम बतलायें।।
सपना तेरे राम-राज का, बदला रावण-राज में।
सत्य-अहिंसा तेरे अब, बेमानी हुए समाज में।।
जिस कश्ती को ले आए थे बन पतवार किनारे पर।
वह कश्ती फिर आज भँवर में पड़ी है देखो जरा इधर ।।
बापू, तुम भी देख जो लेते नेताओं के तिकड़म आज।
तब तुम आत्म-हत्या कर लेते जैसा यह बन गया समाज ।।
और शर्म की बात कहूँ क्या, तेरी प्रासंगिकता पर।
आज प्रश्न उठ रहे यहाँ, कैसी यह हवा बही दुस्तर।।
पर ये मूर्ख नहीं जानें, जो सत्य, शिव और सुंदर है।
वह तो सार्वभौम, शाश्वत, सार्वजनीन, शुभंकर है ।।
तेरी प्रासंगिकता के हित, प्रश्न यहाँ पर लायें जो।
उनकी अपनी प्रासंगिकता क्या है जरा बतायें तो।।

संपर्क :- पोस्टल पार्क, बुद्ध नगर, पथ सं०-२, पटना-८०००१, दूरभाष-२३४४०२२

सरदार पटेल को नमन

❑ आदित्य प्रकाश सिंह

हे हाड़-मांस के लोहे !
तेरे लिये गढ़ूँ कौन से दोहे ?
तेरा बहुत बड़ा था आकार ।
अबतक कोई कर न सका
दोहे में साकार ।।
हे राजनीति के शिखर-पुरुष!
हे भारत की शान!
तुम पर देश आज भी कर रहा अभिमान ।
हे विजय-वीर, हे संगठन कर्ता !
देश भूला नहीं सकेगा तेरा अवदान ।
विखरे राज्यों को एक सूत्र में तुमने पिरोया
तभी बना है भारत देश महान ।
तेरे लिए कठिन नहीं था कोई काम ।
इसीलिए दुनिया लेती है तेरा नाम।।
जब कोई समस्या आती है गंभीर ।
तब याद तुम्हारी आती है तस्वीर ।
तेरे योग्य कोई सुमन नहीं है बागों में
जिसे पिरोऊँ आज मैं धागों में ।
हे लौह पुरुष ! स्वीकार करो शब्दों की माला ।
दो रोशनी ऐसी फैला रहे भारत में उजाला ।

संपर्क: ३७/१, गर्दनीबाग, पटना-२

संदेश

❑ उदय कुमार 'राज'

आओ हम सब मिल कर दिल में
राष्ट्रप्रेम की ज्योति जलाएँ
जात पात का भेद मिटाकर
आगे कदम बढ़ाएँ।।
हिंदू मुस्लिम सिख, इसाई
की ना बात करे कोई
एक दूसरे को पीछे से
ना आघात करे कोई
असमानता रहे न कोई
ऐसे हिल मिल जाएँ
आओ ....
अलग-अलग हम प्रांत के बासी
भिन्न-भिन्न है भाषा
लेकिन मित्रों सभी जगह है
प्रेम की इक परिभाषा
जिएं-मर हम देश की खातिर
ऐसी कसमें खाएँ
हम सब हैं आजाद यहाँ पर
जहाँ जी करे डोले
प्रेम डगर पर जो भी आए
हम उसके संग होलें
जीत सके जो सबके दिल को
वो करतब दिखलाएं
आओ ....
सभी जात और सभी धर्म के
लोगों का यह देश है
फिर क्यों है मतभेद यहाँ पर
क्यूं आपस में द्वेष है
भारत की अखंडता हेतु
हम सारे मतभेद मिटाएँ
आओ ....
सभी कौम के बंदे थे
जो आजादी के लिए मरे
देश भक्त है वही
जो उनकी कुर्बानी को याद करें
हम उनकी राहें पर चलकर
जीवन सफल बनाएँ।
आओ ....

संपर्क: एस./107, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-92

एक पैगाम-माँ भारती के नाम !!

❑संजय जोशी 'प्रेमी'

ऐ वतन, ऐ वतन! है हमारा वचन
साँस हर इक तेरे नाम कर जाएँगे।
देश रुपी दीये में लहू को जला
नाम रोशन तेरा जग में कर जाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन!
ऐसा होगा तेरी शान का वो समा
नृत्य करती धरा मस्त हो आसमां।
दुंदुभी दश-दिशाओं में अविरल बजे
गीत गौरव के तारे भी नित गाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन!
भाल उन्नत हिमालय-सा तेरा रहे
तेरे आँचल से गंगा का अमृत बहे।
स्वर्ग-सुख के निमंत्रण को ठुकरा के हम
तेरे पहलू में भूखे भी सो जाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ तवन!
फूल बन तेरी माटी में हैं हम खिले
ये सुअवसर हमें हर जनम में मिले।
है बहारों की तुझको कसम ऐ चमन।
पंखुड़ी हर तेरे नाम कर जाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन!
काँच-सा मन सदा पाक-पावन रहे
और पड़ोसी की पीड़ा में आँसू बहें।
दोस्ती में बढ़ी भी निभा लेंगे हम
पर हो अपमान तेरा न सह पाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन!
माँ, अमन-चैन के हम पुजारी बनें
प्रीत सद्भाव की गुनगुनाएँ धुनें।
कोई कायर समझ दृष्टि टेढ़ी करे
हम कहर बन जमी पर बरप जाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन!
सरहदों पर यति से रहेंगे रमे
वीर राणा-शिवा की हिदायत हमें।
काल ने भी अगर रण की ललकार दी
देख भीषण समर रूद्र डर जाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन।
शर-शयन की मिली हो विरासत जिसे
क्या सियाचिन या रणकच्छ का भय उसे।
तेरे आगोश में ओढ़ हिम का कफन
हम चिता पे भी निश्चित सो जाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन!
शत्रु सारा जहां, माँ निपट लेंगे हम
भाई अपने ही जयचंद इसी का है गम।
है सताती हमें एक चिंता यही
कैसे इनसे तुझे माँ बचा पाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन।
तख्ते-ताऊस में आज है धुन लगी
लोक-रक्षक करें लूट हिंसा ठगी।
नाव माँझी डुबोने पे जब हो तुले
सब्र काबू में माँ अब न रख पाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन।
कर दु:शासन के तेरे वसन तक बढ़े
नीच शिशुपालों के भर गये हैं घड़े।
पुण्य भूमि तेरे नव-सृजन के लिए
चक्र प्रेमी प्रलय का चला जाएँगे।
... ऐ वतन, ऐ वतन।

संपर्क : के०-10, आशियाना अपार्टमेंट नं०-9
वीनस कॉलोनी, 2 री स्ट्रीट,
अलवर पेट, चेन्नई-600018

भारत दर्शन

❑असरार जामई

जो कुछ भी है जहां में, हर एक ओर फनां है।
लेकिन खुदा ने वख्शा, एक इश्क को 'बका' है।
उस इश्क की बदौलत, हुब्बे वतन मिला है।
'हुब्बे वतन' ने मुझको तड़पा के रख दिया है।
जुल्मो-सितम की अब जो, बहने लगी है धारा।
हम हैं यहाँ के वासी, यह देश है हमारा।
हरगिज न हम करेंग, ऐ भाई!यह गवारा।
बरबाद हो कभी भी, हिंदुस्ताँ हमारा।
यह जात-पात दंगा, जो हर तरफ है जारी।
एक खौफ सा सभी पर, है सुबहहो शाम तारी।
सहमें हैं बूढ़े, बच्चे, सहमी हुई है नारी।
यह कौन जानता है, कब आये किसकी बारी।
सब डर रहे हैं सबसे, अपने हों या पराये।
कमजोर को न कोई, इस देश में सताये।
मरहम लगायेंगे हम, गर कोई जख्म खाए।
हम जायेंगे मदद को, जो कोई भी बुलाए।

चक्रव्यूह में देश

❑प्रो०लखन लाल सिंह ''आरोही''

घिर गया है मेरा
प्यारा देश
भ्रष्टाचार, घोटाला,
अपहरण,
आतंक, अराजकता के
चक्रव्यूह में।
अभिमन्यू की नियति
झेल रहा है
मेरा देश।
कौरवों की फौज का
कब्जा है
हस्तिनापुर पर।
द्रौपदी
हाशिए पर पड़ी
वस्त्रहीन
रोती है।
आजादी
महज किताब के चन्नों में
अंकित है।
शहीदों के सपने
कूड़ों के ढेर पर
बिखरे हैं।
देश भक्ति
बेवकूफी की बात है।
क्षितिज पर कब से बैठे
इंतजार में हैं -
गाँधी, पटेल, जवाहर, भगत सिंह,
कौन स्वीकार करेगा
चुनौती
देश के चक्रव्यूह को
तोड़ने की? -

संपर्क: बी-2, फ्लैट न०
203, लुंकड कोलोनेड,
विभान नगर, पुणे-411014

'विराट विमर्श' पर एक विमर्श

❑ दिवाकर वर्मा

प्रयाग स्थित तीन पावन नदियों का संगम 'त्रिवेणी' संज्ञा से अभिहित है। संगम पर स्नान त्रिताप नाशक है, यह एक सर्वमान्य आस्था है। तीन नदियों में गंगा-मोक्षदा, यमुना पापनाशिनी और सरस्वती अंतर्ध्यान रहकर भी आशीषदायिनी है। त्रिवेणी का स्मरण-मात्र जीवन में अद्‌भुत ऊर्जस्विता का संचार करनेवाला है। ऐसा ही साहित्यिक त्रिवेणी का दरस-परस करने का अवसर मुझे तब प्राप्त हुआ जब वरेण्य कवि चन्द्रसेन विराट के रचनात्मक अवदान और साहित्यिक मूल्यांकन पर डॉ. अनन्त राम मिश्र 'अनन्त' के द्वारा संपादित ग्रंथ 'विराट-विमर्श' के अनुशीलन का सुयोग बना। यह त्रिवेणी चनद्रसेन विराट रूपी गंगा, डा० अनन्त राम मिश्र 'अनन्त' रूपी यमुना और साक्षात् सरस्वती के संगम के रूप में मेरे समक्ष है। इस शाश्वत त्रिवेणी में अवगाहन, वस्तुतः एक पर्व के समान है, जो मन, प्राण और आत्मा में योग एवं उल्लास भर देता है।

'उत्तर रामचरित' के प्रारंभ में कविर्मनीषियों के प्रति' अपना प्रणाम निवेदित करते हुए महाकवि भवभूति प्रार्थना करते हैं– ''विन्देम देवतां वाचममृतामात्मन: कलाम्।''

अर्थात अमृतस्वरूपा और आत्मा की कलारूप वाग्देवी हमें प्राप्त हों। काव्य के रूप में मनुष्य की आत्मा में निसृत वाणी का इससे अधिक पवित्र और यथार्थ वर्णन शायद ही किसी स्थान पर किया गया होगा। इसकी व्याख्या करते हुए सुविख्यात गुजराती आलोचक डा० आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव कहते हैं–''इस प्रार्थना में उल्लिखित वर्णन के अनुसार कविता (1) अमृतस्वरूपा (2) आत्मा की कला और (3) वाग्देवी रूपा है।'' ऐसी कविता का साक्षात्कार करने के लिए हमें छंद के साधक, गीत-ग़ज़ल-मुलक के कवि चन्द्रसेन विराट के रचना संसार में झाँकना होगा। इस झाँकी का अवसर उपलब्ध कराया है, सद्य: प्रकाशित कृति विराट-विमर्श' ने।

आमतौर पर जिज्ञासु पाठक, अध्येता और शोधार्थी अपने समय के महत्वपूर्ण कवि, लेखक, आलोचक आदि के कृतित्व, कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व की झलक पाना चाहते हैं। यह चाहत उन्हें एक ऐसी पुस्तक की खोज की ओर उन्मुख करती है, जिसमें उस रचनाकार के विषय में एक विहंगम छवि के दर्शन हो सकें। ऐसी ही सृजनात्मक उत्सुकता के शमन हेतु डॉ. 'अनन्त' ने यह उपक्रम किया है। लगभग तीन सौ पृष्ठों के इस ग्रंथ में विराट को समग्र रूप में प्रस्तुत करने का सारस्वत प्रयास स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उनके साहित्यिक जीवन और सृजनात्मक अवदान का लेखा-जोखा अड़तीस विचारपरक लेखों-निबंधों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है । इस अनुष्ठान में चौंतीस समकालीन कवियों, लेखकों और आलोचकों ने हव्यर्पण किया है। डॉ. प्रभुदयाल अग्निहोत्री, डॉ. सुरेश गौतम, डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ, डॉ. अनन्त राम मिश्र 'अनन्त', डॉ. श्रीराम परिहार, रघुनाथ प्रसाद 'विकल', महेश अनघ, आचार्य भगवत दुबे आदि ऐसे कुछ नाम हैं, जिन्होंने इस विराट उपक्रम में अपना आलेखीय योगदान दिया है।

चन्द्रसेन विराट काव्यगत मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध सर्जक हैं। उनके ऊर्जस्वि विराट् कृतित्व पर छुटपुट चर्चाएँ हुई हैं, लेकिन व्यवस्थित आलोचन मूल्यांकन उतने परिमाण और अपेक्षित वस्तुपरकता के साथ नहीं हुआ, जितना कि होना चाहिए था। इसका कारण, आलोचकों की दुराग्रहजन और पूर्वाग्रहजन्य आपराधिक, उपेक्षात्मक दृष्टि रही है फिर भी देर आयद दुरूस्त आयद' की तर्ज पर यह प्रयास स्तुत्य है। समीक्ष्य कृति में कई विचारधाराओं और क्षेत्रों के समीक्षकों के द्वारा एवं सामानधर्मा कवियों के द्वारा विराट के विराट रचना संसार की परख की गयी है। इस परख में सम्मान-भाव के साथ वस्तुनिष्ठता का निर्वहन स्पष्ट परिलक्षित होता है। यही कारण है कि कवि के गीतों, ग़ज़लों और मुक्तकों की शक्ति प्रासंगिकता के साथ-साथ कृतियों का निर्बल-पक्ष भी समीक्षात्मक विवेक के ध्यान में रहा है।

विराट के समग्र रचना संसार का मंथन करने पर सोच अंतरिक्ष की सीमाओं के परे चला जाता है। सोच की उड़ान के लिए आकाश सँकरा हो जाता है। वहाँ सूर्य के मध्य कर देनेवाले महासाप को भी ललकारनेवाला हनुमत्-भाव है, तो यमराज से साक्षात्कार करती हुई ज्ञानी बालक नचिकेता है। सूर्य की महाग्नि में मूर्खतापूर्ण अहं के कारण पंख झुलसाता सम्पत्ति है, तो पृथ्वी की ओर वापसी के लिए उड़ान भरता नीतिज्ञ जटायु भी है। जहाँ वानराणामधीश हनुमान की परिस्थितियों से टकराने की सामर्थ्यवती विजगीषु वृत्ति है, वहीं नचिकेता की सत्यान्वेषण की प्रखर एषणा भी विद्यमान है। संपत्ति अहं का उद्दाम आवेश है, तो जटायु का सांसारिक व्यवहारिकता से परिपूर्ण बुद्धि, भी अपनी संपूर्ण प्रखरता के साथ उपस्थित है। विराट की रचनाद्धर्मिता एवं सृजन दृष्टि इन चारों अंतरिक्ष यात्रियों के आदर्शों का समाहार है। चिंतन-भूमण्डल की ओर दृष्टिक्षेप कर कहता है कि अंतरिक्ष के मानदण्ड से पृथ्वी पर व्याप्त जीवन को मापना है अथवा भूमण्डल के मानदण्ड से अन्तरिक्ष का नियमन होना है। पृथ्वी और अंतरिक्ष के मध्य उड़ान भर कर सूर्य को अपना ग्रास बना लेने वाले हनुमान और अपनी शक्ति का अंकलन कर अधेबीच से वापस लौट आनेवाले बुद्धिमान जटायु का संकेत है कि भूमण्डलीय प्रतिमानों के आधार पर अंतरिक्ष का नियमन-संचालन संभव है। क्योंकि धरती और आकाश के बीच का सोच, वस्तुत: धरती का ही सोच है। भूमण्डल अंतरिक्ष है और अंतरिक्ष भूमण्डल की चाहत। धरती ने संकट में आकाश की ओर निहारा है और आसमान ने धरती को सदा संकटों से उबारा है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए विराट की रचनाओं में हनुमान की अदम्य विजगीषु-वृत्ति, नचिकेता की आदर्श अंतर्दृष्टि और अनथक जिज्ञासा, संपत्ति का शौर्यमय संघर्ष किंतु अधपकी और अविचारित आवेशमय उद्दाम लालसा

एवं जटायु का उद्दाम किंतु व्यावहारिक दृष्टिकोण सुगुम्फित हैं। जीवन और जगत से प्रभावित मानव स्वभाव की ये भावनाएँ और प्रवृत्तियाँ विराट के सृजन में इरास्तत: भली प्रकार चिन्हित की जा सकती हैं। 'विराट विमर्श' के आलेख वस्तुत: इन्हीं सब का विस्तृत लेखा-जोखा है।

'विराट-विमर्श' से परिचय प्राप्ति हेतु और उसमें वर्णित विषयों की विवरणात्मक जानकारी हेतु इस वृहद ग्रंथ रूपी सागर में गोता लगाने से पूर्व ग्रंथ के संपादक के संपादकीय 'सांपादनिक दृष्टि' के इस अंश को यहाँ उद्धृत करना अत्यंत समीचीन होगा–

"विराट-विमर्श" में समालोच्य कवि के विभिन्न काव्य विधाओं में सृजन-क्रम-गीत, ग़ज़ल, मुक्तक के अनुसार ही लेख, निबंध समीक्षा संकलित हैं। समग्र साहित्य के विहंगावलोकन, व्यक्तित्व-कृतित्व और साक्षात्कार अंत में है। गत दो वर्षों में विराट जी ने जीवन-जगत के बहुआयामी भाव-फलक से जुड़कर सहस्त्राधिक दोहा-रचना भी की है, जिनका कुछ आस्वाद कई पत्रिकाओं से पाठकों को मिल रहा है। उनका समग्र दोहा-संसार अभी पुस्तकाकार नहीं है, अत: उनके दोहों पर कोई भी समीक्षा-सामग्री इस योजना में सम्मिलित नहीं की जा सकी है।"

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और कवि उसका सर्वाधिक संवेदनशील घटक। कवि विराट भी इसी भावभूमि में विचरण करते हैं। इसी तथ्य को रेखांकित कर रही है हेमलता भट्ट अपने निबंध, 'चंद्रसेन विराट की भावभूमि का वर्ण्य विषय के आधार पर वर्गीकरण' (पृष्ठ-237) में–

"विराट एक कवि होने के नाते हर तरह से भारतीय समाज से सीधे जुड़े हैं। कवि मन समाज में होनेवाले हर सूक्ष्म परिवर्तन को महसूस करता है और अपने काव्य के माध्यम से उसे अभिव्यक्त करता है। हमारे वास्तविक सामाजिक जीवन का चित्रण विराट ने अपने काव्य में बखूबी किया है।" मानवीय संवेदना से अनुप्रेरित एवं अनुभूति प्रधान हैं ये पंक्तियाँ–

'मैके को लौट गई धूप उत्तर फुनगी से,
मछुओं की झुग्गी में दीप जले चिनगीं से
सई साँझ, लक्ष्मी घर द्वार सब खुला पाए,
लौट चलें घर जाएँ।

कवि भूत के आलोक में वर्तमान को उपयुक्त शब्द देता है और उसकी यही काव्य-भाषा भविष्य के भव्य भवन की नींव एवं आधारशिला बनती है। किंतु, भूत का गुणगान और भविष्य को कल्पनालोक के सपनों में खोए रहना अथवा उसकी चिंता में रोते रहना मानवोचित नहीं है। यह मन्यु-प्रकृति के प्रतिकूल है। वर्तमान ही यथार्थ है और उसको यथोचित महत्व देना ही कवि का सारस्वत धर्म है। इसी तथ्य को रेखांकित करते हुए डॉ. सुरेश गौतम ने अपने विद्वतापूर्ण समालोचकीय आलेख 'रश्मिरथी चन्द्र: चन्द्रसेन विराट' (पृष्ठ-77) में कुछ इस प्रकार कहा है–

"वर्तमान मनुष्य का रचना शास्त्र है, जो अंतत: क्रमश: इतिहास होता जाता है। भूतकाल, इतिहास को रोते रहना, भविष्यगत कल्पनाओं को साकार करने के लिए चिंतित रहना इन दो पाटों के बीच सैण्डविच बन कर व्यक्ति अपनी वर्तमान को खो देता है। वर्तमान को जानना, उसे भरपूर जिंदगी बनाना ही कर्म की गतिशीलता है। इधर-उधर होकर मध्य को खोना न अक्लमंदी है और न ही सामने खड़े वर्तमान का समाधान। वर्तमान की इन नीम-बोधी समस्याओं को कवि लय देता है–"सिर्फ भूत का ही गौरव दोहराना क्या?। वर्तमान जो प्रस्तुत उसमें प्रथम जियो। सिर्फ शहद का स्वाद याद करते न रहो। किंतु आज का पहले कड़वा। नाम पियो।"

जीवन के इस यथार्थ को अशोक आनन के साथ एक चर्चा (श्री चन्द्रसेन विराट से अंतरंग चर्चा/पृष्ठ-281)में विराट जी ने भी इन शब्दों में अभिव्यक्ति दी है–

"समय के साथ कदम से कदम लाकर चलनेवाले कवि या लेखक में उसका अपना समय संपूर्ण आधुनिकता के साथ उपस्थित रहता है। इसके ओढ़ी हुई तथाकथित आधुनिकता अपने फैशनेबल लेखन के माध्यम से कितना भी ढोंग रच लें, वह उजागर हो ही जाता है। बिना समय की धार में डूबे केबल तट से धार का नजारा करनेवाले, ऐसा छदम आधुनिकता का लेखन करनेवाले, थोड़े समय के लिए साहित्य का ध्यान भले ही आकर्षित कर लें, वे हमेशा रहकर स्वीकृत होनेवाले नहीं हैं।"

विराट का व्यक्तित्व उनके कवि व्यक्तित्व का साझीदार है। वह भारतीय संस्कृति के प्रबल पक्षधर हैं। भारतीय जीवनमूल्य, भारतीय परंपरा, उत्सवधर्मिता,। गत्यात्मकता और स्वातंत्र्यबोध की पुंज भारतीय सनातन संस्कृति के प्रति उनकी आस्था समग्र धार्मिक भावना के साथ दृष्टिगोचर होती है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ धार्मिक-सांस्कृतिक भावभूमि, पौराणिक शिक्षकों, भारतीय सनातन जीवन से उठाए गये प्रतीकों और बिंबों आदि से श्री संपन्न हैं। हिंदी और हिंदुस्थान उनके गीतों, ग़ज़लों, मुक्तकों आदि में ये समस्त तत्व पूर्णरूपेण अनुगुम्फित दिखाई देते हैं। अभिधा, लक्षणा और व्यंजना के माध्यम से अभिव्यक्त भारतीय आदर्श एवं संस्कारों का विराट दर्शन विराट के सृजन में अपनी संपूर्ण इयत्ता के साथ उपलब्ध है। इस संदर्भ में श्रीमती हेमलता भट्ट के निबंध (पृष्ठ-241) का यह अंश दृष्टव्य है-

"उल्लेख्य है कि संस्कृति चिंतन का मुख्य प्रतिपाद्य जीवन में अध्यात्म का आचरण है। अत: विराट जी जहाँ जीवन के प्रति आशा, निराशा, आस्था, अनास्था एवं पराजय का बोध करते हैं वहाँ यह भावना प्रबल हो उठती है।

संभवतया यही उन्हें आशावाद से संबद्ध करती है। यहाँ विराट अभिव्यक्ति के प्रवाह को गहन गंभीर बनाने हेतु अध्यात्म का आश्रय लेते हैं। भावप्रवणता के अनुरूप ही वे ऐसे प्रसंग प्रस्तुत करते हैं।

सौंदर्य का शाश्वतता एवं पवित्रता से संबंधित एक उदाहरण दृष्टव्य है "साथ सौंदर्य के शांति मागल्य है। भाल पर ओम है कंठ में साजिया।/...प्रेयसी भी तुम्हीं हो तुम्हीं ब्याहता/ कृष्ण की राधिका राम की हो सिया।"

"सृजन के क्षणों की तल्लीनता को प्रस्तुत करता एक अन्य उद्धरण "सृजन शक्ति है प्यार परमात्मा की/ वही है महाकाव्य मनु की व्यथा।"

"विराट जी का सांस्कृतिक चिंतन भी आध्यात्मिक आदर्श का अनुकरण करता है। अपने इस पक्ष का उद्घाटन करने हेतु उन्होंने 'मंगल कलश', 'रूपांवरा',

'ऋतम्भरा', 'सुप्त प्रज्ञा', युद्ध का यज्ञ' आदि प्रसंगों से संबद्ध पर सृजित किये हैं।''

विराट की रचनाओं का मुख्य स्तर प्रेम रहा है। उनके द्वारा रचित गीत, चेतना के उस धरातल की अनुभूतियों की, संबंधों की ऊष्मा की गरमाहट लिये अभिव्यक्ति हैं, जहाँ से लोकसंवेदना से ओतप्रोत हो घर-आँगन और अपने परिवेश के संसार में प्रेम की व्याप्ति को आख्यायित करते हैं, प्रेम की तलाश की व्यथा महसूसते हैं। उनके प्रेमगीतों में मध्यवर्गीय जीवन के राग विराग, आशा-आकांक्षा, संयोग-वियोग, नोंक-झोंक, छेड़, हँसी-चुहल आदि के सप्तवर्णी चित्रलोक निर्मित हुए हैं। जिंदगी की आपाधापी में आकंठ डूबे जन-सामान्य के दैनन्दिन जीवन के अति सामान्य अनुभवों, अनुभूतियों और अर्थानुषंगों, जो एकदम वास्तविक होते हुए भी सामान्यत: ध्यान आकर्षित नहीं करते हैं, उन्हीं को चुन-बीनकर विराट ने प्रेम के जिन भव्य और विराट विविधवर्णो चित्रों का सृजन किया है, वह उनकी अदभुत और अनुपम गीति-क्षमता का द्योतक है। डा० सुरेश गौतम ने अपने सर्वांगस्पर्शी निबंध में 'साधित मन की प्रणयी छुअनें' उपशीर्षक के अंतर्गत यथार्थ का ही निरूपण किया है–

''चन्द्रसेन विराट के गीतों में वर्णित प्रेम उदात्त और गतिमय है। सूर्य-किरणों की भाँति चहुँ ओर आलोक-ज्योति प्रकीर्ण कर उजियारा फैलानेवाला। संकीर्णताओं, तुच्छ स्वार्थों से दूर यह प्रेम मन और तन को उज्ज्वल बनानेवाला है। जड़ता, एकरसता की जमीन तोड़कर त्याग और प्रतिदान रहित प्रेम अनुराग के नए स्रोतों का उद्गम बनता है–''जीवन का जो उद्‌याचल है पावन जैसे गंगाजल है/जिससे जड़ता तक डोल रही जिससे मेले में हलचल है/वह प्यार तुम्हें है पाप अगर तो ज्ञानी धर्मी लोग सुनो/तुम पुण्यवान हो लो त्याग में मैं पापी का सिरभौर सही।''

''प्रेम की स्पर्श छुअने बंधनमुखी सीमाओं को काट कर बंधन में बँधती हैं। कारा से मुक्त होकर भी मुक्त नहीं होती। इंसानियत की पहली और अंतिम सीढ़ी प्रेम ही है। प्रेम में देवत्व का निवास है। जीवन के मरुप्रदेश में उपवन की तरह खिला प्रेम साति मन पारदर्शी मोती है। प्रेम अनुभूति की दिव्य-सत्ता, मनुष्य चेतना का आदि वरदान है। जीवन की पूर्णता के इस अनुभूति राग को विराट के गीत बखूबी साधे हैं-''प्यार बिना है जप अधूरा, प्यार पूर्णता है जीवन में। सत्यं, शिवम, सौंदर्य जगत का एकत्रित स्थित प्रेम स्तवन में।''

हमारे आज का युगीन-वातावरण संवेदनहीनता के प्रदूषण से ग्रस्त है। इसी के परिणामस्वरूप व्यक्ति दिन प्रति दिन स्वार्थी होता जा रहा है। बाजारवाद का फैलाव, भ्रष्टाचार, रिश्तों में दरारें, मूल्यहीनता, अपसस्कृति का प्रसार, शोषण, हिंसा, अपराध आदि इसी एक सिक्के के विभिन्न पहलू हैं। किंतु, कविता अपने विविध रूपों में सत्य की पक्षधर होकर इन दुष्प्रवृत्तियों के समक्ष ठोस चुनौती उपस्थित करती रही है। समाज की इस द्वंद्वात्मक स्थिति में सत्य जब शब्दाकार ग्रहण करते हैं, कविता की संज्ञा से अभिहित होते हैं और कभी शबनम बनकर लोकमानस को शीतलता प्रदान करते हैं तो कभी शोले बनकर समाज विरोधी प्रवृत्तियों को भस्मसात करने में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। कविता की यही प्रतिबद्धता है कि वह लोक-संवेदना के प्रस्फुटन के साथ सामाजिक सरोकार से जुड़ जाती है। चन्द्रसेन विराट ने इन सभी मुद्दों को अपनी रचनाओं का वर्ण्य-विषय बनाया है। लोक-जीवन के दैनन्दिन क्रियाकलापों से उठाए गये प्रतीकों और बिंबों के प्रयोग से उन्होंने अपनी कविता को गुणवत्ता प्रदान की है। डॉ. गजानन शर्मा ने अपने लेख 'धरा को छविवंत करने का स्वप्न' (पृष्ठ 114-115) में इस विषय को कुछ इस प्रकार उठाया है–

''संघर्ष अभी भी जग के असत्य से/हारा न सत्यकाम ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं' कवि को यह देखकर गहरा दु:ख होता है कि आज आदमी पर जानवर हावी हो गया है। जीवन में अमृत के स्थान पर जहर व्याप्त हो रहा है। मानवीय संवेदनाएँ समाप्त होती जा रही है। बुद्धि के बल पर छल-कपट करने की प्रवृत्ति प्रबल होती जा रही है।...देश की वर्तमान स्थिति कवि को पीड़ित और संत्रस्त करती है। देश में अनाचार, अत्याचार, बर्बरता, भ्रष्टाचार, शोषण, अपराध, आतंक, घृणा और अन्याय चतुर्दिक व्याप्त है।''

आज के सर्वाधिक चर्चित विषय 'भ्रष्टाचार' के संदर्भ में अनेक उद्धरण उद्धृत करते हुए कृष्णकान्त दुबे, अपने लेख 'विराट का रचना संसार, (पृष्ठ 184-185) में लिखते हैं–

''जब वे आज का यथार्थ रचते हैं, तो एक तीखा व्यंग्य अपने आप सिरजने लगता है और रचना खुद बहुत कुछ बोल जाती है-'मैं हरिजन रैदास हुकुम/सुनलीजै अरदास हुकुम/बिना कमीसन कर्जे की/ बढ़े नहीं दरखास हुकुम।'...शासकीय अमलातंत्र और भ्रष्ट राजनीति का जो खेल आज हम देख रहे हैं-वह भारत में वर्षों से खेला जा रहा है। विराट ने उस सारे गंदे महौल को दूर से नहीं, नजदीक से देखा है-और इसीलिए वे अपनी रचनाओं में उसे निर्भरता से बेनकाब करते चलते हैं-'खूब कमाया है माथुर ने, फला उसे भोपाल दुबेजी,/हुआ जिला दफ्तर में जाकर, दत्ता मालामाल दुबे जी।' राजनैतिक-भ्रष्टाचार ने, जिस तरह, भारतीय अर्थतंत्र को खोखला बना दिया है-उस पर भी, विराट की कलम अनथक लिखती रही है-और यहीं वे भारतेन्दु और नागार्जुन की परंपरा के वाहक बन जाते हैं-'जो उछलकर चढ़ गए, ऊँचे पदों की सीढ़ियाँ,/माननीयों के भतीजे, तो कभी साले रहे/वे किसी संस्थान में जब घुस गए तो घुन लगा/हर बरस घाटे बढ़े हैं और घोटाले रहे।''

रिश्तों की टूटन के विषय में डॉ. सुरेश गौतम (पृष्ठ 950 में इस प्रकार विराट की रचनाओं का आकलन किया है–

''बीसवीं शताब्दी की लकीरें आम आदमी के हाथों पर नहीं माथे पर खिचीं हैं।.... यही वजह है कि ईश्वर के अस्तित्व के विषय में भी शंका उत्पन्न हो गई है। संबंधों में इतनी दरारे, घर के आँगन और देहरी में ही अंतराल 'कुछ दरारें पड़ गई हैं आपसी सम्बन्ध' में/ देख घर की देहरी से दूर आँगन रह गया।' पद का पर्वत (पृ० 35) 'सवालात मत करो' (पृ० 45) दफ्तर-दफ्तर' (पृ० 53) लोग शिखरों से' (पृ० 59) आदि मुक्तिकाओं में सत्ता शोषित आम आदमी को जिंदगी का प्रतिवेदन है। 'मित्रवर' मुक्तिका में बाड़ ही खेत को

खा रही है-'भेड़ों का चौकीदार बना खुद ही भेड़िया/बगुला ही मछलियों का मछेरा है। मित्रवर।''

लेकिन विराट ने इन परिस्थितियों के सामने झुकना नहीं सीखा। उन्होंने मनुष्य के अंदर की उदात्तता जागृत करने का प्रयास किया है। मनुष्य की चेतना का आह्वान किया है, क्योंकि उन्हें विश्वास है कि व्यक्ति के मन में चलनेवाले दैवी एवं आसुरी प्रवृत्ति के बीच चलने वाले संघर्ष में अंतिम विजय सत्य की ही होती है। डॉ. गजानन शर्मा (114-1150 इसका विश्लेषण करते हुए कहते हैं–

''विराट जीवन को एक अविराम युद्ध के रूप में स्वीकार करते हैं।....कवि कर्म को अन्याय और असत्य से लड़ने का माध्यम मानकर वह क्षणिक उदासी निराशा और हीन भावना को छोड़ आत्मविश्वास के साथ संघर्ष के लिए कृत निश्चय और कटिबद्ध हो जाता है-...फिर भी विराट का विश्वास है कि मनुष्य का आदिम मन अभी भी रागात्मक है। यद्यपि आज मानव पतित हो गया है फिर भी मनुष्यता मरी नहीं है .... 'अभी मनुजता शेष, तभी तो जग सुंदर जीने लायक है।''

कवि आत्मविश्वास से भरकर आश्वासन देता है-'रहो निश्चिंत, जब तक, मैं खड़ा हूँ तिमिर के तट पर/कभी भी रौशनी को खुदकशी करने नहीं दूँगा।'

''वह आह्वान करते हैं 'सिर्फ कठपुतली बनो मत और अपने आपको क्रूर सत्ता के करों का झुनझुना होने न दो।' .. .कवि सामान्यजन को कायरता से उबारना चाहता है-' 'आप अपना हक न पायेंगे, बिना हुंकार के/शुद्ध कायरता कहाता, आपका आक्रोध है।'' ... कवि अत्याचार का माकूल जवाब देने के लिए जनता को तैयार करना चाहता है-'तोड़ दो हाथ दुशासन वाले/ द्रोपदी अब न उघारी जाये।

विराट छंद के प्रति प्रतिबद्ध कवि है। उन्होंने स्वयं ही कहा है-'आयु भर हम अक्षरों की अर्चना करते रहे/ छंद में ही काव्य की नव सर्जना करते रहे।' वैसे वह स्वभावत: गीतकार हैं। महेश अनघ ने अपने आलेख' 'विराट' का वागर्य वैभव' (पृ॰ 189) में कहा भी है–

''विराट मूलत: गीतकार हैं। पवन

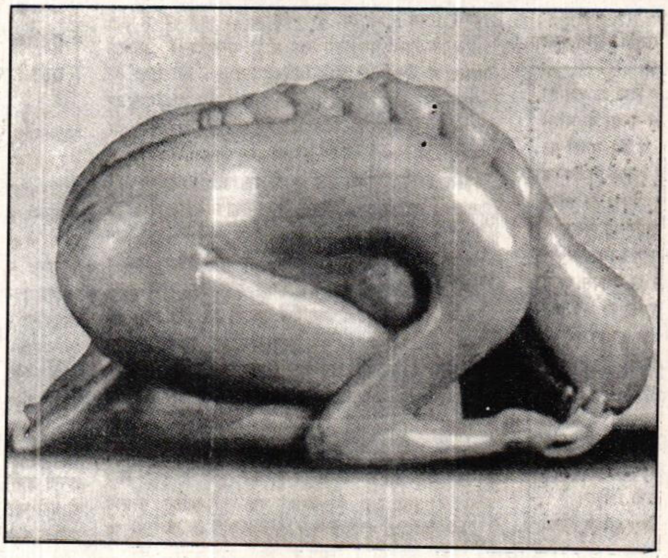

के दुलार से पला हुआ एक ऐसा गीतकार जो स्वयं उपजता है, स्वयं खिलता है और स्वयं महकता है। उसे किसी संस्थान ने नर्सरी से खरीद कर गमले में नही सजाया है, उसे किसी पीठासीन व्यवसायी ने नुमाइश का सामान नहीं बनाया है। उनका गीत, उनका सहज धर्म है।

इसकी चर्चा पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी ने अपने लेख 'हिंदी गीतिकाव्य को समर्पित चन्द्रसेन विराट' (पृ॰ 49) में करते हुए लिखा है ''अपनी रचनाधर्मिता को भी विराट ने गीत के माध्यम से ही उजागर किया है-...'जो भी तनाव जीवन के आधुनिक रहे हैं/वे गीत ने सफलतापूर्वक सभी कहे हैं/कुछ हो न किंतु रस तो अभिप्राय है अभी भी/है क्लिष्ट जिंदगी पर गेय हैं अभी भी/सक्षम हो लेखनी तो सब गीत में कहेगी/सिरभौर काव्य में तो यह ही विधा रहेगी।' विराट की मान्यता है कि समर्थ गीतकार नवीनतम भावबोध, मनुष्य की संकटग्रस्त स्थितियों से प्रसूत तनाव एवं संस्कृति की टूटन को गीत के माध्यम से सही संदर्भों में व्यक्त कर सकता है।''

चन्द्रसेन विराट एक लोक के प्रति समर्पित और छंद के प्रति प्रतिबद्ध गीतकवि हैं। उन्होंने गीत, ग़ज़ल, मुलक, दोहे, आलेख आदि लिखें हैं। अब तक उनकी दर्जनों कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। विराट के विराट रचना संसार पर टिप्पणी और मूल्यांकन हेतु यह प्रयास लाघव ही है। फिर भी उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सँजोयी गयी सामग्री पर एक दृष्टिक्षेप उनके लेखकों की अपने कार्य के प्रति गंभीरता का दिग्दर्शन कराता है। वैसे 'रश्मिरथी चन्द्र: चन्द्रसेन विराट' (डॉ. सुरेश गौतम), प्रातिभ गीतकार एवं प्रयोगधर्मी गजलकार (डॉ. नरेन्द्र झा) और 'चन्द्रसेन विराट की भावभूमि का वर्ण्य विषय के आधार पर वर्गीकरण (डॉ. हेमलता भट्ट) इस संकलन की उपलब्धि हैं जिनमें विद्वान लेखाकों ने बड़े ही मनोयोगपूर्वक कवि विराट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र मूल्यांकन किया है। वैसे तो सभी समीक्षात्मक आलेख अच्छे हैं, पर डॉ. अनन्त राम मिश्र 'अनन्त' के दोनों समालोचनात्मक आलेख स्वयं में परिपूर्ण हैं। इस आयोजन की एक विशेषता 'चन्द्रसेन विराट से अंतरंग चर्चा' (अशोक आनन पृ॰ 266 से 285) भी है, जिसके द्वारा विराट ने गीत के विषय में विस्तार से स्वयं को अभिव्यक्त किया है। समग्रत:, 'विराट विमर्श' ग्रंथ का प्रकाशन न केवल सफल रहा, अपितु भव्य भी रहा। यद्यपि प्रयास भरपूर हुआ है, फिर भी अनेक पहलू अछूते रह गये हैं। वस्तुत: विराट जैसे विराट व्यक्तित्व के विषय में एक ही प्रयास में सत्य खोज लेना और यथार्थ को दूह लेना असंभव है। इसीलिए इस प्रकार कुछ और भी आयोजन अवश्य ही होंगे। विराट की खोज की यह यात्रा अनवरत चलती रहेगी।

शुभास्ते पंथान: सन्तु!

संपर्क : 'साधना' १५०-सागर एस्टेट, मेन बायपास रोड, भोपाल

संभावनाओं की धरती पर उगी महेंद्र भटनागर की कविताएँ

समीक्षकः राधेलाल बिजघावने

सही व प्रामाणिक कविता वही है जो न केवल हमारी जमीन पर पैदा हुई हो, बल्कि वह हमारे संपूर्ण जीवन की तमाम गतिविधियों तथा सुख-दुख से जुड़ी हो। जमीन की गंध के साथ, उसमें सामाजिक एवं सांस्कृतिक सद्भावना एवं अच्छे जीवन की संभावनाएँ भी हों। कविता की अंतर्दृष्टि और उसकी कला कभी ध्वंसात्मक नहीं होती। वह हमेशा सृजनात्मक बदलाव की ही पहल करती है। इस बदलाव की कोशिश में अनेक विरोधी शक्तियों से जूझना पड़ता है। कई लड़ाइयों से गुजरना पड़ता है। अतएव कविता जब-तक जुझारू नहीं होगी, वह बदलाव की कोशिश में सफल नहीं होगी। कविता जितनी ज्यादा जुझारू होगी, वह उतनी ही तेजी से बदलाव लाएगी। वह छोटे तबके के आदमी की न केवल ईमानदार साथिन होगी, बल्कि उसका जायज-हथियार भी होगी। कविता की उपेक्षा, समाज और संस्कृति की उपेक्षा है। कविता की उपेक्षा, अपने-आप की भी उपेक्षा है। कविता की बर्बादी ही संपूर्ण समाज और संस्कृति की बर्बादी है। अतएव अपने आर्थिक-सामाजिक हितों और सांस्कृतिक मूल्यों की हिफाजत के लिए कविता तमाम अतिवादों एवं दोगले इरादों के विरूद्ध लड़ाई की जरूरी हथियार है। इस हथियार की बदौलत हम संभावनाओं को खोजते हैं। अपने छीने गये अधिकारों को पुनः प्राप्ति के लिए तथा सतह से ऊपर आने के लिए कविता निश्चित ही एक बहादुर फौजी साथी है, जो जीवन-भर हिफाजत के लिए अपना उत्सर्ग करती है। यह लड़ाई आंतरिक भी होती है और बाह्य भी। अतः एक साथ आंतरिक और बाह्य लड़ाई में सम्मिलित होना जितना कठिन काम है, उतना ही कठिन कविता-कर्म से गुजरना भी। क्योंकि रचनाकार को कविता करते समय आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार की लड़ाई करनी पड़ती है।

महेंद्र भटनागर की काव्य-कृति 'जूझते हुए' की कविताएँ बाह्य और आंतरिक लड़ाई से गुजरती कई मोर्चों पर अपनी व्यूह-रचना करती हैं। 'जूझते हुए' की कविताओं से बार-बार गुजरते हुए यही लगता है, ये कविताएँ अपनी ही जमीन की हैं; जिनमें जिंदगी की वे तमाम गतिविधियाँ हैं, जिन्हें हम दिन-रात भोगते हैं और जिनसे निपटने के लिए सतत् प्रयत्नरत रहते हैं। अतएव बार-बार महसूस होता है कि ये कविताएँ हमारी जिंदगी की ही कविताएँ हैं। कारण, ये हमारे परिवेश, भाषा, शब्द, संवेदना, समाज और संस्कृति से पूरी तरह जुड़ गयी हैं और हमारे भीतर के बयान को लगातार जारी कर रही हैं।

कई बार यह लगता है कि अब वे ही लोग समाज के गणमान्य हैं, जो अतिवादी हैं, हत्यारे हैं, आततायी हैं, दोगले हैं। ऐसे ही लोग सत्ता और समाज को लूट कर तरह-तरह के उपद्रव करते हैं। महेंद्र भटनागर ने 'जूझते हुए' में शोषण व आपाधापी में लगे ऐसे आदर्श के जामें पहने लोगों के बारे में ईमानदारी के साथ अपने विचार व्यक्त किये हैं :

> **समीक्षा कृतिः जूझते हुए**
> **कृतिकारः डॉ. महेन्द्र भटनागर**
> **समीक्षकः राधेलाल बिजघावने**
> **ग्वालियर, म० प्र०**

जिसका
उपद्रव-मूल्य है
वह पूज्य है!
जिसका
जितना अधिक उपद्रव-मूल्य है
वह उतना ही अधिक पूज्य है!
अनुकरणीय है!
अधिकांग है!
(और सब विकलांग है!)
वंदनीय है!
('प्रजातंत्र')

मनुष्य में विद्रोह की आग उस समय तक पैदा नहीं होती जब-तक अन्याय सीमांत तक नहीं बढ़ जाता। जब साजिशें चारों तरफ फैल जाती हैं—विद्रोह होता है। विद्रोह से निश्चित ही सुखद परिवर्तन होता है, नये मूल्यों का पुनर्गठन होता है। 'जूझते हुए' की 'संक्रमण' शीर्षक कविता में महेंद्र भटनागर ने इसी माहौल को यथार्थ रूप देते हुए लिखा है:

यह नहीं होगा
बंदूक की नोक
सचाई को दबाये रखे,
आदमी को
आततायी के पैरों पर झुकाये रखे,
यह नहीं होगा!
घिनौनी साजिशों का पर्दा उठ गया है,
सारा माहौल ही अब तो नया है!

जब निराशा के बादल सब जगह आकाश में फैल जाते हैं और मजबूरियाँ विकास की रेखाओं को बाँध लेती हैं तो पूरा समाज और संस्कृति अभिशाप भोगने लगती है। परिणामतः जिंदगी वीरान और बोझिल हो जाती है। इस हादसे को 'जूझते हुए' की निम्नांकित रचना में महेंद्र भटनागर ने संवेदनिक अहसास के साथ प्रस्तुत किया है :

जिंदगी :
वीरान मरघट-सी,
जिंदगी :
अभिशप्त बोझिल और एकाकी
महावट-सी!
('निष्कर्ष')

महेंद्र भटनागर की कविताओं से गुजरते हुए लगता है कि उनकी कविताएँ सामान्य आदमी के जीवन की कविताएँ हैं। महेंद्र कविताओं में शब्दों की कारीगरी नहीं करते और न ही शिल्पी की तरह काट-छाँट करते हैं, बल्कि जीवन के सत्यों को मूल रूप में प्रस्तुत करने का पूरा प्रयत्न करते हैं। यही वजह है, महेंद्र भटनागर भाषा, और शब्दों की खोज में यहाँ-वहाँ नहीं भटकते। इनकी रचनाएँ स्वतः अपनी भाषा, शब्द, संवेदना एवं परिवेश ग्रहण कर लेती हैं। यही वजह है, इनकी रचनाओं में सजावट और बनावट दोनों नहीं होती। आलंकारिकता से दूर रहते हैं। लेकिन मानवीय सौंदर्य की प्रस्तुति में पूरी ईमानदारी निभाते हैं। महेंद्र भटनागर इस बात का पूरी तरह ध्यान रखते हैं कि उनकी कविता का सही संप्रेषण

सही वर्ग में हो, इसलिए वे जन-पक्ष को ज्यादा महत्व देते हैं।

महेंद्र भटनागर की रचनाएँ वेधशाला के वैज्ञानिक की तरह अन्वेषण नहीं करतीं, बल्कि ये आदमी के वैज्ञानिक-व्यावहारिक पक्ष को प्रस्तुत करती हैं। वे कमजोर तबके में साहस और शक्ति का संचार करती हुई दोगली हरकतों के विरूद्ध खड़ी होती हैं। अतएव इनकी कविताओं में मानवीय पक्ष प्रधान है।

'जूझते हुए' की कुछ रचनाएँ सपाट एवं इकहरी हड्डी की रचनाएँ स्वत:स्फूर्त हैं तथा इनमें भारतीय जन--जीवन की प्रस्तुति है। महेंद्र भटनागर की कविताओं की संवेदनाएँ गरीब नहीं धनाढ्य हैं व छोटे तबके के प्रति गहन आस्थावान हैं। 'जूझते हुए' की कविताएँ पूरी तरह न तो वक्तव्य हैं और न ही आदर्श बघारती हैं। ये रचनाएँ अपने भीतरी मूल्यों के बदलाव का नया आदमी, नया समाज और नयी संस्कृति का एक नया संसार खड़ा करती हैं। इसीलिए इनकी ऐन्द्रिकता सार्वभौम के लिए है। अतएव ये फार्मूलाबद्ध कविताएँ नहीं हैं। ये अपना रास्ता और यात्राएँ स्वयं तय कर आगे बढ़ती हैं।

महेंद्र भटनागर की रचनाएँ समकालीन रचना-टेक से अलग हट कर अपनी अलग शक्ल, पहचान और ढाँचा तैयार करती हैं। ये कविताएँ किसी भी पक्ष की अंध-समर्थक नहीं, ये मानवीय मूल्यों का निरपेक्ष परीक्षण करती हैं। फिर, सही-गलत, हित-अहित, नीति-अनीति, न्याय-अन्याय का फर्क करती हुई सही निर्णय को ग्रहण करती हैं। अतएव, 'जूझते हुए' की कविताएँ फासलों को दूर करती हैं और सही फैसलों पर पहुँचने का सार्थक प्रयत्न करती हैं। इन कविताओं में चूँकि पारदर्शी मन की पहचान भी अंतर्निहित है, अत: ये बाह्य सचाई को अवगत कराती हैं। इसलिए इनमें अंतरण की सक्रियता है। 'जूझते हुए' की रचनाएँ ताजगी से भरपूर हैं। वे अधिकारों के लिए जूझने की क्षमतावान रचनाएँ हैं; जो अपने कार्य और कर्त्तव्य को समझती हैं। फर्ज के प्रति सजग-सतर्क हैं। शोषण और अत्याचार के विरूद्ध जुझारू रवैया अपनाती हैं।

सरदार पटेल की १३० वीं जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में

राष्ट्रीय कार्यालय, राष्ट्रीय विचार मंच

दूरभाष: ०११-२२५३०६५२, २२०५९४१०

'दृष्टि', यू०-२०७, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-९२

पत्रांक: रा०का/पत्रांक ३३२१ **दिनांक:१५ सितंबर, २००५**

आवश्यक सूचना

राष्ट्रीय विचार मंच की आम सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी, कोर कमिटी के सदस्यों तथा मंच एवं इसके मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' से जुड़े शुभेच्छुओं को सूचित किया जाता है कि राष्ट्रीय एकता के प्रतीक लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 130 वीं जयंती आगामी 31 अक्टूबर, 2005 को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में राष्ट्रीय विचार मंच और अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित है। इस आयोजन के प्रथम चरण में 31 अक्टूबर 2005 को प्रात: 7. 15 बजे नई दिल्ली के 210, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग (आई० टी० ओ० से सटे पश्चिम) स्थित अणुव्रत भवन से एक राष्ट्रीय एकता यात्रा निकलेगी जिसमें कुल 130 मोटर साइकिल पर 260 मंच के युवा सदस्य तथा 10 चार-चक्केवाली गाड़ियों पर सवार चालीस सदस्यों सहित कुल 300 लोग इस यात्रा में भाग लेंगे। यह यात्रा अणुव्रत भवन से प्रारंभ होकर महरौली के छतरपुर रोड स्थित **आध्यात्म साधना केंद्र** के पास समाप्त होगी तथा केंद्र के अणुव्रत सभागार में आयोजित सरदार पटेल जयंती-समारोह में परिणत हो जाएगी।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में यह समारोह पूर्वाह्न 9.30 से 11.30 बजे तक चलेगा जिसके मुख्य अतिथि के लिए सांसद **डॉ0 कर्ण सिंह** तथा विशिष्ट अतिथि के लिए **पद्मश्री डॉ0 श्याम सिंह शशि** एवं **डॉ0 वेद प्रताप वैदिक** से सादर अनुरोध किया गया है। भोजनावकाश के उपरांत पुन: अपराह्न दो बजे से आयोजित दूसरे चरण में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी मंच के सदस्यों को अहिंसा के कार्यान्वयन पर संदेश देने की कृपा करेंगे।

उपर्युक्त दोनों कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक अत्यावश्यक बैठक आगामी 22 अक्टूबर, 2005 दिन शनिवार को अपराह्न 2 बजे नई दिल्ली के दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित अणुव्रत भवन के सभागार में होगी जिसमें सभी सदस्यों की उपस्थिति प्रार्थित है।

भवदीय

(सिद्धेश्वर)

राष्ट्रीय महासचिव

मंच के सभी सदस्यों के नाम

इतिहास और व्यक्ति की बहस

❑ समीक्षक : रवींद्र वर्मा

यह एक दिलचस्प संयोग है कि वीरेंद्र कुमार बरनवाल की पुस्तक 'जिन्ना एक पुनर्दृष्टि' के प्रकाशन-वर्ष के बीच में ही लालकृष्ण आडवाणी की पाकिस्तान में जिन्ना पर दी गयी टिप्पणियों से जिन्ना पर बहस शुरू हुई यह हिंदी में जिन्ना पर पहली शोधपूर्ण कृति है, जो जिन्ना के व्यक्तित्व की समग्रता में पड़ताल करती है। यह संभव है कि यह विमर्श की कुछ नयी खिड़कियाँ खोलने में सक्षम हो क्योंकि इस विश्लेषण में हमारा सामना व्यक्ति जिन्ना, प्रेमी जिन्ना, राजनेता जिन्ना और अंत में हताश जिन्ना से होता है जब वे अपने डॉक्टर से कहते हैं, 'डॉक्टर, पाकिस्तान मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी भूल है।' इतिहास-चक्र की कठोरता में ऐसे भावुक उच्छ्वास का कोई मतलब नहीं है। कोई इसे सौ चूहे खाकर बिल्ली का हज जाना भी कह सकता है। बंगाल और पंजाब में हजारों लोगों की खून की होली खेलने के बाद मृत्यु शैया पर पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल के पद से अपने किये को अनकिया करने की सदिच्छा से क्या होता-जाता है? लेकिन इतना जरूर है कि इससे जिन्ना की आंतरिक भावभूमि का संकेत मिलता है।

जब जिन्ना को उनका पाकिस्तान मिल गया तो लेखक के शब्दों में 'अपने अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के साथ उनका मुखौटा (सांप्रदायिक) लगता है अपने आप उतर गया था।' 11 अगस्त 1947 को संविधान-सभा अध्यक्ष चुने जाने पर जिन्ना ने अपने अलिखित स्वतः स्फूर्त भाषण में कहा, 'अब आप आजाद हैं पाकिस्तान के इस राज में अपने मंदिर जाने के लिए। अब आप आजाद हैं अपनी मस्जिद जाने के लिए। या किसी और इबादतगाह की ओर रुख करने के लिए। आप किसी भी मजहब, जाति या अकीदे से ताल्लुक रखते हों, इससे राज्य के कारोबार का कोई लेना-देना नहीं है।'

यह एक विडंबना है कि उपर्युक्त अंतिम वाक्य भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का भी हो सकता था जिसमें उन्होंने धर्म-निरपेक्ष भारत का एलान किया हो। भारत धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र बना। मुस्लिम लीग के सांप्रदायिक पाकिस्तान-आंदोलन का इतिहास और वर्ग-चरित्र इसके विपरीत था। इसीलिए जिन्ना का यह भाषण अगले दिन पाकिस्तान के अखबारों में दबा दिया गया। जिन्ना अपनी घातक बीमारी के अंतिम दिनों में बिल्कुल अकेले हो गये थे जैसे सत्ता की लड़ाई जीतकर सत्ता ने ही उन्हें किनारे कर दिया हो। जिन ऐतिहासिक परिस्थितियों में पाकिस्तान की लड़ाई एक दशक तक जिन्ना ने लड़ी, उनमें धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का निर्माण संभव नहीं था। इसलिए लेखक का यह निष्कर्ष भावुक लगता है कि जिन्ना को मौका मिलता तो वे क्या संविधान अपने 11 अगस्त के भाषण के आधार पर बनाते।

'जिन्ना एक पुनर्दृष्टि'

हिन्दी में जिन्ना पर पहली शोधपूर्ण कृति है, जो उनके व्यक्तित्व की समग्रता में पड़ताल करती है इससे जिन्ना की आंतरिक भावभूमि का संकेत मिलता है।

जिन्ना एक पुनर्दृष्टि (इतिहास)
वीरेन्द्र कुमार बरनवाल
राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002
350 रुपये

मगर लेखक का उपर्युक्त मत जिन्ना के अंतर्विरोध को जरूर रेखांकित करता है। इस अंतर्विरोध का उत्स कहाँ है? जिन्ना की शुरुआत दादाभाई नौरोजी और गोपाल कृष्ण गोखले की उदार परंपरा में हुई थी, जिनसे वे गहरे जुड़े थे। वे काँग्रेस पार्टी में एक राष्ट्रीय नेता थे। जब 1909 के ऐक्ट के तहत मुसलमानों के लिए पृथक चुनाव प्रणाली की व्यवस्था हुई तो जिन्ना इसके कटु आलोचक थे। वे इसे राष्ट्रीय एकता के लिए प्रतिगामी मानते थे। इन वर्षों में हमें उन्हें काँग्रेस और मुस्लिम लीग को राष्ट्रीय मंच पर एक साथ लाने में प्रयासरत देखते हैं। वे 1916 के महत्वपूर्ण लखनऊ समझौते के प्रणेता माने जाते हैं।

गाँधी और नेहरू की तरह इंग्लैंड में वकालत पढ़े जिन्ना पूरी तरह अँग्रेजियत के रंग में रंगे थे। उनकी राजनीति में गंवार देहातियों और अनपढ़ मामूली आदमी की कोई जगह नहीं थी। यहाँ तक कि एक बार मताधिकार के लिए उन्होंने मैट्रिक की शिक्षा की अनिवार्यता का प्रस्ताव रखा था। 1920-21 के गाँधी के पहले जनांदोलन से उनकी असहमति थी। उनकी असहमति गाँधी के खिलाफत-समर्थन से भी थी क्योंकि उस दौर में जिन्ना धर्म को राजनीति से बिल्कुल अलग मानते थे। यह कहा जा सकता है कि उन्हें गाँधी की तरह भारतीय जन-मन की संवेदनात्मक पहचान नहीं थी।

मगर जिन्ना की धर्म-निरपेक्षता अक्षुण्ण रही। जितनी सार्वजनिक जीवन में, उतनी ही निजी जीवन में। अलबत्ता दोनों के बीच एक पर्दा था, जिसका दिलचस्प उदाहरण बरनवाल ने छागला की आत्मकथा के संदर्भ में निम्न घटना से दिया है: 'सन् 1926 की बात है। जिन्ना बंबई के मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्र से केंद्रीय विधायिका की

सदस्यता के लिए प्रत्याशी थे। उनके विरुद्ध दो और प्रभावशाली समृद्ध मुसलमान खड़े थे।.......जिन्ना का जीतना निर्विवाद था।...... .इसी दिन दोपहर में जिन्ना का लंच लेकर रत्ती टाउन हॉल पहुँची।.....उत्साहपूर्वक उन्होंने कहा, 'जिन्ना, जरा अंदाज लगाओ मैं तुम्हारे वास्ते लंच के लिए क्या लायी हूँ ?..... बड़ी प्यारी हेम की सैंडविचेज।' विस्मित जिन्ना लगभग चीख पड़े थे, 'माई गॉड, ये तुमने क्या किया? क्या तुम चाहती हो मैं चुनाव हार जाऊँ?.........अगर वोटरों को यह भनक मिल गयी कि मैं लंच में हेम की सेंडविचेज खाने जा रहा हूँ तो क्या तुम सोचती हो कि इस चुनाव में मेरी जीत की जरा भी गुँजाइश बचेगी?'

गाँधी की धूल-धक्कड़ भरी लोक-राजनीति से अप्रासंगिक हुए जिन्ना इंग्लैंड बसने चले गये थे। मगर वहाँ की सफलता काफी नहीं थी। बरनवाल के व्यंजनात्मक शब्दों में 'उनका महत्त्वाकांक्षी विकल मन' वहाँ से उचटने लगा था। तभी सन् 1933 में लियाकत अली खाँ अपनी सुहागरात मनाने इंग्लैंड पहुँचते हैं और जिन्ना से 'हिंदुस्तान के मुसलमानों का नेतृत्व कर उन्हें सही दिशा देने का आग्रह करते हैं।' बरनवाल कहते हैं, 'उसने जिन्ना का पहले से ही स्फीत अहं निश्चय ही और भी स्फीत हो उठा। अब उनके लिए एक बृहत्तर मंच पर बृहत्तर भूमिका के प्रयोजन से दामन बचाकर निकल पाना संभव नहीं रह गया था। उनके अंदर का अभिनेता एक बार फिर विकल हो उठा था।' लेखक के विश्लेषण में जिन्ना का 'महत्त्वाकांक्षी विकल मन' और 'अभिनेता' की एक भूमिका उठाना महत्वपूर्ण हैं, जो जिन्ना के उसी अंतर्विरोध की ओर संकेत करते हैं जिसका ऊपर जिक्र हुआ है।

सन् 1937 के चुनावों से पाकिस्तान बनने के एक दशक तक हम जिन्ना को एक शीर्षस्थ मुस्लिम नेता के जुनून में देखते हैं, जो मुस्लिम समाज की हर समस्या का हल इस्लाम में देखता है, किसी और विचारधारा से परहेज करता है और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 'डायरेक्ट ऐक्शन' का ऐलान कर देता है जिसमें हजारों जानें जाती हैं। कहा जा सकता है कि इस दौर में जिन्ना के अवचेतन की सेकुलर झील पर उनके 'विकल महत्त्वाकांक्षी मन' का लोलुप कोहरा छाया था जिसमें धुल-धक्कड़ से परहेज करनेवाले जिन्ना को आदमी का खून भी नजर नहीं आता था। पाकिस्तान मिल जाने पर जब झील पर छाया कोहरा हटा तो फिर झील का जल चमका। यह भी है कि इस सत्ता के खेल में जिन्ना अकेले नहीं थे। लेखक ने लॉर्ड माउंटबेटन को दिये गाँधी के प्रस्ताव का विवरण दिया है जिसमें गाँधी जिन्ना को अविभाजित भारत का पहला प्रधानमंत्री बनाने की पेशकश करते हैं । नेहरू और पटेल की इस पर प्रतिक्रिया है कि गाँधी की पकड़ अब यथार्थ पर नहीं रही।

अकेले जिन्ना को पाकिस्तान का श्रेय देना मुश्किल है, जैसा कि लेखक ने 'आकलन' में किया है और सर पेंडेरल मून का उद्धरण दिया है। यदि इतिहास में एक व्यक्ति इतना शक्तिशाली हो सकता तो गाँधी भरी विभाजन को रोक सकते थे। ऐतिहासिक परिस्थितियाँ कभी-कभी बड़े को बौना और बौने को बड़ा बना देती हैं। जिन्ना चाहे पाकिस्तान के लिए अपने अलावा सिर्फ अपने स्टेनों और टाइपराइटर को श्रेय देना चाहें, मगर हकीकत कहीं ज्यादा पेचीदा थी। इस हकीकत में पंजाब के जमींदारों और उत्तर प्रदेश के उच्च मध्य वर्ग के हित थे, काँग्रेस पार्टी की सत्ता-राजनीति थी और अँग्रेजों की सदा पुरानी 'बाँटो और राज करो' की साम्राज्यवादी नीति थी। जिन्ना के लिए लेखकीय भावुकता का चरम देखिए: 'साधन की पवित्रता में उनका एक हद तक गाँधी-सा ही विश्वास था।' वह 'डायरेक्ट ऐक्शन' के उद्बोधक के लिए। यह भूलकर लेखक जिन्ना की प्रशासनिक शुचिता के आग्रह के कुछ उदाहरण देता है।

बरनवाल की पुनर्दृष्टि का महत्व उनकी समग्र दृष्टि में है, जिसमें अ-भावुक जिन्ना रत्ती की मजार पर फूट-फूटकर एक बच्चे की तरह रोते हैं। जिन्ना के भीतर यही बच्चा 1940 में पाकिस्तान के लिए जिद करता है। उसे तब और कुछ दिखाई नहीं देता। वह अपनी जिद के लिए दुनिया कुर्बान कर सकता है। जब पाकिस्तान हाथ में आ जाता है, तब उसे लगता है कि यह खिलौना मिट्टी का है। जिन्ना को ऐसा ही कुछ एहसास हुआ होगा जब उन्होंने अपने अंतिम दिनों में पाकिस्तान को अपनी सबसे बड़ी भूल माना।

'सहारा समय' से साभार

आधी-दुनिया का दर्द

डॉ. सुरेन्द्र वर्मा

अनगिनत
पैरों तले कुचली
राह बेचारी

अमर बेल
गरीबी की, चूसती
जीवन रस

अस्मिता और
पहचान की प्यासी
आधी दुनिया

आस लगाई
पत्थर से उसने
कूटे पत्थर

तकलीफों की
क्या जाने गहराई
सुख उथले

दु:ख मेरा है
और सब पराया
छूटता नहीं

मन में पीड़ा
होठों पै गीत लिए
रची रंगोली

रची रंगोली
तेरे ही स्वागत में
गार्ड कजरी

संपर्क: 1, सर्कूलर रोड,
इलहाबाद, उ. प्र.

अनोखा ऐतिहासिक उपन्यास

❑ समीक्षकः विश्वमोहन तिवारी

विगत १७ जुलाई को नई दिल्ली के राजेन्द्र भवन में राजेन्द्र प्रसाद अकादमी की ओर से आयोजित समारोह में विधिवेत्ता डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी द्वारा पं० रविशंकर शुक्ल की ७५ वर्षीय सुपुत्री श्रीमती क्रांति त्रिवेदी के ऐतिहासिक उपन्यास 'अनोखा आरोही' का लोकार्पण हुआ जिस पर आलोचक प्रो० विश्वनाथ त्रिपाठी ने तो अपने विचार व्यक्त किए ही, पूर्व एयर वाइस मार्शल विश्वमोहन तिवारी ने इसकी एक समीक्षा का पाठ करते हुए इसे अनोखा ऐतिहासिक उपन्यास बताया। विचार दृष्टि के सुधि पाठकों के लिए वह समीक्षा यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। –संपादक

क्रांति त्रिवेदी का 'अनोखा आरोही' एक ऐतिहासिक उपन्यास है। कोई भी इतिहास अपने इतिहासकार की दृष्टि से प्रभावित रहता है। क्रांति त्रिवेदी की दृष्टि पश्चिम से आयातित न होकर भारतीय दृष्टि है। ऐतिहासिक उपन्यास अपने काल के जीवंत चित्रण में जितने सफल होते हैं वे उतने ही सफल माने जाते हैं; यह आवश्यक तो है किंतु महान ऐतिहासिक उपन्यास बनने के लिये पर्याप्त नहीं। उसमें आज के जीवन की विसंगतियों, समस्याओं पर प्रकाश डालने की क्षमता भी आवश्यक है। इस उपन्यास का कथानक शेरशाह के बेटे इस्लाम शाह और उसके दामाद मुबाजिक आदिलशाह के पठान तथा मुगल युद्धों पर आधारित है। बहुत दिनों बाद, शायद वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यासों के बाद, एक ऐसा ऐतिहासिक उपन्यास मेरे पढ़ने में आया है जिसका आज की अनेक भयंकर समस्याओं से सीधा संबंध है। चूंकि हमने इतिहास से सीखा नहीं तो इतिहास दुहरा रहा है। यह उपन्यास उस इतिहास-समय की पुनर्रचना प्रस्तुत करता है। वे समस्यायें हैं सांप्रदायिक सद्भाव की, सर्वधर्म समभाव की, सामाजिक कुरीतियों की, विलुप्त होते ज्ञान के संरक्षण की, भोगवाद की, कन्या शिशु हत्या की, अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षा करने की इत्यादि।

ऐतिहासिक-उपन्यास लेखन की एक बड़ी समस्या होती है उसमें तथ्यों तथा कल्पनाशीलता के सामञ्जस्य की। यदि अधिक तथ्यपरक हो गया तब वह इतिहास के निकट पहुँच जाएगा, और यदि कम तथ्यपरक हुआ तब वह ऐतिहासिक होते हुए भी सामान्य उपन्यास हो जाएगा और फिर उसे जो अतिरिक्त ऊर्जा ऐतिहासिक होने से प्राप्त होनी थी, वह कम हो जाएगी क्योंकि वह अविश्वसनीय हो जाएगा। इसे प्रभावी रूप से करने के लिये रचनाकार को पर्याप्त शोध करना अत्यावश्यक होता है। शोध केवल तारीखों, और राजाओं के और युद्धों के नामों का ही नहीं, वरन उस काल खण्ड के जीवन का, जीवन शैली का, रहन सहन आदि का आवश्यक हो जाता है। विश्वसनीयता के लिये दूसरी आवश्यकता है चरित्रों के जीवंत होने की। क्रांति त्रिवेदी ने पर्याप्त ऐतिहासिक शोध कर इस उपन्यास में तथ्यों तथा कल्पनाशीलता में पर्याप्त सामञ्जस्य रखा है। उन्होंने एक विलक्षण चरित्र खोजा है जो किशोर अवस्था में ठेले में नमक बेचता है और अपने चारित्रिक बल, बुद्धि तथा विवेक से धीरे-धीरे दिल्ली का राजा बन जाता है। रिवाड़ी (हरियाणा) में जो लोग उससे पहले 'ओ हेमू एक किलो नमक देना' बोलते थे, वे ही बाद में राजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य बोलते हैं। हेमचन्द्र का व्यक्तित्व तथा उनकी उपलब्धियाँ अनोखी हैं, अद्वितीय हैं। यह उपन्यास हेमू से हेमचन्द्र विक्रमादित्य के विकास की कथा तो है ही, साथ ही यह एक समाज द्वारा स्वतंत्रता और शांति की खोज की कथा भी है जो न केवल रोचक है वरन् रोमांचकारी भी है; और जो ऐसा अदभुत दर्पण बन जाती है जिसमें आज का समाज अपने आप को जाँच परख सकता है, और इतिहास को दुहराने से रोक सकता है।

समीक्ष्य पुस्तक : अनोखा आरोही
उपन्यासकार : श्रीमती क्रांति त्रिवेदी
समीक्षक : श्री विश्वमोहन तिवारी
प्रकाशक : सुलभ प्रकाशन, 17, अशोक मार्ग, लखनऊ - 226001
पृष्ठ : 175
मूल्य : 200 रुपए।

ऐतिहासिक तथ्यों के बीज से यह उपन्यास वह विशाल वृक्ष बना है जो हमें आज के विस्फोटों से भरे जलते हुए समय में, एक ऐसी सकारात्मक छाया प्रदान करता है जिसमें थोड़ी देर बैठकर हम शांतिमय जीवन का रास्ता खोज सकते हैं।

उपन्यास की भाषा कथा को अभिव्यक्ति और प्रवाह तो देती ही है, साथ ही वह उस काल की संस्कृति को भी प्रकाश में लाती है। इस उपन्यास में उपयुक्त स्थानों पर ग्रामीण हिंदी और ग्रामीण हास्यबोध का भी उपयोग किया गया है। सुदर्शना का विवाह हेमचन्द्र से हो रहा है-"उधर अंतःपुर में सुदर्शना को उसकी सखी सलमा छेड़ रही थी, "तेरा दुल्हा तो बड़ा गजब जवान है। खुबसूरत भी गजब का है। सुना है ऐसे मर्द को संहालना बड़ा मुश्किल होता है।"

मुस्कराती सुदर्शना ने आँखें चमका कर कहा, "मैं संभाल लूँगी, जिंदगी भर बैलों को संभाला है।" (पृष्ठ 35)

ग्रामीण मुहावरों का भी उपयोग

जगह-जगह पर है। देखिये (पृ० 130) सुदर्शना अपनी माँ द्वारा दी गई शिक्षा का वर्णन कर रही है, "(जब मैं) तनिक भी आलस दिखलाती तो (माँ) कहती, छोरी ऐसी न बन। समझ ले ई जिंदगी माँ लोगन को काम प्यारी होवे है, चाम नई।"

संवादों की सूक्ष्मता का एक और उदाहरण, (पृ० 142) जब हेमचन्द्र मुजाबिक आदिलशाह के एक विशेष घृणित शत्रु ताज खाँ को युद्ध में मारकर लौटता है, और नहा धोकर आदिलशाह से मिलने जाता है तब, "हेमचन्द्र के प्रवेश करते ही वह उठा और लड़खड़ाते पैरों से आगे बढ़कर उसने हेमचन्द्र को गले लगा लिया, बोला, "तुम हिंदुओं को गले लगाने पर लगता मानों किसी सजी हसीना को गले लगाया हो।" इन शब्दों पर हेमचन्द्र को कड़ी आपत्ति हुई, वह कुछ कहने ही जा रहा था कि उसके अगले शब्दों ने उसे शांत कर दिया, "बरखुरदार, तुम संदल से महक रहे हो। गंदगी का नामोनिशान नहीं, न पसीने की बू होती है।"

इस उपन्यास में चेतना के अनेक स्वर हैं। सुदर्शना तथा हेमचन्द्र अपने प्रेममय स्वभाव से, अपनी प्रखर बुद्धि से तथा साहसिक प्रवृत्ति से पति-पत्नी के संबंधों में बराबरी की व्यावहारिक परिभाषा चरितार्थ करते हैं। यह बराबरी कानूनी बराबरी नहीं है कि जिसमें मुकद्दमेंबाजी होती रहे, और परिवार दुखी रहे। यह बराबरी संबंधों के मूल पर जाती है, सांस्कृतिक आधार पर खड़ी होती है, जिस पर अन्य सामाजिक व्यवहार भी आधारित होते हैं। कानूनी कार्यवाही तो तब आना चाहिये जब सांस्कृतिक प्रभाव असफल हो। बिना सांस्कृतिक आधार के कानूनी कार्यवाही अधिकांशत: न्यायालयों और वकीलों के लिये ही लाभदायक होती है। उस काल में मुसलमान शासकों या उनके हाकिमों से कन्या की सुरक्षा करना अत्यंत कठिन था। अतएव कन्या-शिशु की हत्या होने लगी थी। शक्तिमती अपनी कन्या को अपनी सास द्वारा मृत्यु-दान से बचाकर प्रसव पश्चात रातोंरात घर से भागकर उसे बचाती है। सुदर्शना की सास लाजवन्ती उपरोक्त सभी चरित्रों को ऊर्जा देती है और तत्कालीन हिंदू समाज में स्त्रियों की निहित शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। वह कहती भी हैं कि नारी में शक्ति छिपी रहती है जो अवसर पाकर स्वत: ही परिचालन करना प्रारंभ कर देती है।

इस उपन्यास में जातिवाद का विश्लेषण अनोखी शैली में किया गया है। हेमचन्द्र जन्म से तथा अपने मौसा द्वारा दिये गये संस्कारों से ब्राह्मण है, अपने पितामह द्वारा दिये गये संस्कारों द्वारा वह क्षत्रिय साहस तथा रण कौशल के बल पर वह सदर-ए-फौज बन जाता है। और सब गुणों के बल पर विशेषकर 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' तथा 'चरैवेति चरैवेति' आदि मंत्रों के बल पर चरम स्थिति यह होती है कि वह सूरी साम्राज्य का राजा बन जाता है।

यह उपन्यास अपनी समग्रता में हमें रोचक, रोमांचक तथा शोधपूर्ण शैली में मध्य सोलहवीं शती के जीवन की जोखिमपूर्ण घटनाओं के द्वारा इक्कीसवीं सदी को देखने के लिये एक संतुलित सामञ्जस्यपूर्ण तथा प्रेममय दृष्टि प्रदान करता है। इस इक्कीसवीं सदी में एक तरफ बाजार का शाही रूप है, एक धर्म के विशेष वर्ग द्वारा उसका आतंकवादी रूप है; इस सदी में भोगवाद के कारण परिवारों का विघटन है। नारी स्वातंत्र्य के नाम पर कुछ सुधार भी हुए हैं तो कुछ मुबाजिक आदिलशाह की रंगरेलियों-सा साम्राज्य भी है। इस उपन्यास का नायक उन शक्तियों, गुणों और दृष्टियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनसे इक्कीसवीं सदी लाभ उठा सकती है।

संपर्क : पूर्व एयर वाइस मार्शल
ई-१४३, सेक्टर-२१, नौएडा, उ.प्र.

With Best Comliments From:

DREAMLAND

MEN'S WEAR

Duke®

Contact us :
Shop Number 9,
Community Hall Market Complex
Kankarbagh, Patna-800020

सरदार पटेल जयंति की शुभकामनाओं के साथ :-

मे. नालन्दा मेडिकल्स

मखनियाँ कुआँ रोड, पटना-800004

एवं

मे. न्यू नालन्दा मेडिकल्स

खजाँची रोड, पटना - 80004

कवि

कविता में अशोक कुमार सिन्हा की पहचान

❑ समीक्षक : श्रीराम तिवारी

समकालीन कविता का दौर 'साझा कविता का नहीं है। हर कवि एक ही कविता नहीं लिख रहा है। समय का सच जिस तरह रचना से आगे है- केंद्र में आ गया है- पुनः विकल्प की तलाश करता आम आदमी का सामूहिक संघर्ष - एक समतामूलक लोकतंत्र की आवाज लेकर। अशोक कुमार सिन्हा की ताजा तरीन कविताएँ इसी दायरे में हमारा ध्यान खींचती हैं।

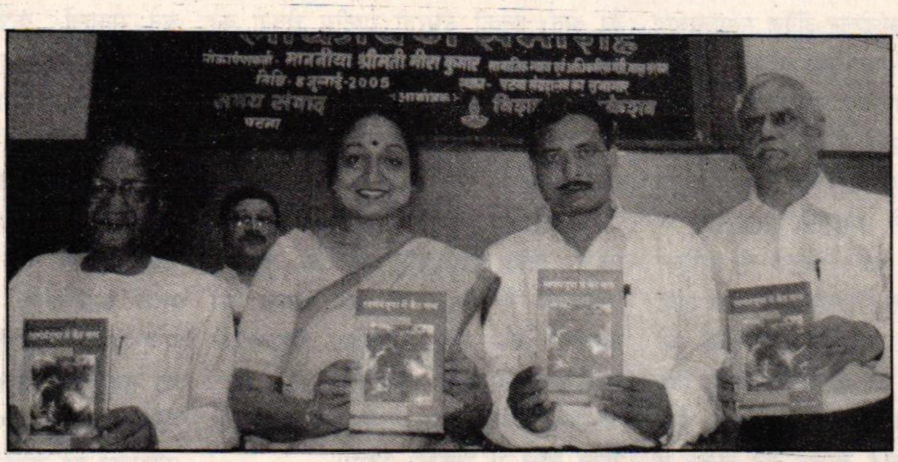

आज की युवा कविता का मुहावरा बाजार का जबाब है, पर उसमें 'एक मानवीय स्मृति भंडार' की कमी होती जा रही है। 'झटका कविता' से अलग अशोक सिन्हा की कविताएँ प्रेम, सौंदर्य और असलियत की आंतरिक भूख का अपना संसार रचती हैं। ये कविताएँ झूठ नहीं बोलतीं। इनका अवतार 'जातीय संवेदना' के भीतर से हुआ है। ऐसी कविता को रूपवाद या नव्य रूपवाद का खतरा नहीं है।

अशोक कुमार सिन्हा की कविता का मर्म मानवीय, वैश्विक और स्थानीय तीनों है। हम इनकी कविताओं को 'आत्म-बोध की निष्कपट' कविताएँ कहेंगे। ये बखूबी कबीर की तरह मनुष्य होने की अभिधेयात्मक और अभिधात्मक छवियों का साक्षात्कार कराती हैं। इन कविताओं से मनुष्य होने की प्रक्रिया आसान हुई है। 'स्वर्णमंजूषा में कैद सत्य', 'बसेरा', 'ठसक' जैसी 'सहज कविता' के लिए अशोक कुमार सिन्हा आत्म-भय, ग्लानि और स्वतः प्रवाहित मानवीय प्रकृति के बोध-सोतों को दैनिक जीवन के उल्लास, गम और प्रकृति-चित्रों में देखते हैं और इनमें एक आवयिक एकता कायम करते हैं। इसीलिए इनकी कविताएँ किसी

समीक्ष्य काव्य-संग्रहः स्वर्णमंजूषा में कैद सत्य,
कविः अशोक कुमार सिन्हा,
प्रकाशकः विशाल पब्लिकेशन, पटना,
नई दिल्ली, मूल्य 100 रु०,
प्रथम संस्करण-2005

मुहावरे की संरचना नहीं हैं, सरलतम से जटिलतम सभी तरह के भाव-संगठन आम चेतना का हिस्सा बन जाते हैं- अशोक सिन्हा के यहाँ! कविता से मनुष्य की दूरी को अशोक अपनी आत्माभिव्यक्तियों से भरते हैं। मनस्वी होना कविता में अशोक सिन्हा की खास पहचान है। सत्य और शिव की प्रतिष्ठा इनकी दुर्लभ संवेदनशीलता है। आज के जटिल होते जा रहे समाज में अर्थ खोते शब्दों को राजनीतिक और उपभोक्तावादी होने से बचाने की यही ईमानदार कोशिश अशोक सिन्हा की विकलता है। सत्य से सीधे टकराने का गभितार्थ अशोक सिन्हा की इन कविताओं को पढ़कर आसानी से समझा जा सकता है। ज्ञान और परिचित यथार्थ के सरलीकरण की यही खाटी समझ आज की कविता को अमूर्त होने से बचाती है। इसके लिए अशोक सिन्हा धन्यवाद के पात्र हैं। अशोक का अनुभव-संसार यहीं पर 'जातीय अनुभव' में बदल जाता है। यही 'स्वर्णमंजूषा में कैद सत्य' नामकरण की सार्थकता है।

मत, मुद्रा, मशीन, अंडरवर्ल्ड, अपरवर्ल्ड, औरत और दौलत की दुनिया में मनुष्यों को मानवीय बनाए रखने के लिए अशोक सिन्हा की कविताएँ आस्था और जायज संवेदनाओं की गिरफ्त में पाठक को रखने के लिए पर्याप्त हैं। यही आत्मानुशासन आज की कविता की शक्ति है। अशोक सिन्हा अपने इस पहले संग्रह से ही भाषा की चमक में इसका आस्वाद पैदा करते हैं।

उत्तर पूंजीवाद आज जिस तरह चेतना और समाज निर्माण की भाषा को मार रहा है-अशोक सिन्हा का गैर-रोमांटिक तीखापन अपने तरह की एक काव्य-भाषा का स्वायत्त सौंदर्य बरकरार रखता है। अशोक संवेगों के ममत्व को आभा मंडित करने से बचें, यह जरूरी है।

संपर्क : १९२ एम. आई. जी.,
हनुमाननगर, पटना-२०

बंगभंग विरोधी आंदोलन का राष्ट्रीय स्वरूप

❑डॉ0 शत्रुघ्न प्रसाद

बंगभंग विरोधी आंदोलन की शताब्दी (सात अगस्त, 2005) के अवसर पर इसके राष्ट्रीय स्वरूप पर विचार करना आवश्यक है। यह आंदोलन अँग्रेज साम्राज्यवाद के विरूद्ध बीसवीं सदी का प्रथम शांतिपूर्ण संघर्ष था। श्री सुभाषचन्द्र सरकार ने 'धर्मयुग' के 14 अगस्त, 1988 के अंक में लिखा है -सन् 1905-1919 का दौर ऐसा दौर था जिसमें अँग्रेजों ने भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता का जहर घोलने के सक्रिय प्रयास किये। बंगाल विभाजन के पीछे लार्ड कर्जन का एक उद्देश्य बंगालियों के राजनीतिक प्रभाव को कम करना तथा हिंदू और मुस्लिम बंगालियों के बीच दरार पैदा करना भी था। लार्ड कर्जन की नजर में पूर्वी बंगाल की रचना का अर्थ था, ''पूर्वी बंगाल के मुसलमानों में वैसी ही एकता ले आना जैसी मुस्लिम बाइसरायों और राजाओं के समय थी। शुरू में मुस्लिम नेता इस झाँसे में नहीं फंसे और सक्रिय रूप से विभाजन विरोधी आंदोलन से जुड़े रहे। लेकिन लार्ड कर्जन ने ढाका के नवाब सलीमुल्ल को बंगाल विभाजन का समर्थन और बहिष्कार का विरोध करने के लिए राजी कर ही लिया, और नवाब सलीमुल्ला के सक्रिय प्रयास से दिसम्बर 1906 में मुस्लिम लीग का जन्म हुआ जो चार दशक के बाद देश विभाजन का कारण बनी।'

प्रसिद्ध पत्रकार श्री सरकार की इन पंक्तियों से बीसवीं सदी के प्रथम राष्ट्रीय आंदोलन के विरोध में अँग्रेजी सम्राज्यवाद का षडयंत्र सामने आ जाता है। राष्ट्रीयता के विरोध में सांप्रदायिकता को उभारने का षड्यंत्र स्पष्ट हो जाता है।

भारत के वाइसराय लार्ड कर्जन ने महसूस कर लिया था कि बंगाल में उन्नीसवीं सदी के सांस्कृतिक नवजागरण के कारण राष्ट्रीय चेतना उभर चुकी है। तेजस्वी और मेधावी बंगली अँग्रेजी राज्य को चुनौती देने की स्थिति में आ चुके हैं। और भारत की राजधानी कलकत्ता में है। यह भय का विषय है। उधर महाराष्ट्र में शिवाजी की प्रेरणा से राष्ट्रीय भावना प्रखर है। अत: इनकी उभरती राष्ट्रीय चेतना को आरंभ में ही दबा देना चाहिए। इसलिए लार्ड कर्जन ने बंगाल को मजहब के आधार पर बाँट कर इसे कमजोर कर देने की योजना बनायी। सन 1903 में चर्चा होने पर विरोध हो गया। इसलिए वह गुप्त रूप से षड्यंत्र करता रहा। परंतु लंदन के अखबार 'स्टेन्डर्ड' ने 1905 में इस योजना को प्रकाशित कर दिया। इसलिए बंगाल के प्रबुद्धजनों और छात्रों ने सात अगस्त, 1905 को बंगाल के विरोध के लिए कलकत्ते के टाउन हॉल में संकल्प लिया।

बंग भंग विरोधी आंदोलन राष्ट्रीय

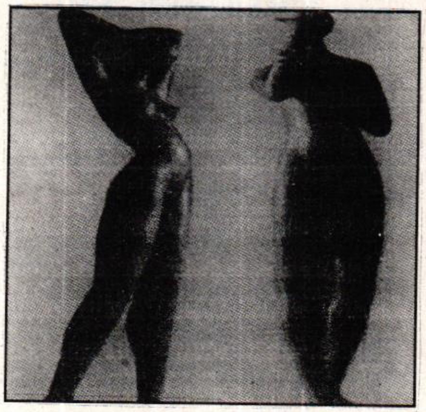

आंदोलन के रूप में उभर आया। और वह समस्त भारत को अनुप्राणित करने लगा। बंगाल के विपिन चन्द्रपाल के साथ महाराष्ट्र के बालगंगाधर तिलक और पंजाब के लाला लाजपत राय लाल-बाल-पाल की त्रिमूर्ति-संपूर्ण भारत के स्वाधीनता संघर्ष के जागृत ने तृवृन्द के रूप में अवतरित हुए। सन् 1905 का बंगाल विरोधी आंदोलन एक ओर राष्ट्रीय चेतना के ज्वार एवं स्वाधीनता संघर्ष का शुभारंभ बना तो दूसरी ओर अँग्रेजी साम्राज्यवाद के षड्यंत्र से विभाजनकारी सांप्रदायिक राजनिति-मुस्लिमलीग की भी शुरूआत हो गयी।

सात अगस्त 1905 को कलकत्ते की जनसभा ने वंगमंग के विरोध के संकल्प के साथ इंग्लैण्ड के कारखानों में बने सामानों- कपड़े, जूते, साबुन, नमक आदि का पूर्ण बहिष्कार कर स्वदेश में बनी वस्तुओं के व्यवहार का भी महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किया। विदेशी उत्पाद (वस्तुओं) के बेचने और खरीदनेवालों के सामाजिक बहिष्कार की भी घोषणा हो गयी। तात्पर्य यक कि बंगभंग विरोध के साथ अनिवार्यत स्वदेशी आन्दोलन जूड़ गया इसी से अँग्रेजी साम्राज्यवाद को झुकाया जा सकता था। कहा जा सकता है कि यह गाँधीजी के आन्दोलन-व्यापक विराट आंदोलन का आधार बना। अत: शतवार्षिकी के अवसर पर बंगभंग विरोध के संपूर्ण स्वरूप पर विचार होना चाहिए। कारण है कि बंगाल के प्रमुख कविसाहित्यकार कविवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर, नाटककार विजेन्द्रनाथ राय तथा अन्य इस आंदोलन के पूर्ण समर्थक बन कर सक्रिय हुए। बंगाल की पत्र-पत्रिका, इंडियन मिरर-सबने आंदोलन के पक्ष में लिखना आरंभ कर दिया। मुस्लिम एडवोकेट अब्दूल रसल, लियाकत हूसैन, अब्दुल हलीन आदि इस आंदोलन में हृदय से सक्रिय थे।

16 अक्टूबर, 1905 को सरकारी घोषणा के अनुसार बंगाल का विभाजन होना था। पूर्वी बंगाल के मुस्लिम बहुत इलाके को असम से जोड़ कर नया प्रांत बनना था। ढाका को नये प्रांत की राजधानी बनाने का एलान हो गया था। यह ढाका के नवाब सलीमुल्ला की शान की बात थी। परंतु बंगाल की जनता ने दशहरा के समय 28 सितम्बर, 1905 को काली मंदिर के प्रांगण में एकत्र होकर हजारों लोगों ने बंगाल की अखण्डता और स्वदेशी के व्यवहार के लिए प्रतिज्ञा की। चारों तरफ छात्रों के जुलूस ने 'वंदे मातरम्' का जयघोष आरंभ कर दिया। 'आंनदमठ' उपन्यास तक सीमित

'वंदे मातरम्' अब स्वाधीनता तथा अखण्डता का जनघोष बन गया। लियाकत हुसैन स्वयं वंदेमातरम् के घोष के साथ जुलुस कर नेतृत्व करते थे। इतिहासविद् तथा पत्रकार श्री देवेन्द्र स्वरूप ने उस युग के एक गीत की बानगी दी है-

गाओ भारतेर जय, जय भारतेर जय।
की भय, की भय, गाओ भारतेर जय।
छिन्न-भिन्न हीनबल, एक्यते पाइये बल।
मायेर मुख उज्ज्वल करिते की भय॥

बंगाल की अखण्डता का आन्दोलन भारत की राष्ट्रीयता का आंदोलन बन गया और इसकी सफलता के लिए विदेशी वस्त्र, विदेशी जूते, विदेशी सिगरेट, विदेशी कागज-कॉपी-सबकी जलने लगी। स्वदेशी का प्रयोग बढ़ा ।

16 अक्टूबर, 1905 को बंगाल का विभाजन हो गया। इसलिए बंगाल की जनता ने शोकदिवस मनाया। घरों में चूल्हे नहीं जले। लोगों ने नंगे पैर गंगा तट जाकर स्नान किये। भाईचारे के लिए सबको राखी बाँधी। सारे भेदभाव दूर हो गये। हिंदु और मुसलमान एक साथ खड़े हुए। गाँव-नगर के छात्रों ने जुलूसों के जन जीवन को आंदोलित कर दिया। फलत: 1904 और 1905 के स्वदेशी के कारण विदेशी वस्तुओं की बिक्री दस गुने अंतर से घट गयी। स्वदेशी उत्पादों की बिक्री बढ़ गयी। उद्योगपतियों और व्यापारियों का देश इंग्लैण्ड घबरा उठा इसलिए सरकार ने स्कूलों में वंदेमातरम् के घोष तथा छात्रों के जुलूसों पर प्रतिबंध लगा दिया। जुलूस निकालने और वंदेमातरम् के घोष पर अर्थदंड शुरू हुआ। छात्रों को स्कूलों से निष्कासन् भी होने लगा। इसलिए विपिन चन्द्रपाल और एडवोकेट अब्दुल रसूल ने शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा के अभियान का प्रस्ताव रखा। कविवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने 26 अक्टूबर की विशाल सभा में सरकारी प्रतिबंध के खिलाफ आवाज उठी और फिर नवम्बर में बंगाल की जागृत राष्ट्रीय चेतना ने सरकारी स्कूलों के बहिष्कार का निर्णय ले लिया। 11 सार्च, 1905 को राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् का गठन हुआ। 1जून 1906 को बंगाल नेशनल कॉलेज की स्थापना हुई जिसमें योगदान देने के लिए अरविन्द घोष बड़ौदा से प्रिंसीपल बन राष्ट्रीय शिक्षा का सूत्रपात किया। अन्य स्थानों पर भी राष्ट्रीय विद्यालय खुलने लगे। साथ ही इस व्यापक आंदोलन के शंख स्वर को संघोषित करने हेतु सर्वमान्य नेता विपिन चन्द्रपाल ने 'वंदे मातरम्' नामक पत्रिका शुभारंभ किया। वे नाम के लिए संपादक बन गये। काम के लिए अरविन्द घोष ने ही लेखनी को सँभाला उनके शब्दों से शासन जागृत हो उठा अरविन्द घोष और विवेकानन्द के अनुज भूपेन्द्र नाथ दत्त 'जुगांतर' नामक बंगला साप्ताहिक शुरू कर दिया। परिणामत: सारा भारत उठ कर खड़ा हो गया। सारा भारत बंगाल के साथ हो गया।

अँग्रेजों ने इस राष्ट्रीय आंदोलन की प्रखरता तथा व्यापकता से घबरा कर दमनचक्र को तेज कर दिया। दूसरी ओर आंदोलन को तोड़ने के लिए अँग्रेजी साम्राज्यवाद ने ढाका के नवाब सलीमुल्ला को आसान शर्तों पर कर्ज देकर तथा उनकी नवाबी शान के पुनरोदय की उम्मीद जगा दी। मुस्लिम बहुल पूर्वी बंगाल के नाम पर नवाब को बंगाल के विभाजन का समर्थक बना लिया। साथ ही बंगभंग विरोधी आंदोलन को हिंदु आंदोलन कह कर नवाब को इसके लिए प्रेरित भी कर दिया सर्वोपरि अँग्रेजी साम्राज्यवाद ने नवाब के नेतृत्व में मुस्लिम लोग की स्थापना करा दी। परिणाम स्वरूप सन् 1906 के पूर्वार्द्ध में पूर्वी बंगाल के कई जिलों में दंगे हो गये। अल्पसंख्यक हिंदू हताहत हुए। यह अँग्रेजी साम्राज्यवाद की देन है, जिसे आज समझना आवश्यक है। अँग्रेजी साम्राज्यवाद मुस्लिम लीग की दुरभिसंधि भी सन् 1906 से 1946 तक चलती रही। आज भी किसी रूप में चल रही है। स्वाधीनता आंदोलन का यह प्रतिपक्ष कितना भयानक रहा-विवेचन अपेक्षित है।

अँग्रेजी शासन ने कठोर दमन आरंभ कर दिया। सर्वश्री विपिन चन्द्र पाल, लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत राय-तीनों को अपने-अपने प्रांत के साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन और आलेख-भाषण के अपराध में देश से निर्वासित कर दिया। बंगाल के अन्य नेता गण कैद कर लिये गये। अधिकांश आंदोलन समर्थक पत्रिकाएँ बंद कर दी गयी। अरविन्द शासनविरोधी षड्यन्त्र से बंदी बनाये गये इसी दमन चक्र के बाद क्रांतिधारी आंदोलन का सूत्रपात हो गया।

नये वाइसराय-लार्ड मिंटो ने भारत में संसदीय प्रणाली के द्वारा जनता को अधिकार देने के नाम पर सन् 1909 में इन्डिया एक्ट में मुस्लिम समुदाय को पृथक् मताधिकार देकर मुस्लिम पृथक्तावाद को जन्म दे दिया। भारत के विभाजन का बीज बो दिया। काँग्रेस के अध्यक्ष के रूप में मदनमोहन मालवीय ने इस पृथक् मताधिकार का विरोध किया। पर धीरे-धीरे मुस्लिम समाज सरकारी मेहरबानी से संतुष्ट होने लगा।

सन् 1911 में नये वारसराय लार्ड हार्डिंग आ गये। अँग्रेजी शासन दमनचक्र और मुस्लिम लीग द्वारा मजहबी सियासत की शुरूआत करने के बाद भी बंगाल की क्रांति चेतना तथा भारत के राष्ट्रीय ज्वार को देखकर बंगभंग को रद्द करने को विवश हुआ। स्वदेशी आंदोलन ने इंग्लैण्ड को आर्थिक नुक्सान जो पहुँचा दिया था। राजधानी भी दिल्ली पहुँच गयी। सब ने समझा कि जनांदोलन की विजय हुई।

बंगाल अखण्ड रहा। पर इसी अँग्रेजी साम्राज्यवाद तथा मुस्लिम लीग की दुराभिसंधि से सन् 1946 से 1947 के मध्य भारत के ही बँट जाने की स्थिति बन गयी। अंतत: व्यापक राष्ट्रीय चेतना, गाँधी जी का सत्याग्रह संग्राम तथा बलिदान के बाद भी देश 15, अगस्त को बँट गया। पूर्वी बंगाल उसी रूप में भारत से अलग हो गया। आज यह विभाजन सदा के लिए संकट बन गया है।

संपर्क : त्रिपाठी भवन, राजेन्द्र नगर, पथ संख्या १३ए, पटना-१६

जैन संस्कृति और इतिहास बोध

❑डॉ० ध्रुव कुमार

पटना दूरदर्शन के समाचार वाचक एवं संस्कृति कर्मी डॉ० ध्रुव कुमार के सम्मान में पिछले दिनों पटना के सिन्हा लाइब्रेरी के सभागार में आयोजित एक संगोष्ठी में डॉ० कुमार ने 'जैन संस्कृति और इतिहास-बोध' विषय पर अपना एक शोध-परक आलेख प्रस्तुत किया। 'विचार दृष्टि' के पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं यहाँ उस आलेख के अंश । -संपादक

जैन धर्म ने भारतीय समाज को सत्य अहिंसा, करुणा और परोपकार के रास्ते पर लाकर उसके परिष्कार का अनुपम उदाहरण पेश किया है। जैन संस्कृति के गौरवशली इतिहास में मानव-विकास की सभ्यता का शिखर आख्यान दर्ज है, जिसके अनुसरण मात्र से ही मनुष्य को विध्वंस से मुक्ति का मार्ग मिल सकता है। अहिंसा एवं निवृति प्रधान परंपरा द्वारा पल्लवित-पोषित संस्कृति ही जैन संस्कृति है।

इस परंपरा के मूल श्रोत प्रागऐतिहासिक पाषाण एवं धातु पाषाण-युगीन आदिम मानव सभ्यताओं की जीववाद (एनिलिज्म) प्रभृति मान्यताओं में खोजे गये हैं। जिस धातु-लौह युगीन प्रागैतिहासिक नागरिक सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं, उससे यह संभावित निष्कर्ष निकाला गया है कि उस काल और क्षेत्र में वृषभ लांछन दिगंबर योगिराज ऋषभ की पूजा-उपासना प्रचलित थी। उक्त सिंधु सभ्यता को प्राग्वैदिक एवं अनार्य ही नहीं, अपितु प्रागार्थ भी मान्य किया जाता है और इसी कारण सुविधा के लिए उसे बहुधा द्राविड़ीय संस्कृति की संज्ञा दी जाती है।

आदि पुराणकार आचार्य जिनसे स्वामी (ज्ञात तिथि 759.837 ई०) के अनुसार-'इति इह आसीत्'-यहाँ ऐसा घटित हुआ-इस प्रकार की घटनावली एवं कथानकों का निरूपण करनेवाला साहित्य इतिहास-इतिवृत या ऐतिह्य कहलाता है। परंपरागत होने से वह आमनाथ, प्रमाण पुरुषों द्वारा कहा गया या निबद्ध हुआ होने से आर्ष तत्वार्थ का निरूपक होने से सुक्त और धर्म का प्रतिपादक एवं पोषक होने के कारण धर्मशास्त्र कहलाता है। इस प्रकार इस परिभाषा में इतिहास का तत्त्व, प्रकृति तथा उसके राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सभी अंगों का समावेश हो जाता है। इतिहास विशेषकर प्राचीन भारतीय इतिहास का आशय भारतीय संस्कृति का यथासंभव सर्वांग इतिहास है, जिसके अंतर्गत निवक्षित युग में देश में प्रचलित विभिन्न धर्मों, दर्शनों, समुदायों तथा तत्तद संस्कृतियों, साहित्य-कला, आचार-विचार, लोक जीवन आदि के विकास का इतिहास संपादिका होता है।

जैन संस्कृति भारतवर्ष की सुदूर अतीत

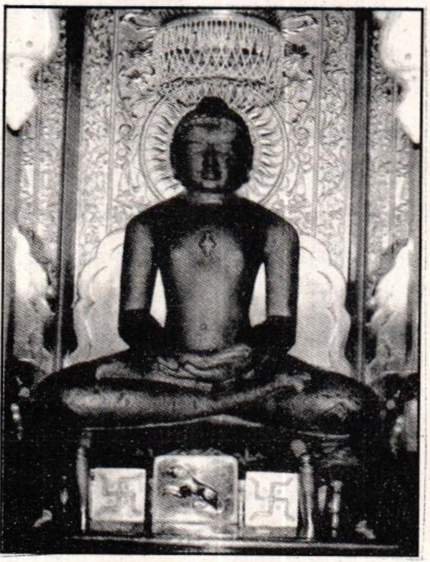

से चली आई पूर्णतया देशज एवं पर्याप्त महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धारा है। उसके सम्यक ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति के इतिहास का ज्ञान अधूरा-अपूर्ण है। बीसवें तीर्थंकर मुनि सुवृतनाथ के तीर्थ में अयोध्यापति रामचन्द्र हुए जिन्होंने श्रपण-ब्राह्मण उभय संस्कृतियों के समन्वय का भागीरथ प्रयत्न किया, यही कारण है कि वे दोनों परंपराओं में परमात्मरूप में उपस्थित हुए। इक्कीसवें तीर्थंकर नमि विदेह के जनकों के पूर्वज मिथिला नरेश थे जो उस अध्यात्मिक परंपरा के सम्भवतया आद्य प्रस्तोता थे, जिसने जनकों के प्रश्रय में औपनिषदिक आत्म विद्या के रूप में विकास किया। बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ नारायण वृषण के ताऊ जात भाई थे। दोनों ही जैन परंपरा के श्लाका पुरुष हैं। दोनों ही भारतयुद्ध के समसामयिक ऐतिहासिक नर पुंगव है।

तेइसवें तीर्थंकर पार्श्व (977-877 ई० पूर्व) काशी के उरंगवशी क्षत्रिय राजकुमार थे और श्रपण धर्म पुनरूत्थान आंदोलन के सर्व महान नेता थे। अंतिम तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर का जीवन काल 599-527 ई० पूर्व है। श्रपण पुनरूत्थान आंदोलन पूर्णतया निष्पन्न हुआ, इसका अधिकांश श्रेय महावीर को है। संघ का पुनर्गठन करके जैनधर्म को जो रूप उन्होंने प्रदान किया वही गत अढाई सहस्त्र वर्षों के जैन संस्कृति के विकास का मूलाधार है।

वे वेद, यज्ञ और कर्मकांड का उपदेश देते थे। नास्तिक लोग इस यज्ञ और क्रिया कांड के विषय में केवल शंकाशील ही नहीं थे, बल्कि इस विधि विधान में कितनी विचित्रता भरी है यह भी बतलाते थे। उपनिषद् वेद के अंशरूप माने जाते हैं, परंतु इन्हीं उपनिषदों में अनेक स्थलों पर वैदिक कर्मकांड के दोष बतलाये गये हैं। मुडकोपनिषद् के 1 : 2 : 7 में कहा गया है ''यज्ञ और उसके अठारह अंग तथा कर्म सब अदृढ़ और विनाशशील हैं। जो मूढ़ इन्हें श्रेय मानते हैं वे पुनः पुनः जरा मृत्यु के चक्कर में पड़ते हैं ।

नास्तिक चार्बाक के समान जैन दर्शन में भी वैदिक कर्मकांड की निरर्थकता बतलाई गयी है। जैन दर्शन ने वेद शासन का खुल्लम खुल्ला विरोध किया और अन्य नास्तिकों की भांति यज्ञादि क्रिया का मुक्त कंठ से प्रतिवाद किया। जैन दर्शन ने इन्द्रिय सुख विलास का अवज्ञापूर्वक परिहार किया है।

बौद्ध दर्शन के समान जैन दर्शन भी स्वीकार करता है कि जीव, कसे बंधन के कारण ही संसार में सुख-दुख भोगता है। बौद्धमत के समान ही जैन दर्शन वेद शासन को अमान्य बतलाता है और चार्वाकों के इन्द्रिय भोग विलास को धिक्कारता है। बौद्ध और जैन एक स्वर से अहिंसा और वैराग्य को ही ग्राह्य बतलाते हैं। विशेषत: अहिंसा और वैराग्य पर जैन मत तो खूब जोर देता है। इस प्रकार वाह्य दृष्टि से समान प्रतीत होते हुए भी जैन और बौद्ध दर्शन में बहुत भेद है।

सभी प्रकार के आत्मिक-मानसिक विकारों पर पूर्ण विजय प्राप्त करके इसी जीवन में परम प्राप्रत्य को प्राप्त करनेवाले परमात्मा, जिन या जितेन्द्र कहलाते हैं। दुखपूर्ण संसार सागर को पार करने हेतु कल्याणप्रद धर्म-तीर्थ का प्रवर्तन करने के कारण तीर्थंकर, समस्त अंतर एवं वाह्य परिग्रह से मुक्त होने के कारण निर्ग्रन्थ और स्व पुरुषार्थ द्वारा श्रमपूर्वक समत्व की साधन एवं आत्मशोधन करने के कारण श्रमण कहलाते हैं। उन्हीं ऋिषि आदि-महावीर पर्यन्त चौबीस निर्ग्रंथ श्रपण-जिन तीर्थंकरों द्वारा स्वयं जानी गई, अनुभव की गयी, आचरण की गई और बिना किसी भेदभाव के सर्व सत्वानां हिताय, सर्वसत्वानां सुखाय, उपदेशित एवं प्रचारित धर्म व्यवस्था का नाम ही जैन धर्म है। इस अहिंसा एवं निवृति प्रधान परंपरा द्वारा पल्लवित-पोषित संस्कृति ही जैन संस्कृति है।

पाषाणकालीन प्रकृत्याश्रित असमय युग (भोगभूमि) का अंत करके ज्ञान-विज्ञान संयुक्त मानवी सभ्यता का जनक इन आदि तीर्थंकर ऋषभदेव को ही माना जाता है। उनका ज्येष्ठ पुत्र भरत ही इस देश का सर्वप्रथम चक्रवर्ती सम्राट था और इसी के नाम पर यह देश भारत या भारतवर्ष कहलाया। यह जैन पौराणिक अनुश्रति वैदिक साहित्य एवं ब्राह्मणीय पुराणों से समर्थित है।

जैन तत्वज्ञान यथार्थवादी है। यह विश्व के समस्त इन्द्रियगोचर अथवा अगोचर पदार्थों की सत्ता को स्वीकार करता है और उनका विशद एवं वैज्ञानिक विश्लेषण तथा निरूपण करता है। जैन धर्म भाग्य देव अथवा ईश्वर के आसरे हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने को मूर्खता घोषित करता है, पुरुषार्थ एवं आत्मनिर्भरता के महत्व को प्रदर्शित करता है तथा स्फूतिदायक, आत्मविश्वास, इच्छाशक्ति एवं मनोबल को पुष्ट करता है।

इन्द्रिय एवं प्राणी संयम पर आधारित अहिंसा-प्रधान जैनाचार व्यक्ति और समाज दोनों के ही सर्वाधिक कल्याण का सर्वोत्तम मार्ग है। यह एक सुविकसित मानव संस्कृति का प्रतीक है। व्यक्ति के लिए यह विवेकपूर्ण दृष्टिकोण, अहिंसात्मक आचार-विचार, आत्मविश्वास, विचार स्वातंन्त्रय, शरीर साधना एवं आत्म संयम पर बल देता है और उसे धर्माचरण में निरंतर यथाशक्ति उद्योगी बने रहने की प्रेरणा देता है।

यह धर्म व्यक्ति विशेष का न होकर प्राणी मात्र का समानभाव से कल्याणकारी है। आत्मा सत्य है, उसी में सौंदर्य है और वह सौंदर्य ही विश्व का परिचायक है। सत्य शिव सुंदर रूप, आत्मतत्व की उपलब्धि तथा अनुभूति में ही व्यक्ति और समिष्ट का कल्याण निहित है। जो महान आत्माएँ इस प्रयास में सफल होकर परमेष्ठी पद को प्राप्त हो गयी, वह आदर्श बन गयी, उस आदर्श अवस्था को स्वयं प्राप्त करने के लिए ही उन आदर्श पुरुषों की पूजा, उपासना, गुणानुवाद ध्यान आदि की व्यवस्था जैन क्रियाकांड एवं धार्मिक अनुष्ठानों में की गयी है। आत्मशोधन के लिए स्वाध्याय, सामयिक, दान, व्रत, तप (उपवास) का यह नियम रूप से करने का विधान है। जैन संस्कृति का साध्य मोक्ष होने के कारण उसकी वाह्य प्रवृत्तियाँ भी निवृतिमूलक ही है। यही कारण है कि उसके साहित्य एवं कला में भी मुख्यतया शांतरस ही प्रभावित हुआ है।

जैन दर्शन की सर्वोपरि विशेषता उसका स्यातवाद सिद्धांत है और यह सिद्धांत ज्ञान शास्त्रीय सिद्धांत है जिसके अनुसार व्यक्ति के निर्णय या परामर्श आंशिक रूप से सत्य होते हैं। इसका कारण यह है कि ज्ञान प्राप्ति के साधन साधारण व्यक्ति के पास अत्यंत सीमित हैं। प्रत्येक वस्तु के सभी गुणों को जानना सांसारिक जीवों के लिए संभव नहीं है केवल मुक्त जीव (Liberated soul) ही किसी वस्तु के सभी गुणों को जान सकता है। यही कारण है कि साधारण व्यक्ति के निर्णय आंशिक रूप से ही सत्य होते हैं, न कि पूर्ण रूप से और आंशिक ज्ञान ही सारे विवादों की जड़ है।

स्यातवाद सापेक्षवाद कहा जाता है। इसके अनुसार ज्ञान सदैव स्थान, काल, परिस्थिति के आधार पर ही सत्य होता है। स्यातवाद वस्तुवादी सापेक्षवाद है क्योंकि यह वस्तुओं और गुणों की वास्तविकता स्वीकार करता है और इनके ज्ञान के समय, स्थान और परिस्थिति पर निर्भर करता है।

जैन कर्म सिद्धांत नियतिवाद का निषेध करता है- भाग्य, देव अथवा ईश्वर के आसरे हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने को मूर्खता घोषित करता है, पुरुषार्थ एवं आत्मनिर्भरता के महत्व को प्रदर्शित करता है तथा स्फूर्तिदायक, आत्मविश्वास, इच्छा शक्ति एवं मनोबल को पुष्ट करता है।

जैन दृष्टि से शिक्षा का उद्देश्य मानव व्यक्तित्व का समग्र विकास और विश्व का कल्याण है। व्यक्तित्व के चरम विकास की स्थिति को ही जैन दर्शन में मोक्ष कहा गया है। व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए तीन कारण बताये गये हैं-

(1) सम्यक दर्शन

(2) सम्यक ज्ञान

(3) सम्यक चरित्र

ये तीनों मिल कर ही व्यक्तित्व विकास के साधक हैं। पृथक-पृथक नहीं इसलिए इन तीनों को मार्ग कहा गया है।

इस समझाने के लिए यह उदाहरण काफी है।

चारों ओर आग लगी है बीच में अंधा और एक विकलांग हो, दोनों ही जान से हाथ धो बैठेंगे- यदि दोनों एक दूसरे की मदद करे तो दोनों बाहर निकल सकते हैं। यहाँ अंधा चरित्र का प्रतीक है और पंगु ज्ञान का अर्थात ज्ञान और चरित्र अलग-अलग रहकर व्यक्ति का समग्र विकास नहीं कर सकते। जैन दर्शन का अर्थ है मूल तत्वों का सही बोध।

संपर्क : परमेश्वरी दयाल लेन,
महेन्द्रू, पटना-६

विश्व जनसंख्या दिवस पर

अधिक आबादी पर अँकुश का औचित्य

❑ सिद्धेश्वर

किसी भी देश के विकास में उसकी आबादी का अहम योगदान होता है, लेकिन जब यही आबादी विकराल रूप धारण कर लेती है तो यह विकास में बाधक बन जाती है। भारत आज एक ऐसा ही देश है जहाँ जनसंख्या विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार 1 मार्च 2001 को इसकी कुल जनसंख्या 1 अरब 2 करोड़ 70 लाख 15 हजार 247 बताई गई है। सन् 1981-91 की अवधि में भारत की आबादी में जहाँ 16 करोड़ 30 लाख यानी 23.86 प्रतिशत का इजाफा हुआ था, वहीं 1991-2001 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर 21.34 प्रतिशत रही। यह तथ्य भले ही संतोषजनक लगे कि वृद्धि दर की कमी का रूझान पैदा हुआ है पर जनगणना के अनुसार प्रतिवर्ष भारत की आबादी में 2 करोड़ 17 लाख से अधिक की वृद्धि चिंताजनक है, क्योंकि यदि आबादी वृद्धि की यही दर रही तो भारत अनुमानित समय से पहले ही सर्वाधिक जनसंख्यावाला देश बन जाएगा। उल्लेख्य है कि इस वक्त सर्वाधिक आबादी वाले देश चीन की वर्तमान आबादी 1 अरब 26 करोड़ की दिशा में हम अग्रसर होते दिखाई दे रहे हैं। जिस रफ्तार से भारत की आबादी बढ़ रही है उसकी तुलना में विकास नहीं हो पा रहा है। इसकी वजह से कई तरह की समस्याओं का सामना भारत की जनता को करना पड़ रहा है। लोगों का जीवन कठिन होता जा रहा है। भोजन, पानी, कपड़ा, आवास जैसी बुनियादी चीजें भी लोगों को नहीं मिलने की वजह से यह समस्या कहीं ज्यादा गंभीर होती जा रही है। पिछले एक दशक में जिस हिसाब से इस देश की आबादी बढ़ी है वह पूरे ब्राजील की आबादी के बराबर है। या यूँ कहिए कि ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और स्पेन इन चारों को मिला दें तो जितनी आबादी होगी उतनी ही हमने केवल दस साल में बढ़ा दी है। यह ठीक है कि चीन की आबादी की ओर हम बढ़ रहे हैं मगर चीन ने आबादी बढ़ाने से तोबा कर ली है। आबादी पर नियंत्रण होने से वहाँ की आबादी की गति भारत की आबादी की गति से बहुत धीमी है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगले 25 वर्षों में आबादी के मामले में हम चीन को पछाड़ देंगे। चीन की सरकार ने तो कई राज्यों में बच्चा पैदा करने के लिए परमिट प्रणाली लागू कर दी है। बिना परमिट के बच्चा पैदा होते ही सरकारी कार्यवाही चालू हो जाती है। क्या भारत में वैसा संभव है?

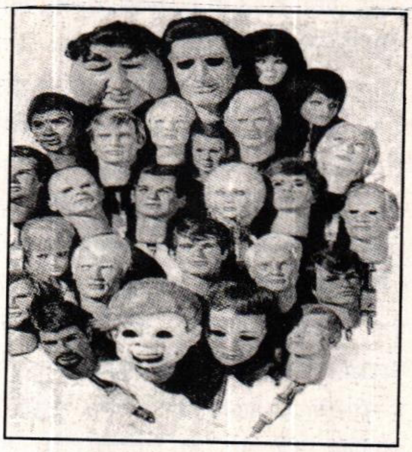

दरअसल भारत में आबादी घटे तो कैसे? यह सवाल लगातार उठ रहा है, क्योंकि यहाँ गरीबी और निरक्षरता घटने का नाम ही नहीं ले पा रही है, कारण कि यहाँ की सरकार में इच्छाशक्ति का अभाव दिखता है। आपातकाल के दौरान जनसंख्या नियंत्रण के मामले में कुछ ऐसी स्थितियाँ पैदा हुई कि उसके बाद कोई भी राजनीतिक दल इस मुद्दे को हाथ लगाने के लिए तैयार नहीं। यह स्थिति तब है जब देश में उपलब्ध संसाधनों के मुकाबले आबादी कहीं अधिक तेजी से बढ़ रही है। कोई भी राष्ट्र आबादी का बोझ एक सीमा तक ही सहन कर सकता है। जिस तेजी से आबादी प्रतिवर्ष बढ़ रही है उसके मुकाबले शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में किए जानेवाले कार्य अपर्याप्त सिद्ध हो रहे हैं।

जनसंख्या नियंत्रण के मामले में केंद्र सरकार ज्यादा कुछ कर सकने की स्थिति में इसलिए भी नहीं है कि उसे राज्य सरकारों का सक्रिय सहयोग नहीं मिल पा रहा है। ज्यादातर राज्य सरकारें जनसंख्या नियंत्रण को लेकर लापरवाह ही अधिक हैं। चिंता का विषय यह है कि जहाँ दक्षिण के राज्यों यथा, केरल, आँ०प्र० आदि में राष्ट्रीय औसत से बहुत कम जनसंख्या वृद्धि दर में काफी कमी आई है वहीं उत्तर के राज्यों में यथा उ०प्र० तथा हरियाणा में जनसंख्या वृद्धि दर में बढ़ोत्तरी हुई है। बिहार में तो यह वृद्धि दर 1981-91 दशक के 23.38 प्रतिशत से बढ़कर 1991-2001 के दशक में 28.83 प्रतिशत हो गई। इसके विपरीत दक्षिण भारत के राज्यों में 1981-91 की तुलना में 1991-2001 में 10.33 प्रतिशत की सर्वाधिक कमी आँध्र प्रदेश में हुई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जनसंख्या की समस्या से निपटने के लिए दूर-दूर तक इच्छाशक्ति का अभाव नजर आता है। अगर ऐसा नहीं होता तो क्या कारण था कि राजस्थान तथा अन्य कई राज्यों में पंचायत के स्तर पर दो बच्चों से ज्यादावालों को चुनाव लड़ने से रोकने की व्यवस्था कर देने के बाद भी विधान सभा तथा लोक सभा के स्तर पर ऐसा ही करने की हिम्मत नहीं जुटायी जा सकी। राजनीतिक हित इस पर हावी हो गए और पंचायत स्तर पर भी ऐसा इसलिए थोपा जा सका क्योंकि उस स्तर के जनप्रतिनिधि विधायकों या सांसदों की तरह निर्णय और नीति निर्माता

की हैसियत में नहीं हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि राजनीतिक दल छोटे परिवार की महत्ता का संदेश प्रचारित-प्रसारित करने के प्रति प्रतिबद्ध नहीं दिखते हैं। कुछ ऐसी ही स्थिति धार्मिक नेताओं, सामाजिक संगठनों और समाज के जिम्मेदार तबके की भी है। जनसंख्या नियंत्रण तो राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों और धार्मिक नेताओं का प्राथमिक कार्यक्रम बनाना चाहिए। लेकिन खेद की बात है कि कोई भी इस कार्यक्रम को अपनी प्राथमिकता सूची में शामिल करने को तैयार नहीं। यह एक प्रकार से राष्ट्र के भविष्य की अनदेखी ही है। चूँकि आबादी नियंत्रण के प्रति जागरूकता का सर्वाधिक अभाव गरीब तबके के बीच है इसलिए आबादी में वृद्धि के साथ गरीब तबका और अधिक निर्धन होता चला जा रहा है। गरीब तबकों को उनकी बुनियादी आवश्यकता की चाहे जितनी भी सुविधाएँ मुफ्त मुहैया साकार कराती जाए बढ़ती आबादी के सामने वे घटते ही जाएँगे। इसलिए बेहतर यह होगा कि जनसंख्या नियंत्रण को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में स्थापित किया जाए और बढ़ती आबादी के बोझ को कम करने के लिए सभी का सहयोग लिया जाए।

दरअसल सबसे बड़ी समस्या यह है कि आबादी की समस्या को भी भावनाओं से जोड़कर संवेदनशील बना दिया गया है। सख्ती की तमाम कोशिशों पर राजनीतिक हित भारी पड़ रहे हैं। एक निश्चित सीमा तय करके दो ही बच्चों वाले लोगों व परिवारों को रोजगार से लेकर हर क्षेत्र में प्रोत्साहन देने और इससे ज्यादा बच्चेवालों को वंचित करने की कड़ी नीति अपनाने और दुस्साहसिक फैसले लेने का वक्त अपरिहार्य हो गया है। केवल जागरूकता कार्यक्रमों, जनसंख्या के नफे-नुकसान समझाने और परिवार कल्याण कार्यक्रमों के फैलाव पर धन फेंकने से बात नहीं बननेवाली है। इसके लिए जरूरी है कि लोगों को शिक्षित किया जाए, क्योंकि शिक्षा ही वह कुँजी है, जिससे जनसंख्या वृद्धि की विकराल समस्या पर अँकुश लगाया जा सकता है।

वर्ष 1987 से 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाया जाता है। दरअसल, इसके पीछे अवध ारणा यह है कि विश्व के सभी नागरिकों को समान अधिकार मिले, साथ ही जनसंख्या से जुड़े मुद्दों, विकास योजनाओं आदि के बारे में खुलकर चर्चा हो। आज पूरे विश्व में परिवार नियोजन कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसके तहत शिक्षा, गर्भ निरोधक दवाओं , नसबंदी, कंडोम आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत में भी इन कार्यक्रमों को अमल में लाया जा रहा है पर केवल शिक्षित एवं जागरूक नागरिकों के द्वारा ही। सच तो यह है कि गरीब तबके में आज भी यह भ्रम बरकरार है कि ज्यादा बच्चे होंगे तो वे अपने माता-पिता के दायित्व को कम करेंगें। यही कारण है कि बचपन से ही अपने बच्चों को स्कूल में न भेजकर उन्हें छोटे-मोटे कामों में लगा देते हैं। उनके बीच आज भी यह अँधविश्वास कायम है कि ईश्वर की दी हुई चीज को न रोका जाए। इसलिए ऑपरेशन आदि उपायों को कलंक मानते हैं। इस तरह का अँधविश्वास तभी खत्म होगा जब ज्यादा से ज्यादा लोग शिक्षित होंगे।

शुभकामनाओं सहित :

मे. श्रीराम आयरन

लफार्ज सीमेंट और छड़ के थोक एवं खुदरा विक्रेता

मीठापुर, खगौल रोड,

पटना-८००००१

मोबाईल : ३३३७३६५

प्रोपराइटर : नरेश कुमार सिंह

शुभकामनाओं सहित :

मे. सुपर सिमेंट ट्रेड़िग

लफार्ज सीमेंट के ए.सी.सी., के.सी.

थोक एवं खुदरा विक्रेता

सिद्धेश्वर कॉम्प्लेक्स

मीठापुर, खगौल रोड,

पटना-८००००१

प्रोपराइटर : सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह

DENSA
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan&Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285èk54471, Fax: 55286

&

DANBAXY
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDCTarapur,

Boisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 28974777, Fax: 28972458

MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

गाँधी और हम

❑ राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता

इन दिनों हर जगह जुर्म और जुल्म इस कदर बढ़ते जा रहे हैं कि संसद में रोज-रोज इसकी चर्चा आम बात हो गयी है। अखबार के पन्ने भी रोज-रोज आतंक, अपहरण, हत्या, आत्महत्या, आंदोलन, हड़ताल, जाम, भ्रष्टाचार, बलात्कार, रंगदारी, लूट-खसोट, चोरी-डकैती, घोटाला, जालसाजी,धरना, अनशन, आरोप-प्रत्यारोप, मूल्यवृद्धि, विदेशी पूँजी-निवेश और व्यापार जैसी बातों से ही रंगे रहते हैं कि हम आजिज हो जाते हैं, फिर भी इन वारदातों को न तो हम रोकने और न इनसे उबरने का ही कोई प्रयास या उपाय करते हैं। इस तरह के गंभीर मसलों पर विचार करने के लिए हम सबों को कहीं एक जगह बैठना होगा पर इस आपाधापी के युग में आमलोगों को इतनी फुर्सत ही कहाँ है कि निजी मसलों को छोड़ सामाजिक मसलों पर विचार करें। निजी स्वार्थ में आदमी इतना लिप्त है कि बाहरी दुनिया और पास-पड़ोस से कोई मतलब नहीं रह गया है। इस तरह के गंभीर मसले को टालने के लिए हम अमीर-गरीब, सवर्ण-अवर्ण, ऊँच-नीच जाति-पाँति, कुदरती या खुदाई कहकर-बताकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं।

हम सब मनुष्य हैं। मनुष्य को कहा जाता है कि वह एक सामाजिक और मननशील प्राणी है। हमें समझने और समझाने के लिए हमारे मनीषियों ने ऋषि (रिसर्च करनेवालों) और मुनियों (मनन-चिंतन करनेवालों) के अनमोल अवदान जो मंत्र और श्लोक के अकूत भंडार के रूप में उपदेश और मागदर्शन हेतु हैं, इस रूप में भरे पड़े हैं:-

(1) यतोभ्युदय नि:श्रेयस सिद्धि: स धर्म:।
(2) धर्म: यो बाधते धर्म न स धर्म: तत।
(3) अयं जिनज परेवेति गणना लघु चेतसाम।
उदार चरितानांतु वसुधैव कुटुम्बकम्।।
(4) अहिंसा परमोधर्म:।
(5) आत्मवत् सर्वभूतेषु य: पश्यति स पंडित:।
(6) सर्वे भवन्तु सुश्विन: सर्वे सन्तु निरामया सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भागभवेत।
(7) सत्यमेव जायते नानृतम।
(8) कृष्वन्तो विश्वमार्यम्।
(9) स गच्छच्वम् स वदध्वम्।
(10) समानी मंत्रम् समिति समानी।
(11) विद्या ददाति विनयम्।
(12) विद्यां चा विद्यां च यस्तेद् वेद्येमयें सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्याऽ मृतमश्नुते।।

इसके बाद भी हमलोग, पता नहीं क्यों, खुदगर्जी और असामाजिकता से ग्रस्त

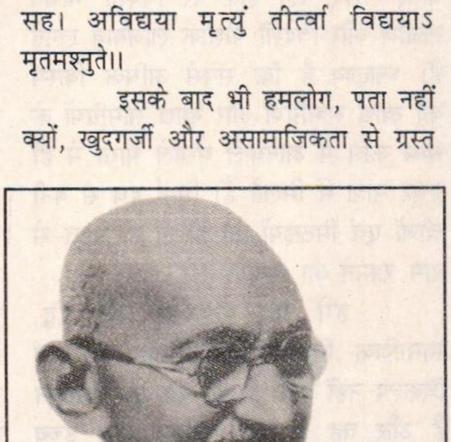

हैं। खुदगर्जी की यह अवधारणा कहाँ से और कैसे आ गयी है, सबों की समझ से परे है। उपर्युक्त आर्ष वाणियों के आलोक में ही हमारे रहनुमा महात्मा गाँधी ने अपने एक लेख 'धार्मिक शिक्षा' में कहा है- ''मेरे लिए धर्म का अर्थ सत्य और अहिंसा है या यों भी कहा जा सकता है कि सिर्फ सत्य है क्योंकि अहिंसा तो सत्य को ढूँढने और पाने हेतु एक जरूरी और अनिवार्य साधन होने के फलस्वरूप सत्य में ही समाहित है।''

हम जानते हैं कि महात्मा गाँधी के तीन अमोघ हथियार सत्य, प्रेम और अहिंसा ये जो दैविक, दैहिक और भौतिक जैसे त्रिताप से शिव (कल्याण करनेवाले) और शंकर (शांत करनेवाले भगवान के त्रिशूल के समान थे जिसके बल पर महात्मा गाँधी ने बिना खुन-खराबा के विश्व-जेता अँगरेजों को अपना बोरिया-बिस्तर बाँधकर बिलायत लौटने पर मजबूर कर दिया और हमें आजादी मिल गयी। उनके इस त्रिशूल पर अटूट विश्वास और विश्व के सामने भारत की आजादी का उदाहरण ने उन मार्क्सवादियों के गाल पर जबर्दस्त तमाचा जड़ दिया जिनका विश्वास था कि सत्ता का बदलाव सिर्फ खूनी क्रांति से ही संभव है।

गाँधीजी के तीन हथियार के साथ-साथ ही तीन ढाल के रूप में सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा और असहयोग थे, जो बहुत ही कारगर सिद्ध हुए। यही नहीं उनके तीन रचनात्मक कार्यों में से थे-खादी, ग्रामोद्योग और अछूतोद्धार, जो उनके स्वदेशी, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता जैसे तीन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए थे। यही कारण है कि महात्मा गाँधी के संग काम करनेवाले काँग्रेसी, जो उनके पक्के अनुयायी थे, इस बात पर जरूर ध्यान देते थे कि अपने देश से सामाजिक विषमता कैसे दूर हो और यहाँ के लोग कैसे आत्मनिर्भर हों। इसीलिए आजादी के बाद काँग्रेस की जो सरकार बनी वह सामाजिक समरसता चाहती थी। उसने इस दिशा में काम करते हुए जमींदारी प्रथा का उन्मूलन, बैंक का राष्ट्रीयकरण, बंधुआ मजदूरों को मुक्ति दिलाने का काम, बेनामी जमीन के हस्तांतरण के लिए कानून बनाने का काम और उसके अनुसार पंचायती राज अधिनियमों में आवश्यक संशोधन का काम किया और गाँववालों को ऐसा कर बहुत से अधिकार भी दिये, लेकिन आज की स्थिति

विचित्र है। आज यदि हम अपने मंत्रियों, सांसदों और विधायकों की गतिविधियों पर एक सरसरी नजर डालें तो पायेंगे कि इनमें से कोई भी गाँधी-दर्शन के कायल नहीं है। इनमें से जो भी विदेश गये, विदेशी चकाचौंध में पड़ गये और विदेश में होनेवाले विकास की तेज रफ्तार देखकर भारत में भी, यहाँ के माहौल पर विचार किये बिना ही, विदेशी तरकीब लादने पर आमादा हो गये। उन्होंने भारत की प्राकृतिक और सांस्कृतिक बिरासत के महत्त्व को समझा ही नहीं। पूर्ण रूप से विदेशी होकर विदेशीपन लाते हुए विदेशी ढंग से विकास की बातों को लागू करने में भिड़ गये जिससे सिर्फ असफलताएँ ही हाथ लगीं। भारत में न तो अमेरिकी ढंग की खेती सफल हुई और न जापानी ढंग की ही। विश्व कोलाहल के परिवेश में विश्व शांति के देश को घसीटकर ले जानेवाले हमारे रहनुमा आज इसका परिणाम देख रहे हैं। अपनी इस धरती पर इन नेताओं ने विदेशी भंडारण के लिए एक मोरचा खोल दिया है। नतीजा है कि आज भारत-जैसे देश को अपने खानदानी उद्भिद् नीम, हल्दी, बासमती चावल आदि पर एकाधिकार के लिए लड़ना पड़ रहा है। यह बहुत दुःखद है।

महात्मा गाँधी को हम राष्ट्रपिता कहते हैं पर हमारे देश के बच्चे-बच्चियों को हमारे इस युग पुरुष के जीवन-दर्शन की कोई तालीम ही नहीं दी जाती। सामाजिक समरसता, सामाजिक बदलाव और संपूर्ण क्रांति जैसे मुद्दों पर सेमिनार पर सेमिनार तो आयोजित होते हैं पर गाँधीजी के ग्राम स्वराज पर गाँव-गाँव में या जिला मुख्यालय स्तर पर ही कोई भी सेमिनार नहीं होता। हमलोग हर चौक-चौराहा पर मंदिर, मस्जिद, क्लब और मनोरंजन करनेवाली संस्थाओं के लिए चंदे उगाहन में सक्रिय नजर आते हैं पर हम सबों में कोई भी ऐसा नहीं है जो पंचायत, अनुमंडल या जिला स्तर पर ही एक गाँधी आश्रम के निर्माण हेतु सक्रिय नजर आवे। हमलोगों में से कोई भी यह नहीं सोंचता कि बुजुर्ग वरीय नागरिकों के लिए भी कोई ऐसा स्थल या आश्रम हो जहाँ वे एक साथ बैठकर अपने अनुभवों एवं अनुभूतियों का दान-प्रतिदान कर सकें।

हमारे लिए गाँधीजी द्वारा बताये गये सत्य प्रेम और अहिंसा के मार्ग तो बहुत कठिन नजर आते हैं पर हम उनके द्वारा प्रतिपादित इन सिद्धांतों और योजनाओं को अपनाये बगैर ही इनके प्रतिफल चाहते हैं। यही तो विडंबना है। हम हजार और लाख रुपये कीमत की पोशाक पहनकर एक इज्जतदार व्यक्ति महसूस करते हैं लेकिन जब गाँधीजी मामूली लिबास खद्दर पहनने की बारी आती है तब आत्मग्लानि से भर जाते हैं। स्वदेशी भोजन और लिबास हमें कतई पसंद नहीं होते पर विदेशी भोजन लजीज और विदेशी पोशाक लाजबाब लगते हैं। ध्यातव्य है कि सबसे अधिक किस्म की खाद्य सामग्रियाँ और खाद्य सामग्रियों के साथ काम में आनेवाले मसाले भारत मे ही प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। सिर्फ दूध से बनी चीजों एवं मिठाइयों को ही लें तो बहुत-से नाम सामने आ जायेंगे।

हमें यह याद रहे कि द्वंद्व, सामाजिक विषमता और विग्रह के कोई विकल्प नहीं होते। इसका एक ही समाधान है और वह है 'सादा जीवन और उच्च विचार' जो एक जीवंत हिंदू जीवन-दर्शन है। यह ऐसा जीवन-दर्शन है जिसमें आवश्यकता और आकाँक्षा में कोई होड़ सा प्रतियोगिता नहीं है। इस व्यवस्था में सुख, शांति, समृद्धि और संतोष हैं फिर इसके लिए हम प्रयास क्यों नहीं करें? यदि हम ऐसा करें तो शांति और संतोष का साम्राज्य होगा।

अब बात आती है शोषण मुक्त समाज की। शोषण-मुक्त समाज बनाने की पूर्ण जवाबदेही हमारे राजनेताओं की है, लेकिन ये सभी अमूमन आर्थिक प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्द्धा और उपभेक्ता बाजार को आगे बढ़ाने के लिए कटिबद्ध नजर आते हैं। हमलोगों के पास ऋषि-मुनियों के जो परीक्षित कतारबद्ध जीवन-दर्शन हैं उससे गाँधी विचार-धारा का कोई विरोध नहीं है फिर भी हम हिचकिचाते हैं। सवाल है हम अपनी जिंदगी में, रोजमर्रे की ज़िंदगी में सामाजिक जवाबदेही के या राष्ट्र के हित में ही कोई भी काम करते हैं क्या? कम-से-कम आजादी के पूर्व का हिंदुस्तान, जिसमें आज का भारत और पाकिस्तान दोनों शामिल रहे, महात्मा गाँधी के ऋणी हैं, फिर भी दोनों देश महात्मा गाँधी की विचार-धारा के अनुकूल सामाजिक संरचना के लिए कोई प्रयास भी किये हैं क्या?

हमलोगों के रहनुमा अपने को गाँधीजी के अनुयायी कहते हैं। ये देश और राज्य की सालाना आर्थिक योजनाएँ बनाते हैं। योजना बनाते समय या बिल पर बहस के दौरान गाँधी विचार-धारा या गाँधीजी द्वारा कही गयी बातों के उदाहरण संसद या विधान सभा में देते हैं क्या ? मंत्रीजी के स्वागत में हमलोग जी-जान से लगे रहते हैं। उनके कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पिले रहने में अपने को गौरवान्वित हम समझते हैं। लगता है, ऐसा करके अपने कद को हमने उँचा कर लिया है। क्या आम लोग भी ऐसा महसूस करते हैं ? नहीं। कुछ ही लोगों में श्रद्धा-सुमन चढ़ाने के होड़ होते हैं, आम लोग इससे वंचित ही रहते हैं। ऐसी व्यवस्था करते-करवाने में हमलोग असमर्थ हैं जिससे सबों को श्रद्धा-सुमन चढ़ाने का मौका मिले।

सभी लोग अपने पुरखों के नाम पर स्मारक बनवाते हैं। व्यापार में गाँधी छाप मुद्रा भी प्रयोग में लाते हैं लेकिन यह किसी से नहीं होता कि उनके नाम पर कोई फुलवारी बनाकर सामाजिक और प्राकृतिक पर्यावरण को दूषित होने से बचायें।

गाँधीजी के पशुधन के रूप में गाय और बकरी को हमलोग भुला दिये हैं। ये पशुधन गाँव की आर्थिक स्थिति सुधारने के साथ गाँवों के लोगों को आत्म-निर्भर बनाने हेतु थे। आज इन्हें हमने भुला दिये। इन्हें भुलाने का अर्थ है, हमने गाँधीजी को ही भुला दिया। इसीलिए गाँधीजी हमारे संविधान के दर्पण नहीं बन सके। प्रश्न है- 'गाँधी जी को भुला देनेवाला राष्ट्र कभी शोषण-मुक्त हो सकता है क्या?'

संपर्क : वरीय अधिवक्ता, नया बाजार, कबैया रोड, लखीसराय (बिहार)

रूढ़ियाँ टालिए, परंपराएँ पालिए

❑ सविता लखोटिया

रूढ़ियों का विषय पुराना है पर इनकी समस्या अब तक सामयिक रह गई है हमारी प्रगतिशीलता और आधुनिकता के बावजूद। आज भारत के कोने कोने में साक्षरता बढ़ी है, नव-संचार साधनों की क्रांति पहुँचने लगी है फिर भी रूढ़ियों की समस्या किसी न किसी रूप में बरकरार है। वस्तुतः यह समस्या दुतरफी है। एक ओर तो इनके कारण समयानुरूप सामाजिक विकास अवरूद्ध होता है, सर्वव्यापी नहीं हो पाता और दूसरी ओर सुविधावादी जीवन दृष्टिकोण तथा पश्चिमी सभ्यता की नकल की झोंक में स्वस्थ परंपराओं का निर्वाह रूढ़ियों को छोड़ने के नाम पर नहीं होता और फलस्वरूप व्यक्तित्व से लेकर संस्कृति और संस्कार का अबाध ह्रास हो रहा है।

विभिन्न समाज सुधारकों, संस्थाओं, सरकारों और शिक्षितों द्वारा रूढ़ियों के परिहार के लिए समय-समय पर सामाजिक चेतना के अभियान चलाए गए हैं। इसी के तहत सरकार ने शिक्षा प्रसार के कार्य चालू किए। पाठ्यक्रमों में भी इन बातों को नैतिक शिक्षा के अंतर्गत स्थान दिया गया पर परिणाम वे नहीं निकले जिनकी आशा और अपेक्षा थी। आज भी चाहे गाँव हो या शहर, चाहे समाज निम्न वर्ग का हो या मध्य वर्ग का या उच्च वर्ग का, चाहे शिक्षित समुदाय हो अथवा अशिक्षित, चाहे कोई धर्म या पंथ का अनुसरण करनेवाला वर्ग हो, रूढ़ियाँ किसी न किसी रूप में और किसी न किसी मात्रा में विद्यमान जरूर हैं। कुछ रूढ़ियाँ पुरातन हैं तो कुछ नई भी पनप रही हैं। यह विसंगति भले ही लगे पर हमारी आधुनिकता ने भी कई नई रूढ़ियाँ पैदा की है और जिनके उदाहरण हमें बहुत दूर जा कर नहीं ढूँढ़ने पड़ेंगे। मिसाल के तौर पर फिल्मी गानों पर ही आधारित विवाह के महिला संगीत और ऐसे ही अनेक नए चलन।

समस्या का समाधान हो, इसके लिए हमें समस्या की जड़ तक जाना पड़ेगा। वे कार्य या प्रक्रियाएँ जो किसी भूभाग या मान्य इकाई की मूल संस्कृति या नीति की संरक्षक हैं और जो समय सापेक्ष न होकर सर्वदा अनुकरणीय हैं, स्वस्थ परंपराएँ कहलाती हैं जैसे अग्नि प्रकृति तत्त्व अथवा ईश्वर की साक्षी में विवाह होना एक श्लाध्य और सटीक परंपरा है। हमारे यहाँ अनेक त्यौहार समय विशेष के उस खाद्य से या उपवास व्रत के पालन से जुड़े हैं जो स्वास्थ्य के लिए हितकारी बनते हैं। कुछ अवसर दान दक्षिणा के लिए बने हैं ताकि समाज का संचालन नैसर्गिक परावलंबन के जरिए हो सके। ये सब परंपराएँ समय सापेक्ष और तत्कालीन रूप से सामयिक होती हैं जिनका उस काल की अवस्था में ही उपयोग और मनोरंजन या किसी अन्य ऐसे प्रयोजन के लिए पालन करना समीचीन होता है। समय और परिस्थिति के परिवर्तन के साथ तथा भौतिक एवं मानसिक आनुसंगिकता के साथ उनमें परिवर्तन या संशोधन उचित हो जाता है या उनकी उपादेयता खत्म हो जाती है। भौगोलिक या पर्यावरणीय भेदों के कारण भी उनमें अंतर करना या बदलना उचित हो सकता है। परिवर्तन को नहीं अपनाना, पुरातन से मोहवश जुड़े रहना या लकीर के फकीर बने रहना अवश्य ही रूढ़िवादिता है जिसका त्याग अनिवार्य है। उदाहरण के लिए, मुगल काल की संस्कृति के फैलाव पर किसी भी कारणवश भारतीय समाज में बाल-विवाह और पर्दा-प्रथा चल पड़ी। सती-प्रथा भी हमारी संस्कृति का अंश बन गई। किंतु आज की परिस्थितियों में, चाहे जनसंख्या के दृष्टिकोण से लें या शारीरिक स्वास्थ्य के नव-स्थापित सिद्धांतों के अनुसार, क्या बाल-विवाह का कानूनी उल्लंघन करते हुए करना एक अन्यायपूर्ण दुराग्रह नहीं है? सती-प्रथा के प्रति धार्मिक आस्था और देवत्व का भाव अमानवीय नहीं कहा जाना चाहिए? इन्हें चाहें परंपराएँ कहें या सामाजिक मान्यताएँ, ये हमें हर मूल्य पर छोड़नी ही होगी यदि हम अपने आप को सभ्य कहलवाने की इच्छा रखते हों। अब रूढ़ि की समयानुकूल परिभाषा तय करनी होगी।

प्रक्रियागत रूढ़ियाँ, परंपराएँ और प्रचलित नए पुराने ढर्रों को टालना या पालना अब हमारी सोच और फितरत का अंग बनना चाहिए और जो व्यक्तिगत स्तर पर चेतना फैलाकर भी सार्थक किए जा सकते हैं। अब हमें हमारी ग्रहणीय परंपराओं और त्याज्य रूढ़ियों का सही विवेचन करना ही होगा। सब बातें सामाजिक या सरकारी निर्णय, नियम और न्याय की परिधि में आ भी नही सकती। हममें से प्रत्येक को अपनी श्रेयस्कर संस्कृति के अनुरूप कुछ स्वैच्छिक अनुशासन ग्रहण करना होगा और उन्हें क्रमशः अच्छे सामाजिक व्यवहार के रूप में प्रतिष्ठित भी करना होगा।

आजकल अपने को मॉडर्न मानने वाले कुछ तथाकथित शिक्षित और नागरी लोग हर पुरातन भारतीय रीति-नीति को पिछड़ेपन की निशानी और पश्चिम से आयातित प्रणाली लहर को ही समय और विकास की चाल मानने लगे हैं। वे आधुनिकता के छलावे में अपनी संस्कृति और सदाचरण को हेय मान बैठते हैं। विवेकशून्य और दिग्भ्रमित सी हो गई है आज की युवा पीढ़ी आपने से बड़ों के दृष्टांत देख कर भी। ऐसे नवयुवा अपने भविष्य-निर्माण में अवश्य ही चूक जाते हैं क्योंकि वे अपनी मूल से कटे हुए पौधे के समान ही रह जाते हैं।

इस लेख का आशय मोटे रूप में दिखने वाली रूढ़ियों और परंपराओं तक ही सीमित होना नहीं है जिनके सुधार के लिए समाज और सरकार द्वारा निमात्मक प्रयास

किए गए हैं तथा और भी किए जा सकते हैं। ध्यान देने के लिए वे प्रक्रियागत रूढ़ियाँ परम्पराएँ और प्रचलित नए पुराने ढर्रे भी हैं जिनको टालना या पालना अब हमारी सोच और फितरत का अंग बनना चाहिए और जो व्यक्तिगत स्तर पर चेतना फैला कर भी सार्थक किए जा सकते हैं। अब हमें हमारी ग्रहणीय परंपराओं और त्याज्य रूढ़ियों का सही विवेचन करना ही होगा। सब बातें सामाजिक या सरकारी निर्णय, नियम और न्याय की परिधि में आ भी नहीं सकती। हममें से प्रत्येक को अपनी श्रेयस्कर संस्कृति के अनुरूप कुछ स्वैच्छिक अनुशासन ग्रहण करना होगा और उन्हें क्रमशः अच्छे सामाजिक व्यवहार के रूप में प्रतिष्ठित भी करना होगा।

आइए, बात प्रचलित दृष्टांतों के जरिए समझे। विवाह के अवसर पर मनोरंजन, सामूहिक उल्लास और आनंद के इजहार के लिए अनेक कार्य किए जाते हैं। पहले मनोरंजन का विशेष महत्व था क्योंकि तब न तो मनोरंजन सर्वसुलभ था और न ही किसी इच्छित समय पर चाहते ही आयोजित हो सकता था। इसलिए उसका तरीका कुछ और था और कार्यक्रम बृहद स्तर पर होता था। अब मनोरंजन बहुथा होता रहता है और कार्यक्रम भी सहज आयोजित हो सकता है। प्रसंगानुसार मनोरंजन होना चाहिए, आधुनिकता का समावेश होना चाहिए किंतु उसके आयोजन का विलास और उनके बीच रूढ़ियों की पालना, जो अटपटी भी लगती है, आयोजन करने वालों की उर्जा, समय और धन का अपव्यय लगने लगा है। वे आनंद का आयोजन करने में थक से जाते हैं। फिर नवकुबेरों द्वारा प्रारंभ किए गए प्रचलन आम आदमी के लिए बोझिल होने लगते हैं। हमें यह अवश्य समझना चाहिए कि अब विवाह के आयोजन प्रायः एक दिवस व्यापी होने लगे हैं और इस अवस्था में हमें या तो प्राचीन परंपराओं को काटना होगा या मनोरंजन का कार्य महज औपचारिकता के रूप में करना होगा। ये दोनों ही बातें विवेकसम्मत नहीं हो सकती। हमें उनका सामंजस्य इस भांति ही करना होगा जिससे अवसर आनन्दपूर्वक सम्पन्न हो सके। आशय यह कि केवल स्वस्थ परंपराओं का निर्वाह हो और रूढ़ियाँ छूटे। वैसे ही मांगलिक मनोरंजन किया जाए और उसका प्रदर्शनकारी विलास छूटे। ऐसे सामंजस्य की आवश्यकता हमें हमारे जीवन के हर संस्कार और पर्व पर पड़ती है। हम प्रायः ही पुरानी प्रक्रिया में फंसे रह कर या नवाचार में उलझ कर नए सोच और विकास को न समय दे पाते हैं और न गति।

गतिमान समय और परिवर्तनशील सृष्टि के नियम की अवहेलना करनेवाला समाज पिछड़ा ही रह जाता है और समय से कदम नहीं मिला पाता। आज जब बीमारियों के इलाज में अंगों को पुनः जोड़ने और बैक्टीरिया तथा विषाणुओं से लड़ने के लिए नई-नई औषधियों का आविष्कार हो गया है तब झाड़-फूँक पर ही आश्रित रहना कहाँ का न्याय है? जब ऐकिक परिवार प्रणाली विकसित हो रही है तब विवाह में लड़के लड़की का मानसिक व मनोवैज्ञानिक धरातल मिलाना खानदान से ज्यादा जरूरी होने लगा है। ब्लड-ग्रुप का परीक्षण कुण्डली मिलाने से अधिक आवश्यक लगने लगा है। अवसर जन्म-मृत्यु का हो या विवाह त्यौहार का दाएँ-बाएँ या आगे पीछे की रस्म के झगड़े में पड़ने की बजाय व्यक्ति तथा साधनों की सुविधा के अनुसार शांति और आनंद के साथ काम होना ज्यादा शुभकर है।

इस चेतना के लिए बाधाएँ क्या है? एक तो पुरानी पीढ़ी का युगों से चलती आई परंपराओं के प्रति मोह का होना और उनके येन-केन प्रकारेण पालन में ही बड़ों के प्रति आदर की स्वीकृति का भाव मानना रूढ़ियों को त्यागने में एक बड़ी बाधा है। अशिक्षा ने भी रूढ़ियों को तजने का मार्ग रोका है क्योंकि शिक्षा दिमाग के द्वारा खोलती है और वैज्ञानिक सोच को विकसित करती है। हमारे देश में स्त्री-शिक्षा का प्रतिशत और भी कम है। यही कारण है कि महिलाओं में, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं में, रूढ़ियों के प्रति अधिक आग्रह है। नगरों में भी आपने प्रायः पुरुषों को यह कहते सुना होगा कि ये काम तो घर की औरतें जैसा करें वहीं ठीक। इस कारण भी रूढ़ियों का प्रत्यावर्तन होता रहता है। यह विवेक में भी आलस महंगा पड़ता है और इस आलस से शिक्षित वर्ग भी अछूता नहीं रहता।

इसके अलावा भी शिक्षित वर्ग रूढ़ियों से घिरता रहता है। जो शिक्षित महिला या पुरुष रूढ़ियों की व्यर्थता को जान भी लेते हैं, वे भी उनको नहीं छोड़ते। विवेक में प्रमाद की बात तो कही जा चुकी है। अन्य घटकों के कई आयाम हैं। एक तो आज का शहरी शिक्षित वर्ग पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में है। अपने इस व्यवहार की पुरानी पीढ़ी से स्वीकृति और खुद पर कोई आँच न आने देने के लिए वे उन परंपराओं को भी पालते रहते हैं जिन्हे वे मन से स्वीकार नहीं करते। ऐसे में औरों के लिए इन व्यवहारों की लकीर पक्की हो कर स्वीकृत परंपरा बन जाती है जबकि वाकई में उनका दर्जा रूढ़ि से ज्यादा नहीं होता। दूसरी ओर, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आज कोई भी आलोचना का पात्र नहीं बनना चाहता-आदर्शों के लिए संघर्ष करना अब दुनियादारी नहीं मानी जाती। आज के माता-पिता अपने बच्चों की वे गलत माँगे भी पूरी करते रहते हैं ताकि उन्हें ''प्यारे मम्मी-पापा'' की संज्ञा से वंचित न होना पड़े। यही संतुष्टिकरण की नीति वे अपने बड़ों के साथ व्यवहार में भी अपनाते हैं।

बच्चों के प्रति व्यवहार की इस अदूरदर्शिता के परिणाम हमारे सामने दिन-प्रतिदिन और साफ उजागर होने लगे हैं। गलतियों और भूलों को समय से दरकिनार नहीं करने की भूल हम अब और नहीं कर सकते। अतः जरूरी है कि शिक्षित वर्ग भी व्यवहार में दूरदर्शिता अपनाए। एक बुराई के लिए दूसरी बुराई को अपनाने की अपेक्षा विवेकसम्मत व्यवहार ही व्यक्तित्व निर्माण और स्वस्थ सामाजिक निरूपण को आश्वस्त कर सकता है। निरंतर विकास की दिशा में गतिमान रहने के लिए हमें रूढ़ियों को छोड़ना भी होगा और उचित तथा संस्कृति का पोषण करनेवाली परंपराओं को अंतरंगता के साथ निभाना भी होगा। इस संतुलित स्वरूप में ही व्यक्ति, समाज और देश और साथ ही मानवता का सुंदर भविष्य सन्निहित है।

संपर्क : विद्या बिहार, ख-६१-अ,
भवानी नगर, सीकर रोड,
जयपुर-३०२०२३।

छोटा होता ममता का आँचल और वात्सल्य से वंचित होते बच्चे

❑ अंजलि

महान मनोवैज्ञानिक वाटसन की यह मान्यता है – व्यक्तित्व का निर्माण पूरी तरह वातावारण पर निर्भर करता है। वाटसन की इस मान्यता से भले ही हम सहमत हों या न हों पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि समाजीकरण की प्रक्रिया के वर्तमान दौर में बच्चों के निर्माण पर माहौल की प्रभावी भूमिका है। पिछले एक-डेढ़ दशक में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया जिस प्रकार रफ्तार पकड़ चुकी है उसमें ऐसे समाज का निर्माण हो रहा है जिसमें संयम, धैर्य और सहिष्णुता लगभग गायब होती जा रही है। ज्यादा-से-ज्यादा हासिल करने की होड़ में मूल्य-मर्यादाएँ तो अप्रासंगिक हो ही चुके हैं, सहज मानवीय स्वभाव का भी लोप होता जा रहा है। आखिर तभी तो इस आपाधापी के माहौल में बच्चे न केवल अपने माता-पिता के वात्सल्य से वंचित हो रहे हैं, बल्कि बच्चों की दुनिया कैसी बनती जा रही है, इस पर सोचने की फूर्सत भी उन्हें नहीं है। समाज के जो सजग और आर्थिक रूप से समर्थ अभिवावक हैं वे अपने बच्चों को मँहगे विद्यालयों में नामांकन कराकर अपने दायित्व की इतिश्री समझ लेते हैं। उन्हें इस पर ध्यान देने की फूर्सत नहीं कि उन विद्यालयों में बच्चों को क्या सिखाया जाता है, स्कूल से बाहर उनकी दिनचर्या क्या है। महानगरों में तो प्राय: पति-पत्नी दोनों नौकरी शुदा हैं इसलिए उनके पास बच्चों के प्रति प्रेम-भाव रखने तथा उनकी पढ़ाई-लिखाई के बारे में कुछ जानने-समझने का वक्त भी नहीं है। गाँव-कस्बे तथा छोटे शहरों में जो लोग रहते हैं उन्हें रोजी-रोटी की लड़ाई से ही फुर्सत नहीं है कि बच्चों की ओर नजर भरकर भी देख सकें। ऐसे में बच्चों का विकास जंगली पेड़-पौधों से अलग कैसे हो सकता है?

भौतिकवाद की अँधी दौड़ में शामिल होकर सारे जहाँ के सुख को भोगने की चाह ने लोगों को इस कदर अँधा बना दिया है कि वे अपने बच्चों को भी समुचित प्यार नहीं दे पाते हैं। अपने बच्चों के प्रति माताओं की ममता का आँचल भी अब छोटा होता जा रहा है। कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' की पंक्तियाँ हैं-

'गलती है हिम शिला सत्य है गठन देह की खोकर
पर कितनी महान हो जाती वह पयस्विनी होकर ।'

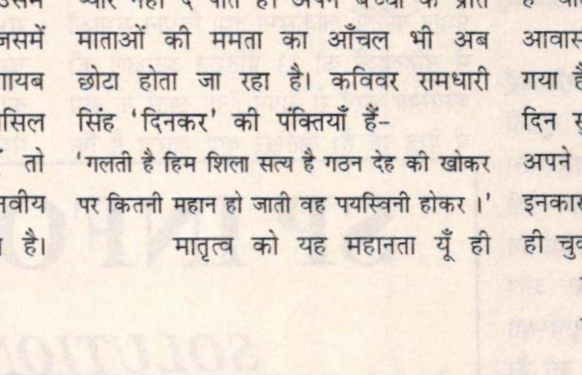

मातृत्व को यह महानता यूँ ही नहीं हासिल हुई थी। सच्चाई यह है कि मनुष्य के जीवन में तरसता, मानवीयता एवं संवेदना वात्सल्य की छाँव में ही घनीभूत होती हैं। याद करें आज से पूर्व माँ की लोरियों में जो लरजती रागात्मकता हमारे जीवन में संगीत बनकर उतर जाया करती थी, आज प्रगति की आपाधापी के दौर में संगीत का वह लय टूटती और विखरती जा रही है। कहाँ सुनने को मिलती हैं माँ की वे लोरियाँ और माँ से बच्चे तक का वह वात्सल्य भाव भी तो संप्रेषित नहीं हो पा रहा है। ऐसा लगता है वात्सल्य को पैसे के बल क्रेच या आवासीय छात्रावास में तब्दील कर दिया गया है जहाँ की अमानुषिक दास्तानें आए दिन सुनने को मिलती हैं। आधुनिक माँयें अपने बच्चों को अपना दूध पिलाने से इनकार कर रही हैं और लोरियाँ तो वे भूल ही चुकी हैं। लोरियों की जगह पर गाने की कोई जैज या कैलिरसो के कैसेट्स लगा देना वे पसंद कर रही हैं।

मौजूदा समय में खासकर महानगरों में पति-पत्नी का नौकरी पर जाना और घर संभालना दोनों काम बहुत थका देनेवाले हैं। इसके परिणामस्वरूप घर में रहनेवाले बुजुर्गों की देखभाल की बात कौन कहे, अपने नौनिहाल बच्चों की देखभाल के लिए जरूरी धैर्य भी लोगों में कम होता जा रहा है। बच्चों की देखभाल को भी उसके माता-पिता एक बोझ समझने लगे हैं और ऐसे में समाधान के तौर पर क्रेच की संख्या बढ़ने लगी है।

आज की भागम-भाग और आपा-धापी की जिंदगी में कोई महिला मातृत्व और कैरियर से जुड़ी जिम्मेदारियों को पूरी सफलता के साथ निभा सकती है बशर्ते कि वह अपनी प्राथमिकताएँ तय कर

उन पर पूरी ईमानदारी से अमल करने का प्रयास करें। इसके लिए उन्हें अपनी आवश्यकताएँ और प्राथमिकताएँ निर्धारित करनी होंगी, क्योंकि मातृत्व के लिए उन्हें नजरअंदाज करना असंतुष्टि दे सकता है।

आजकल ऐसा देखा जाता है कि अधिकांश बुजुर्ग दादा-दादी अपने पौत्र-पौत्रियों के साथ खुद को असहज महसूस करते हैं। इसके कई कारण हैं। जो बुजुर्ग दंपति किसी सामाजिक-साहित्यिक अथवा राजनीतिक गतिविधियों को लेकर व्यस्त हैं उनकी विवशता की बात तो समझ में आती है मगर जिनके पास और कोई व्यस्तता नहीं है वे भी स्वयं को असहज इसलिए महसूस करते हैं कि वे पौत्र-पौत्रियों की ऊर्जा के सामने या तो स्वयं को अनफिट पाते हैं या फिर दादा-दादी के हवाले बच्चे अक्सर अनुशासनहीन हो जाते हैं।

मुझे ऐसा लगता है कि महिलाएँ अपने स्त्री होने के कुछ दायित्व को भूलती जा रही हैं। इन्हीं दायित्वों के आस-पास स्त्री अपना महत्वपूर्ण समय और श्रम देती रही हैं अपने सांस्कृतिक विकास की कीमत पर, किंतु आज की आधुनिकता और उपभोक्तावाद ने वात्सल्य को अनुपस्थित करके उसकी प्रायोजित आपूर्ति तय की है।

ये सारी चीजें स्नेह और प्रेम को गायब कर हिंसक समाज की रचना कर रही हैं। समाज में जो टूटन और पारिवारिक रिश्तों में जो द्रुतगति से बदलाव आ रहा है वह इसी का तो परिणाम है। आखिर माँ की ममता और वात्सल्य से वंचित बच्चों से अच्छे समाज और सबल राष्ट्र की कल्पना कैसे की जा सकती है। वात्सल्य के तात्कालिक प्रबंधन के तरीके मात्र बाजार की संस्कृति के स्वाभाविक उपक्रम बनकर रह जाएँगे, वात्सल्य और ममता का कोई विकल्प निकल पाएगा, इसके आसार नजर नहीं आते।

संपर्क 'बसेरा', पुरन्दरपुर
पटना-८०००१.

महिला आरक्षण पुनः अधर में

विचार कार्यालय, दिल्ली

लोकसभा और विधान सभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए महिला आरक्षण विधेयक को वर्ष 1996 से ही कानून में तब्दील करने का प्रयास चल रहा है। तमाम सर्वदलीय, बैठकों के बावजूद इस विधेयक पर आम सहमति नहीं बन पाने की वजह से महिला आरक्षण विधेयक पुनः अधर में लटक गया। इस संदर्भ में यह कहना कदाचित अनुचित नहीं होगा कि राजनीतिक दल इस विधेयक के प्रति ईमानदार नहीं है। यदि काँग्रेस, भाजपा और वामदल चाहते तो यह विधेयक कब का कानून का रूप ले लेता, लेकिन सच तो यह है कि प्राय सभी पुरुष प्रधान पार्टियाँ लोकसभा तथा विधान सभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था करने से अपने लिए खतरे के रूप में देख रहे हैं। आखिर क्या कारण है कि सभी दलों के चाहते हुए भी यह विधेयक लगभग दस वर्षों से टलता जा रहा है?

जहाँ तक कुछ दलों की आरक्षण के अंदर आरक्षण की माँग का सवाल है, यदि अन्य क्षेत्रों में इस माँग के अनुरूप आरक्षण की व्यवस्था की जा सकती है तो फिर लोकसभा और विधान सभाओं में महिलाओं के आरक्षण के मामले में ऐसा क्यों नहीं किया जा सकता? सच तो यह है कि राजनीतिक दल महिलाओं को आगे बढ़ाने तथा उन्हें राजनीति में भागीदारी दिलाने के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं। इन राजनीतिक दलों को निर्वाचन आयोग का यह सुझाव भी कहाँ रास आ पाया कि सभी दल लोक सभा और विधान सभा चुनावों में 33 प्रतिशत महिला उम्मीदवारों को अनिवार्य रूप से टिकट देकर चुनाव मैदान में उतारें?

SP INFOTECH

SOLUTIONS IN :

COMPUTER ASSEMBLING,
MAINTENANCE,
AMC, LAPTOP REPAIR,
NETWORKING, WEB SITES,
GRAPHIC DESIGNING
&
SOFTWARE DEVELOPMENT

D-55, Near Shipra Hotel, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi-92
Tel.: 011-52487975, 22059410, Telefax : 22530652
Mobile : 9811310711, 9873434085 /6 /7
E-mail : spinfotech@email.com
Sudhir Ranjan (M Sc. MCSE)
9811281443

नीतीश की न्याय-यात्रा का नतीजा जवाब में लोजपा की भाईचारा यात्रा

विचार कार्यालय, पटना

अक्टूबर-नवंबर में बिहार विधानसभा चुनाव को देखते हुए जद (यू) के वरिष्ठ नेता नीतीश कुमार के नेतृत्व में प्रारंभ न्याय-यात्रा पाँच चरणों संपन्न हो चुकी है जिसका नतीजा क्या निकलेगा यह तो काल के गाल में छिपा है, पर इतना अवश्य है कि इस बार के चुनाव में जद (यू.) के कद में काफी इजाफा होगा। कारण कि बिहार के मतदाताओं के पास अब कोई दूसरा विकल्प रह भी नहीं गया है। इसलिए बिहारवासियों की निगाहें नीतीश कुमार पर जा टिकी हैं। इस संदर्भ में यहाँ यह कहना समीचीन होगा कि भारतीय राजनीति के मौजूदा दौर में नीतीश कुमार ने राजनीति के लगातार गिरते स्तर के बीच अपने को औरों से अलग और साफ-सुथरी छवि प्रस्तुत की है। रेल मंत्री के रूप में इनके ठोस कार्यों को लोग चाहकर भी भुला नहीं सकते।

जहाँ तक मुस्लिम मतों का सवाल है लालू प्रसाद, नीतीश कुमार और रामविलास पासवान तीनों राजनीतिक तौर पर जानी दुश्मन होते हुए भी इस मामले में तीनों एक समान हैं, क्योंकि तीनों मुस्लिमों के बीच चैम्पियन बनने की होड़ में शामिल हैं। बिहार में तकरीबन 17 प्रतिशत मत मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हैं जिन पर तीनों की नजर है। अभी-अभी कुछ दिनों पूर्व पटना के श्रीकृष्ण स्मारक भवन में आल इंडिया पसमांदा मुस्लिम महाज द्वारा आयोजित एक मुस्लिम सम्मेलन में आपस में नहीं टकराने की शर्त पर नीतीश कुमार तथा लालू प्रसाद लंबे अरसे के बाद एक ही मंच पर आकर दोनों नेताओं ने अपने-अपने अंदाज में मुसलमानों को लुभाने-रिझाने का प्रयास किया। मुसलमानों के इस जलसे में एक ही मंच पर लालू-नीतीश के शरीक होने से भड़के लोजपा के प्रदेश अध्यक्ष गुलाम रसूल बलियावी ने जहाँ इसे 'मौसमी प्यार' की संज्ञा दी, वहीं जद (यू) के वरिष्ठ नेता डॉ० जगन्नाथ मिश्र ने एक कदम और आगे बढ़कर कहा कि सरकार 1950 के राष्ट्रपति के आदेश में 1956 में जोड़े गए सिख और बौद्धों की तरह मुसलमान और ईसाइयों को भी जोड़ दें ताकि वे आरक्षण का लाभ ले सकें। यानी बिहार का हर नेता मुसलमानों को अपने पाले में करने के लिए कुछ भी कहने को तैयार हैं। कोई उन्हें आरक्षण दिलाने की बात कहता है, कोई अनुसूचित जाति में शामिल करने की, तो कोई मुख्यमंत्री बनाने का आश्वासन देता है। फिर नीतीश कुमार ने हाल ही में प्रकाशित बिहार के पूर्व मुख्य मंत्री सत्येन्द्र नारायण सिंह की आत्मकथा 'मेरी यादें मेरी भूलें' का हवाला देते हुए भागलपुर दंगे के सच पर लालू-पासवान को मुँह खोलने और अपना पक्ष स्पष्ट करने की बात कही है।

'विचार दृष्टि' ने नीतीश कुमार की इस न्याय-यात्रा के फलाफल पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों के मतदाताओं से उनकी प्रतिक्रिया जानने की कोशिश की है जिसे यहाँ पाठकों की जानकारी हेतु प्रस्तुत की जा रही है।

जद (यू.) के युवा नेता मधेश्वर सिंह तथा लखन सिंह ने जो इस न्याय-यात्रा के प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं ने 'विचार दृष्टि' को बताया कि इस 'न्याय-यात्रा' अभियान से मुसलमानों के 20 प्रतिशत मतदाताओं का रूझान जद (यू) नेता नीतीश कुमार की ओर बढ़ा है।

साहित्यकार युगल किशोर प्रसाद ने न्याय-यात्रा पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि विगत 15 वर्षों से अन्याय के दमन-चक्र में पिस रही बिहार की जनता की आँखें खोलना नेता का दायित्व है। इस अर्थ में श्री नीतीश कुमार की न्याय यात्रा उनके व्यक्तिगत दायित्व के साथ ही सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्व निर्वाह का भी सूचक है। निश्चित तौर पर नीतीश कुमार प्रजातांत्रिक मूल्यों के अंरक्षक के रूप में देश की जनता के समक्ष उभरे हैं और उनकी बेदाग छवि को देखते हुए राज्य का क्या, देश के नेतृत्व का दायित्व उन्हें सौंपा जाना चाहिए।

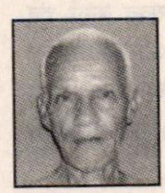

सामाजिक कार्यकर्ता एवं शिक्षक रामधारी शर्मा ने न्याय यात्रा पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि जनता में इसका असर पड़ा है लेकिन इस न्याय यात्रा के जवाब में लोजपा की ओर से रामविलास पासवान द्वारा प्रारंभ भाईचारा यात्रा के बारे में श्री शर्मा ने बताया कि बार-बार मुसलमान

मुख्य मंत्री बनाने का आश्वासन मात्र एक स्टंट है जिसका मुसलमानों के बीच कोई खास प्रभाव देखने में नहीं आता है।

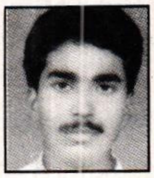

लोजपा के नेता संजय रजक ने स्वीकार किया कि जिस पार्टी से एक भी मुसलमान विधायक न होता हो उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष के द्वारा मुसलमान मुख्यमंत्री बनाने की बात करना हास्यापद लगता है। श्री रजक ने स्वयं इस बात पर हामी भरी कि लोजपा की भाईचारा यात्रा विफल साबित हुई है।

इसी प्रकार पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता सुनील कुमार सिन्हा ने 'विचार दृष्टि' को बताया कि नीतीश जी की बहुप्रचारित न्याय यात्रा का जनता में अच्छा असर देखने को मिल रहा है, क्योंकि पिछले बिहार विधान सभा चुनाव की तरह इस बार भी वे राजग की ओर से घोषित मुख्यमंत्री हैं। जनता के सामने रेल मंत्री के रूप में 'विकास पुरुष' की छबि का लाभ इस बार उन्हें अवश्य मिलेगा/श्री सिन्हा ने यह भी कहा कि रामविलास पासवान ने मुसलमानों के बीच से मुख्य मंत्री बनाने की बात कर अल्पसंख्यक समुदाय में भय का वातावरण उपस्थित कर दिया है।

जद (यू) अभिमान समिति के महासचिव तथा समस्तीपुर कॉलेज के प्रो० अभ्यानन्द सिन्हा उर्फ सुमन पटेल काफी उत्साहित दिखे और नयाय यात्रा पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए यहाँ तक कह डाला कि आसन्न बिहार विधान सभा चुनाव में मुस्लिम मतदाताओं के 50 प्रतिशत मत जद (यू) की झोली में अवश्य जाएँगे।

इसी प्रकार रवीन्द्र कुमार सिंह ने जहाँ इस न्याय यात्रा के माध्यम से उन्हें सरकार नहीं बनाने देने के लिए मतदाताओं से न्याय करने को बताया वहीं सहजानंद कुमार तथा कपिलदेव सिंह ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि न्याय यात्रा के जरिए नीतीश कुमार द्वारा लालू-राबड़ी सरकार के पिछले 15 वर्षों के कारनामों को उजागर करने का प्रयास था ताकि मतदाता उसकी खामियों-कमियों को भूल कर निष्क्रिय न हो जाएँ।

व्यवसाय से जुड़े सिद्धेश्वर सिंह ने इस बात पर चिंता जाहिर की कि राजनीतिक दलों ने आम-आदमी के मुद्दों को नजरअंदाज कर अपनी कुर्सी के लिए न्याय माँगने की बात की है। काँग्रेस से जुड़े लाल दास पासवान तथा दयानंद सिंह ने भी न्याय यात्रा तथा भाईचारा यात्रा के औचित्य पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए जनता के समक्ष महंगाई तथा बेरोजगारी जैसे ज्वलंत मुद्दों से आँख मूँदने की बात कही।

राजग की 'न्याय यात्रा' और लोजपा की 'भाईचारा यात्रा' संपन्न भी नहीं हुई कि भाजपा की 'बिहार स्वाभिमान यात्रा' का 2 से 6 सितंबर तक राज्य व्यापी आयोजन किया गया। इसके तहत अपने हिससे की 80 से 105 विधानसभा क्षेत्रों में भाजपा की प्रखंड स्तर सभाएँ हुई जिसमें भाजपा के सभी छोटे-बड़े नेताओं ने भाग लेकर मतदाताओं को रिझाने का प्रयास किया। हालांकि जब राजग की ओर से आयोजित न्याय यात्रा में राजग के छोटे-बड़े नेताओं ने जनता के सामने अपनी बातें रखीं तो भाजपा की ओर से पुनःस्वाभिमान यात्रा का औचित्य मतदाताओं को समझ में नहीं आया। कहीं न कहीं यह यात्रा उन्हें दिग्भ्रमित करने के लिए तो नहीं की गई?

इधर बिहार के आला अधिकारियों के तबादले को लेकर जो हाय-तोबा मचा और इस परिदृश्य पर चुनाव आयोग की जो पैनी नजर पड़ी उससे आदर्श चुनाव आचार संहिता पर ईमानदारी से अमल किए जाने का संकेत जरूर है। चुनाव आयोग के निर्देश पर गैर जमानती वारंट को तामील करबाने और अवैध हथियारों की बरामदगी के लिए चलाए गए विशेष तलाशी अभियान काबिले तारीफ है।

बिहार में दूसरी बार राजनीतिक संघर्ष शुरू होने को है। इस संदर्भ में एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि जातिगत समीकरण और बाहुबलियों की साठगाँठ से बिहार के चुनाव बुरी तरह प्रभावित होते जा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि केवल राजद में ही अपराधी प्रवृति के लोगों की भरमार है। इस रोग के शिकार कमोवेश बिहार के सभी राजनीतिक दल हैं। अभी आपने देखा नहीं लोजपा के जो इक्कीस विधायक जद (यू०) में शामिल हुए उनमें कोई आधा दर्जन को तो नामी-गरामी बाहुबलियों व अपराधियों की पंक्ति में माना जाता है। क्या इन अपराधियों पर नीतीश कुमार का नियंत्रण हो पाएगा? या इन अपराधियों के बल पर राज्य को वे सही नेतृत्व दे पाएँगे ? ये प्रश्न बिहार के जनमानस में कौंध रहे हैं। इसलिए नीतीश कुमार को इस हालत में फूँक-फूँककर कदम बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि अपराधियों की एक अलग जाति होती है जो केवल अपने हित की बात सोचती है। जब अपराधी भी नीतीश जी की तरह विकास और यहाँ की विधि-व्यवस्था सुधारने की बात सोचने लगे, तब तो पिछले 15 वर्षों से बिहार की यह दुर्गति होती ही नहीं। अपराधियों से संबंधित इन प्रश्नों पर चुनाव के वक्त ईमानदारी से मतदाताओं को भी विचार करना उनके हक में होगा। इधर इस चुनाव के पूर्व सपा, भाकपा, भाकपा (माले), लोजपा सहित कुछ अन्य छोटे दलों को लेकर तीसरे मोर्चे की बात चल रही है। यदि ऐसा हुआ तो राम विलास पासवान एक बार पुनः बिहार की राजनीतिक तस्वीर बनाने में निर्णायक भूमिका में दिख सकते हैं और फिर खंडित जनादेश की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है । और यदि पुनः ऐसा हुआ तो बिहार के लिए दुर्भाग्यपूर्ण होगा। ऐसी विषम स्थिति में बदलाव लाने के प्रति सजग एवं सही लोगों को अपने मस्तिष्क खपाने की जरूरत है । सही सोचनेवाले लोगों को ऐसे संकट के समय अपनी चुपी तोड़ खुद को दृढ़ता के साथ प्रस्तुत करना समय का तकाजा है, क्योंकि बुराई पर जीत के लिए एक मात्र जरूरत है कि अच्छे लोग कुछ करें ।

यह हमारे लिए दुर्भाग्यपूर्ण

❑के. सी. त्यागी

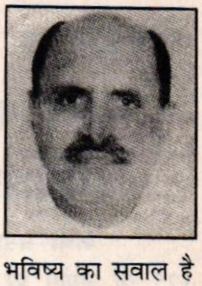

भाजपा में जो कुछ हो रहा है वह उनका आंतरिक मामला है। तत्काल हमारी प्राथमिकता बिहार का चुनाव है। यह चुनाव हमारी पार्टी जद (यू) के लिए काफी महत्वपूर्ण है इसलिए अभी हमारी पार्टी का सारा ध्यान इस बात पर केंद्रित है कि राज्य में लालू विरोधी वोट को कैसे अपने पक्ष में परिवर्तित किया जाए। दूसरी ओर भाजपा की अंदरूनी उठापटक, वैचारिक अंतर्विरोध, आपसी द्वंद्व, आंतरिक कलह और आपसी बयानबाजी निःसंदेह ही उनके संगठन के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। हम भाजपा के सहयोगी दल के रूप में संगठित, सुरक्षित और उन्नत भाजपा की कामना करते हैं।

जहाँ तक भाजपा में कलह और विवाद का सवाल है तो यह मसले उन्हें खुद सुलझाने हैं। हम उनके आतंरिक मामलों में दखल देना नहीं चाहते हैं ना ही हमारा कोई ऐसा इरादा है। अगर जनता दल (यू) के आंतरिक मामलों में कोई अन्य दल या कोई व्यक्ति विशेष दखल दे तो स्वाभाविक है कि हम असहज महसूस करेंगे। वैसी ही प्रतिक्रिया जार्ज फर्नाडीस के वक्तव्य पर भाजपा के मित्रों ने व्यक्त की है। वैसे दिल्ली के इस छिटपुट बयानबाजियों और परस्पर विरोधी वक्तव्य से बिहार में लालू विरोधी वोट पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि बिहार की परिस्थितियाँ देश के अन्य भागों से भिन्न हैं।

अगर हम विचारधारा की बात करें तो जनता दल (यू) अपने जन्मकाल से ही और विरासत से मिले विचारों के आधार पर धर्मनिरपेक्षता से ओत-प्रोत एक संगठन है। इसके नेता दार्शनिक राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण, चौधरी चरण सिंह और कर्पूरी ठाकुर की धर्मनिरपेक्षता जगजाहिर है। इस पर हमने कभी समझौता नहीं किया है, ना ही सामाजिक समरसता के प्रश्न पर। भाजपा को जैसे जड़ों की ओर वापसी पसंद है, उसी तरह हमें अपनी धर्मनिरपेक्षता पर नाज है। साथ ही यह विश्वास है कि धर्म और जाति की राजनीति खतरनाक है, इसकी उम्र लंबी नहीं होती है।

अगर हम पिछले 7-8 वर्षो की राष्ट्रीय राजनीति की घटनाओं पर गौर करें तो इस बात का पक्का सबूत मिल जाएगा कि जब-जब कुछ लोगों ने विवादित मुद्दों को हवा देने की कोशिश की हमारी पार्टी ने हर स्तर पर इसका विरोध किया। चाहे वह गुजरात दंगा हो या अयोध्या का मसला हो या बिन सहमति के समान नागरिक संहिता की बात हो। जहाँ तक भाजपा के हिंदुत्व के एजेंडे का सवाल है तो जब भाजपा का राजनीतिक एजेंडा राजग के एजेंडे को बदलने का प्रयास करेगा तब हम इस मसले पर गंभीरतापूर्वक विचार करेंगे कि हमें भविष्य की राजनीति के लिए क्या करना है। तत्काल यह मुद्दा सुप्तावस्था में है। जहाँ तक राजग के भविष्य का सवाल है तो इसका भविष्य यूपीए के साथ जुड़ा हुआ है। आज जिस तरह से यूपीए के घटक दलों में आपाधापी मची है खासकर वामदलों का आर्थिक सवालों को लेकर सरकार के ऊपर जैसा दबाव है उससे यूपीए का भविष्य खतरे में है। ऐसे में राजग के संगठित होने की आवश्यकता दिख रही है। लेकिन यह हम लोगों (राजग) के लिए बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि हम यूपीए सरकार की अकर्मण्यता और अंतर्विरोधों का लाभ न सदन के भीतर न सदन के बाहर उठा पा रहे हैं।

रक्षा मंत्री प्रणव मुखर्जी द्वारा प्रस्तावित भारत और अमरीका रक्षा मसौदा, आनेवाले दिनों में भारत को इराक में सैनिक भेजने तक के लिए बाध्य करेगा। ऐसे में स्वाभाविक है कि वामपंथी दल और राष्ट्रवादी कांग्रेस यूपीए सरकार के इस फैसले का विरोध करेंगे। इससे आनेवाले समय में यूपीए के भीतर संकट ज्यादा गहराएगा। ऐसे में राजग का मजबूत होना जरूरी है। संघ व भाजपा को इस ओर भी ध्यान देना चाहिए।

(लेखक जनता दल (यू) के महासचिव हैं)

ऐसे बने शेखावत दस रु. में उपराष्ट्रपति

❑ सुशील शर्मा

उप राष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत ने अपनी अब तक की पूरी राजनीतिक यात्रा में मात्र दस रुपये में तय की और वह भी पत्नी श्रीमती सूरज कंवर से उधार लेकर। आज भी वे दस रुपये उन पर उधार है। गाहे बगाहे पत्नी किसी जमाने में दिए उन रुपयों का तकादा कर देती हैं! 'हिन्दुस्तान' के साथ एक विशेष साक्षात्कार में बीते दिनों को याद करते हुए उन्होंने राजस्थान में शेखावटी अंचल के एक छोटे से गाँव खाचरियावास से दिल्ली स्थित मौलाना आजाद रोड़ के उप राष्ट्रपति भवन की यात्रा तय की।

दरअसल श्री शेखावत राजनीति में आने से पहले रामगढ़ शेखावाटी में थानेदार थे। सन 52 में जब चुनाव होने थे तो उससे पहले उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी और राजनीति में कूदने का मन बनाया। यह उनकी घोर गरीबी के दिन थे। चुनाव लड़ना चाहते थे लेकिन पर्चा भरने के लिए पैसे नहीं थे। झाड़ पोंछ कर पत्नी के पास कुल तीस रुपये निकले जिनमें से दस रुपये उन्होंने श्री शेखावत को दे दिए। दस रु. कहाँ से आएँगे। एक मित्र ने यह समस्या भी दूर कर दी। पर्चा भरा गया। सौभाग्य से विरोधी रामराज्य परिषद के उम्मीदवारों के पर्चे गलत तरीके से भरे जाने के कारण खारिज हो गए। इनका पर्चा सही था और श्री शेखावत दाता रामगढ़ सीट से विधान सभा के लिए चुन लिए गए। बाद में उन्होंने मुड़ कर नहीं देखा और लगातार सफलता की ऊँचाइयाँ हासिल करते रहे हैं। उप राष्ट्रपति ने बताया कि अपने पूरे राजनीतिक जीवन में उन्होंने अपनी जेब से सिर्फ दस रुपये खर्च किए। बाद में उनके चुनाव का सारा खर्च उनके समर्थकों और प्रशंसकों ने किया। हंसते हुए श्री शेखावत ने बताया कि उनकी पत्नी अब भी अक्सर उनसे वे दस रुपये मांगती हैं। यह उधार वह अब तक नहीं चुका सके। समर्थकों का प्यार और सम्मान मिलने का कारण बताते हुए एक तरह से उन्होंने के नेताओं को भी संदेश दिया कि लोगों का दिल जीतने के लिए अपने से पहले उनका खयाल रखो। श्री शेखावत ने एक वाकया बताया कि जब वह पहली बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तो उनके सामने जयपुर की एक मस्जिद का मामला आया। खंडहर हो चुकी इस मस्जिद का वहां के मुसलमान पुनरुद्धार करना चाहते थे लेकिन हिन्दू इसके लिए तैयार नहीं थे। काफी दिनों से इस मस्जिद को लेकर दोनों समुदायों में मनमुटाव था। मुख्यमंत्री बनने के बाद मुसलमानों ने उनसे मस्जिद बनाने की इजाजत मांगी। उन्होंने इजाजत दे दी। तब तक वह लोगों में इतने लोकप्रिय हो गए थे कि किसी ने भी उनके उन्होंने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में मस्जिद बनवा कर लोगों के दिलों को जोड़ा था।

प्रेमचंद के गाँव लमही स्थित घर राष्ट्रीय स्मारक घोषित

कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 125 वीं जयंती पर उनके गाँव लमही में विगत 31 जुलाई को आयोजित एक समारोह

में उनके पुस्तैनी घर को उनकी स्मृति को अमर रखने के लिए राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया। इस अवसर पर मौजूद केंद्रीय सूचना, प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री एस जयपाल रेड्डी ने अपने संबोधन में कहा कि मुंशी प्रेमचंद ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन को एक निश्चित दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उ.प्र. के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने समारोह में लगभग दो करोड़ रुपए लागत के कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों एवं योजनाओं की घोषणा करते हुए कहा कि प्रेमचंद की रचनाओं, विचारों और कलम की प्रासंगिकता किसी दौर में कम नहीं हुई और न किसी दौर में कम होगी। ऐसे साहित्यकार देश के सांस्कृतिक इतिहास का हिस्सा बनकर जिंदा रहते हैं। इस अवसर पर प्रेमचंद परिवार के सभी सदस्यों सहित डॉ. नामवर सिंह, राजेन्द्र यादव, श्रीलाल शुक्ल, डॉ. काशीनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह तथा सांसद सरला माहेश्वरी भी मौजूद थी।

–कृष्ण कुमार राय, लमही से।

'हिंसा एवं आतंकवाद' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

विचार कार्यालय, दिल्ली

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में विगत 9 जुलाई को नई दिल्ली के छतरपुर रोड, महरौली स्थित अध्यात्म साधना केंद्र के अणुव्रत सभागार में 'हिंसा एवं आतंकवाद: कारण और निवारण' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें भारत के गृहमंत्री शिवराज पाटिल ने कहा कि हिंसा और अहिंसा, शांति और अशांति दोनों मनुष्य के मन में है। भूख, बेकारी, अन्याय तथा अत्याचार के कारण तो हिंसा होती ही है; अज्ञानता की वजह से भी हिंसा होती है। आज हर धर्म अपने को दूसरे से बड़ा समझ रहा है, जिसके चलते भी हिंसा हो रही है। संसार तथा संस्कृति के नाम पर मनुष्य को बाँटने की प्रक्रिया भी आतंकवाद को जन्म देती है। बातचीत के माध्यम से एक दूसरे को जानने-समझने से भी हिंसा का समाधान निकाला जा सकता है। दरअसल हमलोग अपनों की बुराइयों से तो लड़ना चाहते हैं, पर अपने से लड़ना नहीं चाहते, जिसके चलते हिंसा को बढ़ावा मिलता है, श्री पाटिल ने अंत में कहा।

इनके पूर्व आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने के क्रम में कहा कि यदि हम इस पर विचार करें कि हिंसा और आतंकवाद में हमारी भागीदारी कितनी है तो इसका समाधान निकल आएगा। आज दुनिया में अमीर का आँकड़ा आ रहा है, पर भूख और गरीबी से कितने लोग मर रहे हैं इसका आँकड़ा नहीं आ रहा है, यह एक सोची-समझी साजिश है। त्रुटिपूर्ण शिक्षा भी हिंसा को बढ़ावा दे रही है।

हिंसा और आतंकवाद मिटाने के लिए केवल तात्कालिक चिंतन नहीं, बल्कि एक गहन, गंभीर एवं स्थायी चिंतन की जरूरत है। केवल घोषणा नहीं उसे कार्यान्वित किए जाने की आवश्यकता है। हिंसा और आतंकवाद से निबटने के लिए अहिंसा और नैतिकता के प्रशिक्षण का कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए युवाचार्यश्री महाश्रमण तथा मुनिश्री सुखलाल ने हिंसा को जहर बताते हुए जीवन के लिए अमृत की आवश्यकता पर बल दिया, किंतु उन्होंने चिंता व्यक्त की कि आज हिंसा को जीवन का अंग बनाया जा रहा है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय के निदेशक डॉ. वाई०पी० आनन्द ने समाज में असमानता, गरीबी, बेरोजगारी और भेद-भाव को जहाँ हिंसा एवं आतंकवाद का कारण बताया वहीं गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष प्रो० के० डी० गंगराडे ने हिंसा के कारणों में आपस में सम्मान, सहयोग तथा साख की कमी बताते हुए हिंसा एवं आतंकवाद के समाधान के लिए विचारों में क्रांति लाने पर जोर दिया। इसी प्रकार सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने समाज में बढ़ते असंतोष और अभाव को हिंसा का कारण बताया।

प्रारंभ में प्रवास समिति के अध्यक्ष मांगीलाल सेठिया ने अतिथियों का स्वागत किया। अहिंसा-यात्रा के राष्ट्रीय प्रवक्ता मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश' ने कार्यक्रम के संचालन के क्रम में आचार्यश्री महाप्रज्ञ के नेतृत्व में अहिंसा यात्रा की उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा की और संगोष्ठी को अपनी वक्तृत्व-कला से जीवंत बनाया।

कानून से नहीं, दृष्टिकोण बदलने से सुलझेगी भ्रूण-हत्या की समस्या

–शिवराज पाटिल

अहिंसा यात्रा के राष्ट्रीय प्रवक्ता तथा एक संवेदनशील साधक, कवि, लेखक एवं मनीषी संत मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश' के उपन्यास 'द अनबार्न कर्स' की भूमिका में केंद्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज अपने अभिमत में लिखा है कि यह उपन्यास सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक विद्रूपताओं एवं मानवीय विकृति को सशक्त एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है।

विगत 9 जुलाई को छतरपुर रोड

पाटिल ने लिखा है कि भ्रूण-हत्या की समस्या कानून से नहीं, बल्कि दृष्टिकोण बदलने से सुलझेगी। मुनिश्री 'लोकेश' ने अपने विचारों में युग निर्माण की सूक्ष्म चेतना को अभिव्यक्ति दी है। इसमें जीवन-मूल्यों की सुदृढ़ता की बात सर्वत्र मिलती है। अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने आशीर्वचन में कहा है कि 'हिंसा का एक वीभत्स रूप है भ्रूण-हत्या'। उन्होंने यह आशा व्यक्त की है कि सहज, सरल भाषा में लिखा गया यह एक प्रेरक उपन्यास है जो पाठक की विचारधारा को बदलने में सफल होगा।'

श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने स्थित अध्यात्म साधन केन्द्र में शिवराज पाटिल द्वारा लोकार्पित इस उपन्यास पर एक जीवंत चर्चा 11 जुलाई को दिल्ली सचिवालय के सभाकक्ष में हुई जिसमें मुख्यमंत्री शीला दीक्षित तथा आचार्यश्री सुशील महाराज ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कन्या भ्रूण-हत्या के कलंक से मानवता को मुक्त करने का यह सार्थक प्रयास है। उल्लेख्य है कि मुनिश्री 'लोकेश के हिंदी उपन्यास 'अजन्मा अभिशाप' का अँग्रेजी अनुवाद डा० नरेन्द्र पी० जैन ने किया है।

'हमारे युग का खलनायक राजेन्द्र यादव ' का लोकार्पण

शिल्पायन द्वारा प्रकाशित भारत भारद्वाज एवं साधना अग्रवान द्वारा संपादित पुस्तक हमारे युग का खलनायक राजेन्द्र यादव का पिछले दिनों त्रिवेणी सभागार में डॉ० नामवर सिंह के कर-कमलों से लोकार्पण हुआ । इस अवसर पर अशोक वाजपयी, डॉ० गोपाल राय प्रो० मैनेजर पाण्डेय तथा डा० तुलसी राम ने जहाँ राजेन्द्र यादव को बधाई ही वही उनकी आलोचना करने में भी कोई कोर वसर नहीं छोड़ी। हीशत्रिवेदी ने कार्यक्रम का संचालन किया ।

दुर्घटनाग्रस्त भाई को गाड़ी से अस्पताल पहुँचाया ५-वर्षीय बालक ने

आप विश्वास करें या न करें पर यह घटना सच है कि पिछले दिनों अपने 3 वर्षीय भाई हिमांशु के दुर्घटनाग्रस्त होने पर 5 वर्षीय तनिष्क ने चार चक्के की मारूति गाड़ी चलाकर अस्पताल पहुँचाया और उसकी चिकित्सा करवाई।

दिल्ली के मयूर बिहार, फंज-1 स्थित

अस्पताल के कर्मचारियों ने जब तनिष्क को गाड़ी से अपने चचेरे भाई को अस्पताल के दरवाज़े पर उतारते देखा तो उन्हें आश्चर्य का ठिकाना न रहा। हिमांशु को रात में इलायज के उपरांत दूसरे दिन अस्पताल से छूट्टी दे दी गई। दरअसल हिमांशु जब फ्लैट के दूसरे तल्ले पर खेलने के दौरान खुली खिड़की से नीचे भूतल पर गिर गया तो उसके पैर में चोट आई। यह देखकर तनिष्क ने अपनी मारूति गाड़ी निकाली और पीड़ित चचेरे भाई हिमांशु को उसकी बहन की सहायता से अस्पताल पहुँचाया। जिस समय यह घटना घटी पीड़ित हिमांशु के पिता विनोद अपने काम पर थे और उसकी माँ सोई हुई थी। तनिष्क पिछले तीन माह से गाड़ी चलाना सीख रहा था। उसके पिता रवि चंद ने उसके बार-बार आग्रह करने पर गाड़ी की चाभी उसे सीखने के लिए दे रखी थी पर गाड़ी चलाने के दौरान वे सतर्क रहते थे और बगैर किसी बड़े आदमी के उसे गाड़ी चलाने नहीं देते थे। यह पहला मौका था जब तनिष्क वगैर किसी बड़े की उपस्थिति में अकेले गाड़ी चलाकर अस्पताल गया। तनिष्क और हिमांशु मयुर बिहार, फेज-3 के राजवीर कॉलोनी स्थित एक ही फ्लैट में एक साथ रहते थे। पूछने पर तनिष्क ने बताया कि गाड़ी चलाने के अतिरिक्त वह क्रिकेट खेलना तथा कंप्यूटर पर गेम खेलना पसंद करता है। 5 वर्ष के बालक को गाड़ी चलाने से लेकर क्रिकेट और कंप्यूटर पर गेम खेलना किसी को भी आश्चर्यचकित कर सकता है।

डॉ0 सुंदरलाल कथुरिया के ६५ वें जन्म दिवस पर
'आइए' अंतर्मंथन करें' का लोकार्पण

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० सुंदरलाल कथुरिया के 65 वें जन्म दिवस पर अखंडता संग्राम नागरिक समितित तथा हिंदी साहित्य प्रतिष्ठान की ओर से आयोजित एक सम्मान समारोह में हिंद महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिनेश चन्द्र त्यागी ने डॉ० कथुरिया के नवीनतम ग्रंथ 'आइए' अंतर्मंथन करें का लोकार्पण करते हुए कहा कि सांस्कृतिक चेतना के मानवतावादी लेखक डा० काथुरिया के मन प्राणों में राष्ट्र और राष्ट्रभाषा बसते हैं और लोकार्पित यह पुस्तक इसी का साक्ष्य

प्रस्तुत करती है। तुर्कमिनिस्तान के पूर्व राजदूत डॉ० विरेन्द्र शर्मा ने कृतिकार को दार्शनिक बताया। डॉ० परमानंद पांचाल ने जहाँ डॉ० कथुरिया को अपने समय का सबसे बड़ा आचार्य माना, वहीं जे. एन. यू. के. सुधेष ने उनकी विद्वता, तार्किकता, कवित्व और आलोचनात्मक दृष्टि की प्रशंसा की। डॉ० वीरेन्द्र अग्रवाल ने उन्हें ऋषि परंपरा का लेखक बताया। श्री रामानुज सुंदरम की ईश वंदना से प्रारंभ कार्यक्रम का संचालन प्रेमचंद शर्मा स्वतंत ने किया। प्रेमचंद शर्मा 'स्वतंत्र', दिल्ली से।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से पुणे में काव्य गोष्ठी आयोजित

पिछले 7 अगस्त को पुणे में छत्तीसगढ़ एवं बिहार से आमंत्रित साहित्यकारों के सम्मान में महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता दूसरा सप्तक के वरेण्य कवि हरिनारायण व्यास ने किया। डॉ. मालती शर्मा के सरस्वती पूजन से प्रारंभ इस कार्यक्रम का प्रस्ताविक ज.ग. फगरे ने प्रस्तुत करते हुए समिति द्वारा हिंदी भाषा के उत्थान एवं प्रचार हेतु किए जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। तदुपरांत आमंत्रित कवियों का श्रीफल एवं पुष्प प्रदान कर सत्कार किया गया।

इस अवसर पर मराठी पुस्तक 'पोर के दिवस' का हिंदी अनुवाद' भूले बिसरे दिन' हेतु भारत सरकार से पुरस्कृत डॉ. दामोदर खड़से को समिति की ओर से शॉल, श्रीफल एवं पुष्प से सम्मानित किया गया। गोष्ठी में डॉ. दीप्ति गुप्ता, बंडोपंत पाटिल, डॉ. कांतिदेवी लोघी, संजय भारद्वाज, सुभांषु सक्सेना, डॉ. श्रीकांत उपाध्याय, डॉ. मालती शर्मा, डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. लखन लाल सिंह 'आरोही', हरीश वाढेर तथा पद्मजा घोरपड़े ने सुधि श्रोताओं को अपने काव्य-सुधा-रस का पान कराकर सराबोर किया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. पद्मजा घोरपड़े ने किया।

ज.गं. फगरे, पुणे से।

भ्रष्टाचार का भंडा फोड़नेवाले टेटन तथा शांता को मैगसेसे पुरस्कार

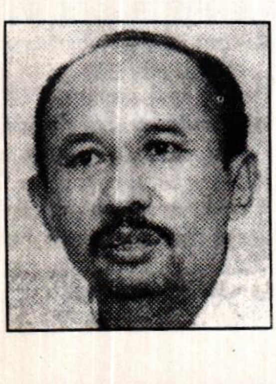

इंडोनेशिया में भ्रष्टाचार के मामलों के खिलाफ जेहाद कर रहे एक स्कूल शिक्षक तथा मनीला की वाचडाग संस्था से जुड़े टेटन मासदुकी को एशिया का नोबेल पुरस्कार माने जानेवाले मैगसेसे पुरस्कार से मनीला के रेमन मैससेसे फाउंडेशन द्वारा सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार की स्थापना 1957 में फिलिपींस के तीसरे राष्ट्रपति के सम्मान में की गई थी।

चेन्नई के अड्यार कैंसर इंस्टीच्यूट की निदेशक वी. शांता वर्ष 2005 के मैगसेसे पुरस्कार पानेवालों में से एक है। डॉ. शांता को यह पुरस्कार लोक सेवा तथा भारत में कैंसर की रोकथाम के उल्लेखनीय कार्य करने के लिए प्रदान किया गया है। – विचार कार्यालय, चेन्नई से।

हैदराबाद की चिट्ठी

जून का माह हैदराबाद के लिए विशेष होता है। मृगशिरा कार्ति (7 जून) के अवसर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोग 'मछली की दवा' खाने यहाँ आते हैं। कई दशकों से दमा रोगियों के लिए बत्तिनी गौढ़ परिवार इस दिन मछली में दवा रखकर रोगी को निःशुल्क वितरित करते हैं। यह माना जाता है कि इस दवा के सेवन से रोगियों को वर्ष भर आराम मिलता है। हजारों की संख्या में आये लोगों के लिए कई स्थानीय समाज सेवा संस्थाएं शिविर लगाकर इनके खान-पान की व्यवस्था निःशुल्क करते हैं। राज्य सरकार भी कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए विशेष कदम उठाती है और राज्य का मत्स्य विभाग मछली की व्यवस्था करता है।

पर्यटन : के० सुधाकर ने कई आकार-प्रकार के वाहन बनाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि पाई है। उनकी संस्था 'सुधाकर म्युज़ियम' ने अब विश्वरिकार्ड बनाने के लिए एक तिपहिया साइकिल बनाई है जिसकी ऊँचाई 42 फीट, चौड़ाई 15 फीट और वजन लगभग 3 टन है।

उन्होंने इस साइकिल पर सवार होकर 50 फीट की दूरी 8 मिनट में तय करके इसका प्रदर्शन किया। इससे पूर्व सन् 1997 में विश्व की सबसे छोटी 'डबल डेकर बस' बनाने पर उनका नाम विश्व रिकार्ड में दर्ज किया गया है। अब यह संस्था पर्यटकों को आकर्षित कर रही है।

साहित्य : पिछले 23 अगस्त को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की ओर से हैदराबाद के भारतीय विद्या भवन में गोपीचंद नारंग की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में 4 रचनाकारों को भाषा सम्मान तथा 22 अनुवादकों को अनुवाद सम्मान के रूप में स्मृति चिन्ह सहित पचास हजार रुपए प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। हिंदी के लिए यह

पुरस्कार राम शंकर द्विवेदी को प्रदान किया गया।

सम्मानः विगत, 7 अगस्त को हैदराबाद के जैन समाज की ओर से आनंद ऋषि के 105वें जन्म-दिवस पर

आयोजित समारोह में गुजराती भाषा के साहित्यकार प्रो० किशोरी लाल व्यास को 'आचार्य आनंद ऋषि साहित्य पुरस्कार से राज्यपाल सुशील कुमार शिंदे ने 25 हजार रुपए की राशि प्रदान कर सम्मानित किया।

कला : 17 जुलाई को शिल्पारामम् में

स्थित शिल्पकला वेदिका में संस्कृति शिखर नामक संस्था ने 'कुछ तुम कहो कुछ हम कहें' नामक नाटक का मंचन किया जिसमें सुप्रसिद्ध टी०वी० कलाकार स्मृति ईरानी एवं अपरा मेहता के साथ-साथ फिरोज़ भगत, निर्मित वैष्णव, अमिशा तान्या तथा प्रणव त्रिपाठी ने भाग लिया। नाटक के नपे-तुले अंदाज में बिखेरे गए हँसी के पुट ने सभी दर्शकों को करीब ढाई घण्टों तक सीटों से बाँधे रखा।

आँध्र प्रदेश स्टेट म्युजियम की हीरक जयंती के अवसर पर जैन सेवा

संघ, हैदराबाद-सिकंदराबाद द्वारा भारत में पहली बार 'जैन मूर्तिकला प्रदर्शन कक्ष' (जैन स्कल्पचर गैलरी) की स्थापना की गयी। इस कक्ष में जैन तीर्थंकरों की चार प्राचीन मूर्ति-कलाएँ रखी गयी हैं। उल्लेखनीय है कि यहाँ की इजीप्शियन गैलरी में 16 वर्षीय कुमारी लड़की 'नसीहूँ' की मम्मी हैं जो मिस्र के छठे फाराइ की लड़की थी, जो हैदराबाद के सातवें निजाम को भेंट में मिली थी।

चंद्र मौलेश्वर प्रसाद,
हैदराबाद से

संपर्क: 1-8-28,
यशवंत भवन
अलवाल,
सिंकदराबाद-500010

चेन्नई की चिट्ठी

छह हिंदीतर भाषी हिंदी लेखकों को पुरस्कार हेतु चयन

विचार कार्यालय, चेन्नई

भारत सरकार के मानव ससाधन विकास मंत्रालय (माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग) के केंद्रीय हिंदी निदेशालय की 'हिंदीतर भाषी लेखक पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष 2003-2004 के पुरस्कारों हेतु अधोलिखित 6 हिंदीतर भाषी हिंदी लेखकों/ अनुवादकों का उनके सामयिक मौलिक लेखन के लिए चयन किया गया है:-

क्रम सं०	लेखक	मतृभाषा	कृति का नाम
1.	डॉ० बाल शौरि रेड्डी	तेलुगु	कालचक्र
2.	श्री प्रफुल्ल चंद्र मेहंति	उड़िया	भागवतघर
3.	श्रीमती चंद्रकांता	कश्मीरी	बदलते हालात में
4.	प्रो० ना० नागप्पा	कन्नड़	कन्नड़ रंगमंच तथा नाटक
5.	डॉ० आदर्श	डोगरी	कथा अनंता
6.	डॉ० दामोदर खडसे	मराठी	भूले बिसरे दिन

डॉ0 बाल शौरि रेड्डी

'विचार दृष्टि' के परामर्शी तथा राष्ट्रीय विचार मंच की तमिलनाडु इकाई के संरक्षक डॉ० बाल शौरि रेड्डी ने सूचित किया है कि पुरस्कार हेतु चयन किए गए इन लेखकों को फरवरी 2006 में प्रधान मंत्री द्वारा नई दिल्ली में एक-एक लाख रुपए तथा प्रशस्ति-पत्र आदि प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से इन्हें हार्दिक बधाई।

अडूर गोपालकृष्णन का फाल्के पुरस्कार के लिए चयन

मलयालम फिल्मों के निर्माता अडूर गोपालकृष्णन को सिनेमा जगत का मशहूर सम्मान दादा साहब फाल्के पुरस्कार के लिए चयन किया गया है।

राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से

नई दिल्ली तथा पटना में आयोजित

लौह पुरुष सरदार पटेल की 130वीं जयंती के अवसर पर

हमारी शुभकामनाएँ

मे0 कृष्णा फ्लोरिंग्स

भीमसेन मार्केट,
खगौल रोड, अनीशाबाद,
पटना-२

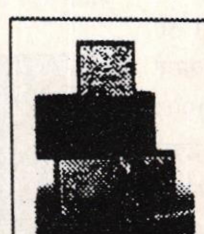

मे0 कृष्णा फ्लोरिंग्स

खगौल रोड, फुलवारी शरीफ
पंजाब नेशनल बैंक के पास
बी0 एम0 पी0-१६
पटना-८०००२

आचार्यश्री महाप्रज्ञ को राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भाव पुरस्कार

विचार कार्यालय, दिल्ली

राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने विगत एक अगस्त को विज्ञान भवन में

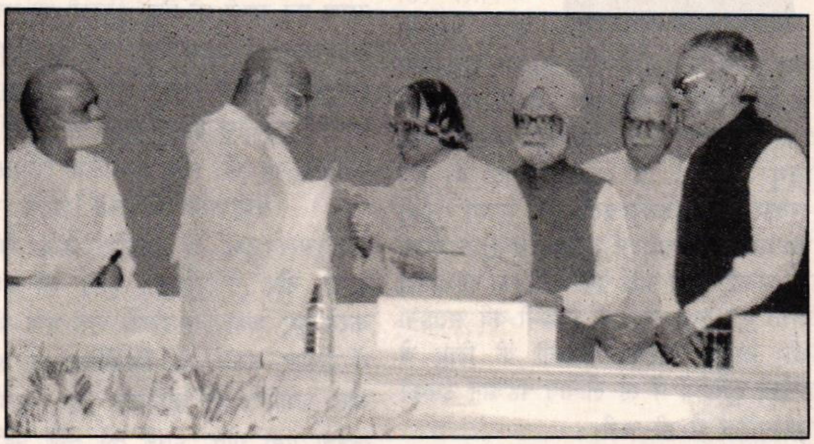

आयोजित एक सम्मान समारोह वर्ष 2004 का व्यक्तिगत श्रेणी के राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भाव पुरस्कार आचार्यश्री महाप्रज्ञ को तथा संस्थागत श्रेणी के लिए यही पुरस्कार अखिल भारतीय रचनात्मक समाज की अध्यक्ष डॉ. निर्मला देश-पांडे को प्रदान किया। उत्तर प्रदेश के श्री रमाशंकर सिंह को कबीर पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रपति डॉ. कलाम ने कहा कि राष्ट्र के निर्माण के लिए प्यार व सद्भावना के साथ-साथ मूल्य आधारित शिक्षा, धर्म से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ाव तथा गरीबी उन्मूलन आवश्यक है। उपराष्ट्रपति तथा इन पुरस्कारों की चयन समिति के अध्यक्ष भैरो सिंह शेखावत ने अपने संबोधन में कहा कि व्यक्ति के आर्थिक और सामाजिक कल्याण के बिना समाज में सांप्रदायिक सद्भाव संभव नहीं है। प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने देशवासियों से सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता बरतने की अपील की।

इसके अतिरिक्त इंटरफेथ हारमोनी फाउंडेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सर्वधर्म सम्मेलन में आचार्य श्री महाप्रज्ञ को मदर टेरेसा शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अहिंसा यात्रा के

स्वर साम्राज्ञी लता को लीजेंड आनर २००५ सम्मान

अपनी स्वर लहरी से पिछले साठ साल से लाखों लोगों के दिलों पर राज करने वाली स्वर साम्राज्ञी सुश्री लता मंगेशवर की वर्ष 2005 के लिए लीजेंड आनर से पिछले दिनों मुंबई में सांसद और अभिनेत्री जया बच्चन ने सम्मानित किया।

नवादाड़ा की रानी राजश्री देवी को 'लाइफ टाइम एचीवमेंट एवार्ड'

विचार कार्यालय, भुवनेश्वर

उड़ीसा के नवापाड़ा जिले की रानी राजश्री देवी एक ऐसी महिला हैं, जिन्हें वर्ष 2004 का 'लाइफ टाइम एचीवमेंट एवार्ड' से नवाजा गया है। ऐशो आराम की जिंदगी को छोड़ पीड़ित एवं दीन-दुखियों की सेवा और दूसरों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ रही राजश्री हिंदी, उड़िया, संस्कृत और रोसाली भाषा में कविता, कहानी लिखती हैं। इनकी अब तक आधा दर्जन पुस्तकें

प्रकाशित हो चुकी हैं। पिछले 20 साल से समाज सेवा में कार्यरत राजश्री संप्रति 'ब्रजराज सेवा समिति' और वेस्टर्न उड़ीसा-वुमेंस डेवलपमेंट आर्गनाइजेशन की अध्यक्षा हैं। अभी तक आधे दर्जन से अधिक सम्मान प्राप्त राजश्री को 'प्रियदर्शिनी पुरस्कार 2004' के अलावा 'संस्कार भारती सम्मान 2003' तथा खरियार साहित्य समिति सम्मान-2003 प्रदान किए जा चुके हैं।

डॉ. वेणु गोपाल हिंदीरत्न से नवाजे गए

मलयालम भाषा के सुप्रसिद्ध रचनाकार तथा दक्षिण के साहित्यकारों में 'वेणु मरूताई' के नाम से प्रसिद्ध डॉ. वेणु गोपाल को राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन जयंती के अवसर पर पंडित भीमसेन विद्यालंकार की स्मृति में 'हिंदी रत्न' सम्मान से नवाजा गया। नई दिल्ली के हिंदी भवन में पुरुषोत्तम हिंदी भवन न्यास द्वारा आयोजित इस समारोह में भारत के पूर्व रक्षा मंत्री के. सी.पंत ने डॉ. गोपाल को यह सम्मान प्रदान करते हुए कहा कि डॉ. गोपाल

मलयालम और हिंदी भाषा में समान रूप से लिख रहे हैं जो दोनों भाषाओं में सेतु का काम है। 7 जनवरी 1945 को केरल के कुण्णूर में जन्मे वेणु गोपाल की अबतक 72 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इन दिनों वे ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त लेखकों की सर्वश्रेष्ठ कहानियों का मलयालम भाषा में अनुवाद कर रहे हैं। साथ ही वरिष्ठ रचनाकार विष्णु प्रभाकर के उपन्यास 'अर्धनारीश्वर' का भी वह मलयालम भाषा में अनुवाद करने में व्यस्त हैं।

इस अवसर पर कर्नाटक के राज्यपाल टी.एन.चतुर्वेदी, दिल्ली के उपराज्यपाल बी.एल.जोशी, सांसद एवं कवि उदय प्रताप सिंह तथा डॉ. गोविंद व्यास सहित काफी संख्या में राजधानी के गणमान्य साहित्यकार उपस्थित थे।—विचार कार्यालय, दिल्ली से।

छह छायाकार व पत्रकार को उदयन स्मृति पुरस्कार

हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए जिन छह

छायाकारों व पत्रकारों को उदयन स्मृति पुरस्कार से जयपाल रेडी द्वारा नवाजा गया उनमें म०प्र० के नीति दीवान, राजस्थान के नानू राम तिवारी और दिल्ली के प्रसून लतांत, प्रकाश सिंह, मानवेन्द्र वशिष्ठ और त्रिचूर के. वी. के अजी शामिल है। इस अवसर पर उतरांचल के मुख्य मंत्री नारायणदत्त तिवारी ने उदयन शर्मा के लेखों को संग्रह जनता पार्टी क्यों टूटी' का लोकार्पण करते हुए एवं शर्मा की लेखनी की सराहना की। अपनी धारधार लेखनी के लिए वे हमेशा सुर्खियों में रहे लेकिन पहचान उनकी पत्रकारिता मे ही बनी।

राठौर को 'खेल रत्न' और सानिया को 'अर्जुन पुरस्कार'

भारत के इकलौते व्यक्तिगत ओलंपिक रजत पदक विजेता राज्यवर्द्धन राठौर को देश का सबसे प्रतिष्ठित राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार तथा टेनिस स्टार सानिया

मिर्जा सहित कुछ खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कारों के लिए चयन किया गया है।

डा0 देवेन्द्र आर्य को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार

विचार कार्यालय, दिल्ली

दिल्ली की मुख्य मंत्री और केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री प्रकाश जायसवाल ने जाने-माने गीत कार तथा राष्ट्रीय विचार मंच के वष्ठि राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा० देवेन्द्र आर्य को उनकी श्रेष्ठ काव्य कृति, मै उगते सूरज का साथी के लिए दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त पुरस्कार के रूप में इक्कीस हजार रुपए की राशि एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ० विजय कुमार खैरा ने पुरस्कृत कृति की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसके एक-एक पंक्ति में उत्साह, उमंग और जिजीविषा का अनंत स्रोत प्रवाहित है। कृतिकार डॉ० आर्य ने अपना एक गीत 'हारने को कुछ नहीं है पास तेरे जीतने को सामने दुनिया पड़ी है। अध्यक्षता शशि भूषण तथा संचालन लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने किया।

प्रवीण आर्य, दिल्ली से

के. आर. नारायणन को राजीव गाँधी सद्भावना पुरस्कार

राजीव गाँधी की 61वीं जयेंती पर दिल्ली के जवाहर भवन में आयोजित समारोह में पूर्व राष्ट्रपति के आर. नारायणन को राजीव गाँधी सद्भावना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

MAHESH HOMOEPATHIC LABORATORY
&
GERMAN HOMOEO STORES
Saket plaza, Jamal Road,
Patna-800001
Ph:(0612) 2238292 (O) 2674041 (R)
Offers a wide range of mother Tinchers,
Dillutin Biochemic Tablet patents, Globels
Dr. Mahesh Prasad D.M.S. (Patna)
Dr. Arun kumar D.H.M.S (Patna)
Spcialist in chronic Diseases

Solutions Point
SOLUTIONS IN:
Computer Assembling
Maintenance
Laptop Repair
AMC
Networking
Web & Graphics Designing
Software Development
Contact : Mr. Sudhir Ranjan
Head Office : U-207, Shakarpur, Vikas Marg, Delhi-92
Tel/Fax : 011-22059410, 22530652
Website: www.solutionspoint.org

विशाल की कविताओं में जो जादू है वह सिर चढ़कर बोलता है

-डॉ. नामवर सिंह

२००५ का अंकुर स्मृति मिश्र पुरस्कार युवा कवि विशाल को

विचार कार्यालय, दिल्ली

वर्ष 2005 के अँकुर मिश्र स्मृति पुरस्कार से सम्मानित फैजाबाद के 27 वर्षीय युवा कवि विशाल श्रीवास्तव की कविताओं में जो जादू है वह सिर चढ़कर बोलता है। पुरस्कृत कवि के वक्तव्य में एक सधा और सुलझा हुआ आत्म विश्वास झलकता है और उसे अपनी परंपरा से लगाव भी है। आज के दौर में जब बड़े से बड़े पुरस्कार संदिग्ध और विवादास्पद हो गए हैं, अंकुर स्मृति पुरस्कार अपनी विश्वसनीयता बनाए हुए है, यह बड़ी बात है। ये उद्‌गार हैं सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह के जिन्हें उन्होंने विगत 13 जुलाई को नई दिल्ली के राजेन्द्र भवन में आयोजित अँकुर स्मृति पुरस्कार-समारोह के अपने अध्यक्षीय भाषण में व्यक्त किए।

अवध विश्वविद्यालय, फैज़ाबाद के हिंदी प्राध्यापक विशाल श्रीवास्तव को द्वितीय अँकुर स्मृति पुरस्कार स्वरूप 11001 रुपए की राशि और प्रतीक चिन्ह प्रदान करने के पश्चात् निर्णायक मंडल के सदस्य विष्णु खरे ने कहा कि हिंदी कविता में आज साहित्य की आलोचना सहित सारे तत्त्व मौजूद हैं। निर्णायक मंडल के दूसरे सदस्य मंगलेश डबराल ने कहा कि विशाल की कविताएँ कस्बाई स्पंदन लिए हुई हैं। इसी प्रकार डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि बारिश और रोशनी से भरी विशाल की कविताओं में शुरू से अंत तक दंडात्मकता निहित है।

इस अवसर पर युवा कवि विशाल ने अपनी पुरस्कृत कविताओं का पाठ करते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि आज जिस टापू पर हम खड़े हैं उसके चारों तरफ का पानी बढ़ता जा रहा है और टापू की हमारी जमीन छोटी होती जा रही है। प्रारंभ में दिल्ली विश्वविद्यालय की कवयित्री अनामिका ने विशाल की पुरस्कृत कविताओं में 'उड़ान', 'हैमरेज' तथा 'असफल आदमी' जैसी प्रतिनिधि कविताओं का पाठ किया, हंसराज कॉलेज के कुछ युवा कवियों ने भी अपनी कविताओं का पाठ कर अँकुर को याद किया। श्री अनिल मिश्र ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। 'विचार दृष्टि' की ओर से विशाल को बधाई।

उल्लेख्य है कि यह पुरस्कार प्रति वर्ष डा० अनिल मिश्र एवं वंदना मिश्र के सुपुत्र अँकुर मिश्र की स्मृति में अँकुर मिश्र फाउंडेशन की ओर से 30 वर्ष से कम आयु के युवाओं को दिया जाता है। दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास सम्मान में स्नातक तथा 'शून्य', पैंडीज' तथा एक्ट वन जैसे नाट्य समूहों से सक्रिय रूप से जुड़े अँकुर का आकस्मिक निधन मात्र 21 साल की उम्र में पिछले 26 अगस्त 2001 को हो गया। हिंदी एवं अँग्रेजी कविताओं पर अपनी पकड़ कायम रखते हुए अँकुर एक वैचारिक और भावनात्मक ईमानदारी के साथ जीने की कोशिश में था। वह अपनी 'तलाश' में किसी सीमा का अतिक्रमण करने के लिए, शायद जीवन की सीमा का भी कि जगन्नियंता ने उसे अपने पास बुला लिया। 'विचारदृष्टि' परिवार अँकुर की स्मृति को नमन करता है।

कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए दृष्टिकोण में बदलाव

पिछले दिनों नई दिल्ली के साउथ एवेन्यू स्थित स्वामी अग्निवेश के आवास पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की

ओर से आयोजित संगोष्ठी में कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए जनचेतना जगाने पर मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश' शकील अहमद, डॉ० महेन्द्र सिंह तथा फादर जार्ज आदि धर्म गुरुओं ने बल देते हुए सामाजिक संगठनों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। मुनि 'लोकेश' ने कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता महूसस की ।

छह दशकों की मौन साधना और सहृदयता के पर्याय रघुनाथ प्रसाद विकल

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

विकलजी नहीं रहे। छायावादोत्तर काल के कवि, गद्यकार और बाल-साहित्यकार रघुनाथ प्रसाद विकल। आचार्य शिवपूजन सहाय की परंपरा के बेहद सरल, सहज, सहृदय रचनाकार विकल। बाघी (मुजफ्फरपुर) में 10 जनवरी, 1925 को गंगा देवी की कोख से जन्मे वासुकीनाथ के इस लाडले ने गत 28 जनवरी, 05 की सुबह आखिरी सांस ली। भोर में उठकर पढ़ाई-लिखाई की। फिर कमरे में ही टहल रहे थे कि पाँचवीं दफा हृदयाघात हुआ और वहीं लुढ़ककर वह सदा-सदा के लिए सो गए।

गाँधीवादी विचारों से प्रभावित हो युवा रघुनाथ ने बीस वर्ष की वय में अहिंसक क्रांति के द्वारा भारत माँ का उद्धार करवाने की प्रतिज्ञा अपनी पहली कविता में की थी और उसका पाठ विद्यालय के एक साहित्यिक आयोजन में किया था। मगर पहली प्रकाशित कविता थी 'क्रांति-संदेश', जो 1946 में साप्ताहिक 'योगी' में छपी थी। फिर तो काव्य-लेखन का ऐसा जुनून सवार हुआ कि तत्कालीन प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में न सिर्फ उन्होंने जमकर लिखा, बल्कि हस्तलिखित पत्रिका 'मयूरी' का संपादन भी किया।

पारिवारिक मोरचे पर विकलजी को काफी संघर्ष करना पड़ा और उच्चशिक्षा ग्रहण करने की इच्छा को दरकिनार कर मैट्रिक के बाद 1944 में डाक विभाग की सेवा स्वीकार करनी पड़ी, जहाँ विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए 31 जनवरी, 1983 को प्रबंधक, डाक वस्तु भंडार के पद से सेवा-निवृत्त हुए और आजीवन स्वतंत्र लेखन करते रहे। मगर सेवाकाल में ही निजी तौर पर उन्होंने आगे की पढ़ाई आरंभ कर दी थी और 1965 में रांची विश्वविद्यालय से हिंदी में एम०ए० की डिग्री अच्छे अंकों से हासिल की थी।

किशोरों के लिए विकलजी का पहला उपन्यास 'जय गंगे' 1962 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें पाटलिपुत्र से गंगा के उद्‌गम स्थल 'हर की पौड़ी' तक की यात्रा का बड़ा ही सरस और रोमांचक वृत्तांत रोचक कथानक में पिरोया गया है। आगरा के प्रकाशक ने उन दिनों तीन लेखकों की पुस्तकों का सेट एक साथ जारी किया था, जिनमें बाल स्वरूप राही और राबिन शॉ पुष्प के साथ विकल जी भी शामिल थे। आगे चलकर गंगा पर शोध करनेवाली एक विदेशी लेखिका ने विकलजी से संपर्क किया था और गंगा पर केंद्रित उनकी कविता का अँगरेजी अनुवाद अपनी पुस्तक

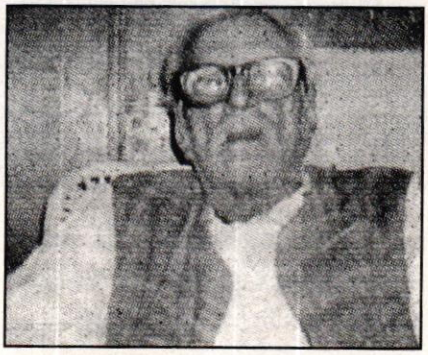

में छापा था। विकल जी की कविताओं का पहला संग्रह 1982 में 'स्वप्न और सत्य' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था, जिसकी भूमिका लिखने के क्रम में डॉ० हरिवंशराय 'बच्चन' की टिप्पणी गौरतलब है-'हर साहित्यिक आंदोलन की अपनी विशेषताएँ होती हैं तो उसकी अतियाँ भी होती हैं। विकल जी उन अतियों से विमुक्त हैं। उनके आदर्शों में रूढ़ियाँ नहीं झाकतीं। उनकी भाषा सरल और कल्पना सुबोध है। उनकी कटु स्थितियाँ अप्रियता का स्वाद तो देती हैं, पर कड़वाहट नहीं।'

विकलजी के दूसरे कविता-संग्रह 'बहते ही जाना है' का प्रकाशन कवि सुरंजन ने मगध प्रकाशन से किया था 1993 में, जो उन दिनों चर्चा में रहा था। बारहों अँगरेजी माह की खूबियों को समेटे बच्चों के लिए उनका

कविता-संग्रह 'बाल कैलेंडर' 1996 में छपा था, जिसे बाल पाठकों ने हाथों हाथ लिया था।

यदि लेखन की कसौटी गद्य है तो कविवर विकल ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकारा था और वैचारिक विषयों पर कई महत्वपूर्ण आलेख लिखे थे जो प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में छपे भी थे। राष्ट्रकवि दिनकर और उनके समकालीन कवियों पर केंद्रित उनके आलेखों का संग्रह 'दिनकर और उनके समकालीन' सार्थक प्रकाशन दिल्ली से शीघ्र प्रकाश्य है, मगर दुर्भाग्य से यह पुस्तक उनके जीवन काल में नहीं आ पाई।

यों तो दिनकर और बच्चन कविवर रघुनाथ के प्रिय कवि रहे हैं, पर उनकी कविताओं पर दिनकर की छाप स्पष्ट दिखती है। वैसे, बच्चनजी से उनका आजीवन पत्राचार रहा और उनके नाम लिखे एक सौ एक चुने हुए पत्रों का संग्रह 'बच्चन के आत्मीय पत्र' शीर्षक से प्रकाशित-प्रशंसित हुआ था। पत्र लेखन की उन्होंने विधा के रूप में अपनाया था और महादेवी वर्मा, अमृत राय आदि के साथ भी लंबे अरसे तक उनका पत्र-व्यवहार रहा था। नये-से-नये रचनाकार की भी रचना पढ़कर वह पत्र लिखे बगैर नहीं रहते थे।

मगर कभी-कभी उन्हें अपनी सहजता और सज्जनता का खामियाजा भी भुगतना पड़ता था। अपने एक पुराने साहित्यिक मित्र की रचना पर उन्हेंनें पत्र लिखकर सलाह दे डाली। नाराज मित्र ने जवाब दिया

था–'छिद्रान्वेषण तो आपकी पुरानी आदत है। बेहतर यही होगा कि ऐसे पत्र लिखकर अपना और मेरा कीमती वक्त जाया न करें। सिर्फ इतना ही नहीं, उन्होंने पते में विकल जी के नाम के पूर्व लिखा था 'महाकवि' लेकिन कवि की जगह 'कपि' पढ़कर भी विकल विचलित नहीं हुए। पत्र-लेखक चूंकि अपने नाम के साथ डी० लिट० की जगह 'डी० चिट०' लिखकर भी अतिरिक्त हास्य पैदा कर दिया।

अगर कहीं कुछ गलत हो रहा हो तो विकलजी कतई बर्दाश्त नहीं कर पाते थे और गलती सुधरवाने की हर संभव कोशिश जरूर करते थे। एक दफा उन्होंने बिहार सरकार की एक पाठ्यपुस्तक में बच्चन जी की कविता दिनकरजी के नाम से छपी देखी। उन्होंने न केवल बच्चन और दिनकर को पत्र लिखकर सूचना दी, बल्कि टेक्स्ट बुक कमिटी को बार-बार पत्र लिखकर अगले संस्करण में बच्चनजी का नाम छापने के लिए मजबूर भी कर दिया। जिस मोहल्ले में उनका मकान था, उसका नाम 'किदवईपुरी' भी उन्हीं का दिया हुआ है।

हालांकि 'तीसरी आँख', 'क्रांतिस्वर' और 'सुपर इंडिया' ने विकलजी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर विशेषांक प्रकाशित किये थे, विद्या-वाचस्पति, अंबेदकर फेलोशिप सरीखी कई सम्मानोपाधियाँ भी उन्हें मिली थीं, पर सही मायने में उनकी सर्जनात्मकता का मूल्याँकन होना अब भी शेष है। चाहे उनकी कविता 'लूसी' का पश्चिम बंगाल की पाठ्य-पुस्तक में समावेश हो अथवा विभिन्न रचनाओं का संकलनों में संकलन-विकलजी प्रशंसा-निंदा से कोसों दूर रहकर सिर्फ मौन साधना में विश्वास रखते थे और निरंतर लेखन, छोटी-बड़ी पत्रिकाओं में प्रकाशन तथा सुधी पाठकों-साहित्यिकों के पत्र उन्हें आत्मतोश की भावना से भर देते थे। यही वजह है कि चार-चार बार के हृदयाघातों के बावजूद जीवन के अंतिम क्षणों तक वह अपनी रचनाशीलता में ही तल्लीन रहे।

जब भी किसी लघु पत्रिका पर विकलजी की नजर पड़ती, वह अपनी तमाम जरूरतों को नजरअंदाज कर उसकी वार्षिक सदस्यता स्वीकार कर लेते और संपादक को सभी प्रकार के सहयोग करने के लिए तत्पर रहते। अपने बल-बूते पर उन्होंने निजी पुस्तकालय भी बना रखा था जो काफी समृद्ध और व्यवस्थित है। जब भी किसी रचनाकार से उनकी मुलाकात होती, वह साहित्यिक गतिविधियों की पूरी जानकारी देना नहीं भूलते। किस पत्रिका का कौन-सा विशेषांक प्रकाशित होनेवाला है, किस विधा का कौन-सा संकलन छप रहा है, कौन-सी नई पत्रिका शुरू होने जा रही है? आदि। सिर्फ इतना ही नहीं, नवोदितों की रचनाएं संशोधित कर अपने खर्च से संबद्ध पत्रिका, प्रकाशन को भेजना और छपने पर संबंधित लेखक को प्रति भिजवाना वह अपना दायित्व समझते थे। ऐसी उदारता आज कितने रचनाकारों में है?

पिछले तीन दशकों से विकलजी की आत्मीयता और अंतरंगता सहज ही मुझे मिलती रही थी। हालांकि लंबे अरसे से उन्हें कान से सुनाई देना बंद हो गया था और डायरी पर लिखकर ही बातें की जा सकती थीं, पर उन्हें सुनना अमृतपान करने जैसा ही सुखद लगता था। यदि कुछ अंतराल हो जाता तो विकल जी का उलाहना भरा पत्र आ धमकता और मैं उनसे मिलने को बाध्य हो जाता। पहले हृदयाघात के बाद से वह घर में ही कैद होकर रह गए थे। निधन के दो दिन पूर्व भी तो जाकर मिला था। काफी देर तक बातें होती रही थीं। उन्होंने महादेवी जी पर सद्यःरचित संस्मरणात्मक आलेख सुनाया था और अंततः देश के हालात पर अपनी चर्चित कविता 'कहाँ हो घनश्याम?' का पाठ भी आर्तस्वर में किया था। निधन की सूचना मिलते ही जब अंतिम दर्शन करने पहँचा तो लगा, मानों अपने 'घनश्याम' से मिलकर वह चैन की नींद सो रहे हों।

विकलजी थे तो ऐसा प्रतीत होता था कि परदुखकातरता, मानवीय संवेदना, सहजता, सज्जनता, हार्दिकता और लोकमंगल की भावना अभी मरी नहीं है। विकलजी के सर्वथा समर्थ इकलौते पुत्र यदि उनकी संपूर्ण रचनावली और मूल्याँकन परक स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन का बीड़ा उठाएँ तो यह सही मायने में उनके प्रति श्रद्धाँजलि होगी। उनकी छह दशकों की मौन साधना और जीवंत सहृदयता को मेरा सादर नमन!

संपर्क : द्वारा प्रधान महाप्रबंधक, दूरसंचार जिला, टेलीफोन भवन, पोस्ट बॉक्स-115, पटना-800001

With Best Compliments from

PATNA FLOORING CO.

Kotwali Maszid, Budha Marg
Patna-800001

Resi.: Pasupati Niwas, Bander Bagicha
Frazer Road, Patna-800 001

☎ 0612-2225774 (S)

Mobile: 9835244482

Prop: Gajendra Singh

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षाविद् डॉ. जकारिया का निधन

विचार कार्यालय, मुंबई

इस्लाम के जानेमाने विद्वान, स्वतंत्रता-सेनानी, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षा विद् तथा काँग्रेस नेता और महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री डॉ. रफिक जकारिया का मुंबई के कोलाबा स्थित अपने काफी परेड निवास में हृदयगति रूक जाने से देहावसान हो गया तथा उनकी इच्छानुसार औरंगाबाद में सयद्-ए-स्वाक किया गया।

८५ वर्षीय जकारिया, जो इकबाल की कविता के प्रशंसक थे, कविता की इन पक्तियों से उनकी जिंदगी को व्यक्त किया जा सकता है–

जहिद-ए-तंग नजर ने मुझे काफिर जाना और काफिर यह समझता है मुसलमान हूँ मैं।

इकबाल की तरह डॉ. जकारिया ने संकट की इस स्थिति का सामना किया, क्योंकि कट्टा मुसलमान उन्हें हिंदुओं के दोस्त समझते थे जबकि झक्की हिंदू दृढ़तापूर्वक उन्हें मुसलमानों के रहनुमा मानते थे। एक विश्वासी राष्ट्रवादी डॉ. जकारिया ने एक वैसे युग को छोटा किया जिसने

भारत के धर्मनिरपेक्ष वसीयतनामा की रक्षा की। उन्होंने अनुरागपूर्वक इस्लाम के समानतावादी विशेषताओं की वकालत की और इस्लाम पर कई किताबें लिखीं। उनकी Modammad and the quran पुस्तक ने दुनियाभर के मुसलमानों की एहसानमंदी अर्जित की। यही नहीं उन्होंने 'सरदार पटेल और भारतीय मुसलमान' नामक पुस्तक लिखकर सरदार पटेल के प्रति मुसलमान विरोधी गलत फहमियों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने पीछे हजारों शुभेच्छु सहित पत्नी फातमा, तीन पुत्र तथा एक पुत्र छोड़ गए। 'विचार दृष्टि' परिवार की ऐसे राष्ट्रवादी, शिक्षाविद्, मुंबई विश्वविद्यालय से 'स्वर्ण पदक' प्राप्त तथा लंदन विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त इंसान को हार्दिक श्रद्धांजलि।

With Best Compliments from:

MANZIL FASHION HOUSE

A/192, Below Allahabad Bank

P.C. Colony, Kankarbagh,

Patna-800020

Prop. Sri Rakesh Ranjan

With Best Compliments from:

MANZIL FASHION HOUSE

Shivajee Shopping Complex

Bindh Nagar, Siddhi

M.P

Prop. Sri Lokesh Ranjan Kumar

साभार स्वीकार

पुस्तकें

1. The Unborn Curse- Novel
Novelist: Muni Lok Prakash 'Lokesh'
Today is Tommorow, New Delhi

2. देश की पहचान: साहित्य और कला
निबंधकार: मधुर शास्त्री, दिल्ली

3. अनोखा आरोही- उपन्यास
उपन्यासकार: श्रीमती क्रांति त्रिवेदी,
प्रकाशक: सुलभ प्रकाशन, लखनऊ

4. स्वर्णमंजुषा में कैद सत्य
कवि: अशोक कुमार सिंहा
प्रकाशक: विशाल पब्लिकेशन दिल्ली,

5. आस और विश्वास-दोहा
दोहाकार: ए. बी. सिंह

J.K. Power, Chittorgarh
Shambhupura-312612

6. एक पुष्प- एक परिमल-काव्य संग्रह
कृतिकार: आचार्यश्री महाप्रज्ञ,
प्रकाशक: सरस्वती प्रकाशन, ए. 104 सिद्धि विनायक ज्योति, को. आ. हा. सो., त्रिवेदी कंपाउंड, पांडु रंगवाड़ी, डोंबिवली (पूर्व) 421201

7. अहिसा प्रशिक्षण
प्रवर्तन: आचार्यश्री महाप्रज्ञ
प्रकाशक: राष्ट्रीय अणुवत शिक्षक संसद, राजसंमद (राजस्थान)

8. मधुशाला की मधुबाला- काव्यग्रंथ
रचनाकार: राजेश कुमार सिंह,इलाहाबाद

पत्रिकाएँ

1. महाशक्ति अहिंसा टाइम्स-2005
संपादक: श्रीपाल जैन 'निडर'
प्रकाशक: अहिंसा प्रिय समाज,एक्स/2363 गली नं. 11, रघुबरपुरा नं०-2 गाँधीनगर, दिल्ली-110031

2. अनुपम उपहार मासिक जूलाई 05
संपादक: रणधीर कुमार मिश्र, पटना

3. विवरण टाइम्स: हिंदी साप्ताहिकजून05
संपादक, अरुण कुमार सिंह, पटना 05

4. चौथा खम्भा- मार्च-अपैल
संपादक: कुमार सम्बल, पटना

5. शक्ति टाइम्स 17-23 जुलाई
संपादक: आर. एस. शर्मा, दिल्ली

6. श्री विजय इन्द्र टाइम्स-अगस्त 05
प्र.संपादक: ललित गर्ग,
ई-253, सरस्वती कुँज अपार्टमेंट
25, अाई.पी.एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92.

7. भारद्वाज परिवार- जनवरी-मार्च 05
संपादक: बृजेश चन्द्र कटिहार
237, कटरा मैनपुरी, उ.प्र. पिन 205001

8. सभ्यता-संस्कृति- अगस्त 05
संपादक: डॉ. रिचा सिंह, नई दिल्ली

9. अणुव्रत -सितंबर 2005
संपादक- डॉ. महेन्द्र कर्णावत
प्रकाशक: अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली

10. मैसूर हिंदी प्रचार परिषद् पत्रिका- जुलाई 05
प्र. संपादक: डॉ. बि० राम संजीवय्या
58 वेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजीनगर, बैंगलूर-560010 (कर्नाटक)

11. रेल राजभाषा : अप्रैल-जून 2005
संपादक: कृष्णा शर्मा, रेलभवन,नईदिल्ली

12. लोक शिक्षक: अगस्त -05
संपादक: डॉ. सत्येन्द्र चतुर्वेदी, जयपुर

13. अम्बेडकर मिशन पत्रिका- जूलाई,05
संपादक: बुद्ध शरण हंस, पटना

14. साहित्य पारिजात- जुलाई-सितंबर,05
संपादक: डॉ. सुंदरलाल कथूरिया, बी-3/79, जनकपुरी, नईदिल्ली-58

15. रश्मिरथी: काव्य प्रधान द्विभाषक पत्रिका
संपादक: राधेश्याम आर्य,
मुसाफिरखाना-227813

16. चेतना : त्रैमासिक पत्रिका
प्रकाशक: कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

17. प्रहरी: त्रैमासिक पत्रिका
प्रकाशक: कार्यालय, प्रधान महालेखाकार(लेखा परीक्षा) बिहार, पटना

18. तैलिक वैश्व बंधु अगस्त-05
प्रधानसंपादक: श्री कृष्णा साह, पटना

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल
के 130वें जयंती-समारोह के अवसर पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं

मे. विवेक इंटरप्राइजेज

लफार्ज सिमेंट के थोक एवं खुदरा विक्रेता

खगौल रोड, मीठापुर, पटना-800001

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास, बोकारो

झारखंड

दूरभाष : 65765

फैक्स : 65123

परीक्षा

प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस

(रुपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज,

पटना-800004

दूरभाष : 2662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चाँदी तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.
Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोब (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

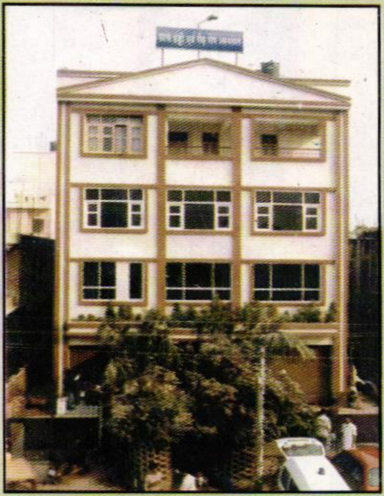

Dr. Vishvendra Kumar Sinha

M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180

एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के 130वें जयंती-समारोह पर
हमारी शुभकामनाएँ

संस्था का ध्येय है –

- सरदार पटेल के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना
- राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना
- सामाजिक समरसता कायम करना
- सांप्रदायिक सदभाव का वातावरण बनाना
- पाखंड, अंधविश्वास और रूढ़िवादी प्रवृत्तियों से परहेज करना

पटेल फाउंडेशन

सरदार पटेल के विचारों के प्रति समर्पित

तो आइए, आप भी इस अभियान का एक हिस्सा बन इसे अपेक्षित सहयोग प्रदान करें।

147, अंसल चैंबर-II, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली

फोन : 30926763 • मो. : 9891491661

वर्ष : 7 अंक : 25 अक्टूबर–दिसंबर 2005 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

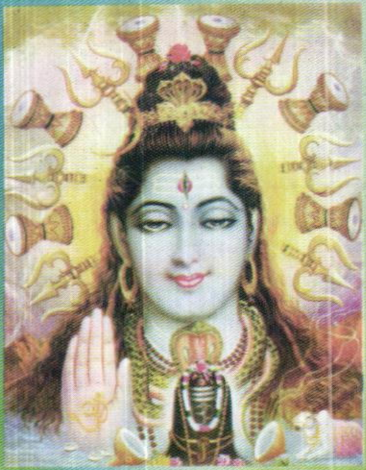

Prithviraj Jewellery

Specialist : Bengal Set, Chain & Jewellery

All Kinds of Export Manufacturing of Gold Ornaments.

Deals in Export Jewellery.

25/3870, Regarpura, Karol Bagh, New Delhi-110005
Phone : 011-25825745, 011-25713774
Mobile : 9811138535

Prop. : Raj Kumar Samanta
Sambhu Nath Samanta

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2,. नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर